भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 20 वर्ष, अंक 314 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज मंगलवार 09 नवम्बर 2021

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान प्रयागराज

क्रिया योगः साँच (सच Truth) को आँच नहीं। आँच अज्ञानता (अविद्या Ignorance) समय, दूरी व सापेक्षता की अनुभूति है जो समस्त दुःखों का कारण है। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि सामान्य तरीके से जीवन जीने पर सच की अनुभूति के लिए व्याधि रहित लगभग दस लाख वर्ष की आवश्यकता होती है, लेकिन क्रियायोग अभ्यास से सच की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

1. प्राचीन उच्च मानव सभ्यता मे वर्णित यज्ञ, वर्तमान में विश्व विख्यात 'क्रियायोग' है।
2. क्रियायोग अभ्यास वेदपाठ है, पूर्ण ज्ञान की अनुभूति है।
3. क्रियायोग अभ्यास ईश्वर अनुभूति है।
4. क्रियायोग अभ्यास अतीत, वर्तमान व भविष्य से जुड़ना है।
5. क्रियायोग अभ्यास जीवन मृत्यु पर विजय है।

क्रियायोग से सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित।

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

सपा ने दलितों व पिछड़ों में जन्मे गुरुओं का तिरस्कार किया : मायावती

लखनऊ (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो मायावती ने सोमवार को कहा है कि समाजवादी पार्टी शुरू से ही दलितों व पिछड़ों में जन्मे महान संतों, गुरुओं व महापुरुषों की तिरस्कारी रही है। इसका खास उदाहरण फैजाबाद जिले से काटकर बनाया गया अंबेडकर नगर जिला है। भदोही को नया जिला संत रविदास नगर बनाने का भी समाजवादी पार्टी ने विरोध किया और इसका नाम भी सपा सरकार ने बदल दिया। मायावती ने सोमवार को ट्वीट कर कहा है कि इसी प्रकार यूपी के अनेकों संस्थानों व योजनाओं आदि के नाम जातिवादी द्वेष के कारण अधिकांशः बदल दिए गए। ऐसे में सपा द्वारा उनकी व उनके मानने वालों के प्रति आदर-सम्मान व सुरक्षा की उम्मीद कैसे की जा सकती है? चाहे अब यह पार्टी इनके वोट की खातिर कितनी भी नाटकबाजी क्यों ना कर ले?

पीएम मोदी ने पालखी मार्ग की रखी आधारशिला, बोले-

350 किमी लंबे हाईवे पर 11,000 करोड़ रुपए होगा खर्च

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि श्रीसंत ज्ञानेश्वर महाराज पालखी मार्ग का निर्माण 5 चरणों में होगा और संत तुकाराम महाराज पालखी मार्ग का निर्माण 3 चरणों में पूरा किया जाएगा। इन सभी चरणों में 350 किमी का हाईवे बनेगा और इस पर 11,000 करोड़ रुपए से अधिक का खर्चा होगा। नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को श्री संत ज्ञानेश्वर महाराज पालखी मार्ग (एनएच-965) के पांच खंडों और श्री संत तुकाराम महाराज पालखी मार्ग (एनएच-965जी) के तीन खंडों को चार लेन का बनाने के कार्य की आधारशिला रखी। इस दौरान उन्होंने कहा कि दो दिन पहले मुझे केदारनाथ में आदि शंकराचार्य जी की पुनर्निर्मित समाधि की सेवा का अवसर मिला और आज भगवान विट्ठल ने अपने नित्य निवास स्थान पंढरपुर में मुझे आप सबके बीच जोड़ दिया। इससे ज्यादा आनंद का ईश्वरीय कृपा के साक्षात्कार का सौभाग्य और क्या हो सकता है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आदि शंकराचार्य जी ने कहा कि पंढरपुर

की इस महा योगभूमि में विट्ठल भगवान साक्षात आनंद स्वरूप हैं। इसीलिए पंढरपुर तो आनंद का प्रत्यक्ष स्वरूप है और आज तो इसमें सेवा का आनंद भी साथ में जुड़ रहा है। उन्होंने कहा कि आज श्रीसंत ज्ञानेश्वर महाराज पालखी मार्ग और संत तुकाराम महाराज पालखी मार्ग का शिलान्यास हुआ है। श्रीसंत ज्ञानेश्वर महाराज पालखी मार्ग का निर्माण 5 चरणों में होगा और संत तुकाराम महाराज पालखी मार्ग का निर्माण 3 चरणों में पूरा किया जाएगा। इन सभी चरणों में 350 किमी का हाईवे बनेगा और इस पर 11,000 करोड़ रुपए से अधिक का खर्चा होगा।

उन्होंने कहा कि इन हाईवे के दोनों तरफ पालखी यात्रा के लिए, पैदल चलने वाले श्रद्धालुओं के लिए विशेष मार्ग बनाए जाएंगे। इसके अलावा आज पंढरपुर को जोड़ने वाला करीब सवा दो सौ किमी लंबे नेशनल हाइवे का भी शुभारंभ हुआ है। इनके निर्माण में करीब 1,200 करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। ये महामार्ग भगवान विठ्ठल के भक्तों की सेवा के साथ-साथ इस पूरे पुण्य क्षेत्र के विकास का मार्ग बनेंगे। विशेष रूप से इसके जरिए दक्षिण भारत के कनेक्टिविटी और बेहतर होगी और अधिक श्रद्धालु यहां आ पाएंगे। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह एक ऐसा प्रयास है, जो हमें एक आत्मिक संतोष प्रदान करना है और जीवन की सार्थकता का आभाष कराता है। मैं भगवान विठ्ठल के सभी भक्तों को और इस क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों को विकास अभियान के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूं। मैं सभी संतों के चरणों में भी अपना नमन करता हूं।

उन्होंने कहा कि अतीत पर हमारे भारत पर कितने ही हमले हुए, सैकड़ों साल की गुलामी में ये देश जकड़ा गया, प्राकृतिक आपदाएं आई, चुनौतियां-कठिनाई आई, लेकिन भगवान विठ्ठल में हमारी आस्था अनवरत चलती रही। प्रधानमंत्री ने कहा कि भगवान विट्ठल का दरबार हर किसी के लिए समान रूप से खुला है। जब मैं सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास कहता हूं, तो उसके पीछे भी तो यही भावना है। यही भावना हमें देश के विकास के लिए प्रेरित करती है, सबको साथ लेकर, सबके विकास के लिए प्रेरित करती है। उन्होंने कहा कि पंढरपुर की सेवा मेरे लिए साक्षात श्री नारायण हरि की सेवा है। ये वो भूमि है, जहां भक्तों के लिए भगवान आज भी प्रत्यक्ष विराजते हैं। ये वो भूमि है, जिसके बारे में संत नामदेव जी महाराज ने कहा है कि पंढरपुर तबसे है जब संसार की भी सृष्टि नहीं हुई थी।

तीसरी से 7वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए स्कूल 10 नवम्बर से और पहली और दूसरी कक्षा के लिए 15 नवम्बर से खोलने का निर्णय

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश मंत्रिमण्डल की बैठक आज यहां मुख्यमंत्री जय राम ठाकुर की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में मंत्रिमण्डल ने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल को प्रदेश विधानसभा का शीतकालीन सत्र 10 से 15 दिसम्बर, 2021 तक जिला कांगड़ा के धर्मशाला में आयोजित करने की सिफारिश करने का निर्णय लिया। इसमें पांच बैठकें होंगी। मंत्रिमण्डल ने भारतीय जनता पार्टी के स्वर्णिम दृष्टिपत्र के कार्यान्वयन की प्रगति की भी समीक्षा की, जिसे वर्तमान राज्य सरकार ने नीति दस्तावेज के रूप में अपनाया है। सामान्य प्रशासन विभाग ने इस सम्बन्ध में विस्तृत प्रस्तुति दी। मंत्रिमण्डल ने मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक समिति गठित करने का निर्णय लिया, जिसमें हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला और क्लस्टर विश्वविद्यालय

मण्डी के कुलपतियों तथा सचिव शिक्षा को सदस्य के रूप में शामिल किया गया है, ताकि मण्डी में राज्य विश्वविद्यालय स्थापित करने की रूपरेख तय करने पर कार्य किया जा सके।

विपक्ष के खिलाफ सीएम योगी के तीखे तेवर, देश और समाज को बांटने का काम कर रहे ये लोग

रामपुर (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विपक्ष के खिलाफ तीखे तेवर दिखाते हुए आरोप जड़ा कि ये लोग देश और समाज का बांटने का काम कर रहे हैं। तरह-तरह के वक्तव्य देकर लोगों को भड़काने का काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री सोमवार को रामपुर में फिजिकल कॉलेज ग्राउंड पर आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। वह आजम के गढ़ में उन पर भी तंज कसने से नहीं चूके। कहा कि जेल में बंद कोरोना पीड़ितों का भी उचित इलाज कराया। मुख्यमंत्री दोपहर बाद रामपुर पहुंचे और 63.58 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का शिलान्यास एवं लोकार्पण करने के बाद जनता से मुखातिब हुए। उन्होंने कहा कि भारत विरासत का देश है और हर

हाल में दुनिया की सबसे प्राचीन विरासत को सुरक्षित और संरक्षित करने का दायित्व भी हम सब पर है। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में एक भारत-श्रेष्ठ भारत के निर्माण की दिशा में कदम बढ़ाया है। उसी के तहत कश्मीर में 370 हटी और अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर का निर्माण हो रहा है। हमारे पर्व और त्योहार इसी विरासत के हिस्से हैं, लेकिन कुछ लोगों को यह अच्छा नहीं लगता है। देश का पैसा देश के विकास में लग रहा है, यह भी इन्हें अच्छा नहीं लगता। कोरोना काल खंड के दौरान ये लोग कहीं दिखाई नहीं दिए। जो विपत्ति के समय आपके साथ खड़ा नहीं हो सकता, वह आपका हितैषी हो सकता है, कतई नहीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम लोगों ने किस तरह से कोरोना में काम किया, यह आप सब जाते हैं।

कमला नेहरू अस्पताल में आग लगने से 4 बच्चों की मौत, सीएम शिवराज ने दिए हाई लेवल जांच के आदेश

भोपाल (एजेंसी)। भोपाल के कमला नेहरू अस्पताल में बच्चों के वार्ड में आग लग गई। इस हृदय विदारक घटना में चार बच्चों की मौत हो गई है। बताया जा रहा है कि जिस वार्ड में आग लगी, वहां करीब दो दर्जन से अधिक बच्चे भर्ती थे। आग लगने के पीछे शॉर्ट सर्किट कारण बताया जा रहा है। मौके पर दमकल की 12 गाड़ियां की मदद से आग पर काबू पाया गया। उधर, सूचना मिलते ही चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग भी अस्पताल में पहुंचे। घटनास्थल पर देर रात तक अफरा-तफरी का माहौल रहा। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने घटना पर दुख जताते हुए मामले में हाईलेवल जांच के आदेश दिए हैं। मिली जानकारी के मुताबिक, भोपाल के माने जाने कमला नेहरू अस्पताल में बच्चों के वार्ड में शॉर्ट सर्किट से आग लग गई। आग जिस वार्ड में लगी, वहां दो दर्जन से अधिक बच्चे भर्ती थे। आग लगने से कुछ बच्चे झुलस गए हैं। इलाज के दौरान तीन बच्चों की मौत हो गई। बताया जा रहा है कि आग की सूचना पर चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग भी मौके पर पहुंचे।चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग ने बताया कि तीसरे फ्लोर के जिस वार्ड में आग लगी थी, वहां 40 बच्चे भर्ती थे, जिसमें से 4 बच्चों की मौत हो गई है। बाकी 36 बच्चों को बचाकर दूसरे वार्ड में शिफ्ट कर दिया है। उन्होंने बताया कि प्रत्येक मृतक के माता-पिता को मुआवजे के तौर पर 4-4 लाख रुपए अनुग्रह राशि दी जाएगी।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने घटना पर दुख जताते हुए कहा, "भोपाल के कमला नेहरू अस्पताल के चाइल्ड वार्ड में आग लगने की घटना दुखद है। बचाव कार्य तेजी से हुआ।

अयोध्या के बाद सीएम योगी का 10 को मथुरा दौरा, अगले हफ्ते काशी भी जाएंगे

मथुरा (एजेंसी)। अयोध्या में भव्य दीपावली और रामलीला के आयोजन में सहभागिता करने के बाद मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को मथुरा जाएंगे। यहां सीएम योगी ब्रज रज उत्सव का शुभारंभ करने के साथ ही हुनर हॉट भी देखेंगे। श्रीकृष्ण जन्मस्थान जाकर दर्शन भी करेंगे। अगले हफ्ते 15 नवंबर को सीएम योगी का काशी जाने का कार्यक्रम भी तय है। यहां सीएम योगी काशी विश्वनाथ कॉरिडोर में स्थापित होने वाली मां अन्नपूर्णा की प्रतिमा के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 10 नवंबर बुधवार को मथुरा में लगभग तीन घंटे से भी ज्यादा समय रहेंगे। ब्रज रज उत्सव का उद्घाटन करने के साथ एक जनसभा को भी संबोधित करेंगे। प्रोटोकाल के अनुसार मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दोपहर करीब सवा एक बजे आगरा खेरिया एयरपोर्ट से पवनहंस हेलीपैड वृंदावन पहुंचेंगे।

सीएम योगी के बयान पर अखिलेश यादव का वार

भाजपा का आचरण और प्रकृति दंगाई

लखनऊ (एजेंसी)। कैराना में सोमवार की सुबह सीएम योगी ने मुजफ्फरनगर दंगे की याद दिलाते हुए समाजवादी पार्टी पर कई हमले किये। बिना अखिलेश यादव का नाम लिये यहां तक कहा कि दंगाइयों को सीएम आवास में बुलाकर सम्मानित किया जाता था। योगी के आरोपों के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने भी पलटवार किया है। अखिलेश ने कहा कि भाजपा ने अपने अब तक के कार्यकाल में प्रदेश में सिर्फ अव्यवस्था और अराजकता फैलाने के अलावा दूसरा कोई काम नहीं किया है। उसका आचरण और प्रकृति दंगाई किस्म की है। नफरत का तानाबाना फैलाने के साथ समाज को बांटने और विभाजनकारी प्रवृत्तियों को बढ़ाने में ही भाजपा लगी रहती है। झूठ के लिए ही उसका मंथन, निरन्तर चलता रहता है।

भाजपाई रामराज में भाजपा सरकार की डबल इंजन वाली गाड़ी का किसानों को ह्यकुचलनाह्य जारी है। उन्नाव में भूमि पर कब्जा होने से परेशान किसान को इस सरकार में न्याय नहीं मिला तो लखनऊ में विधानभवन के सामने आत्मदाह को मजबूर हो गया। समाजवादी सरकार ने विधान भवन के सामने लोकभवन इसलिए बनवाया था

ताकि वह न्याय मंदिर बने लेकिन मुख्यमंत्री ने वहां बैठकर सभी लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक मयार्दाओं को ध्वस्त करने का काम किया है। अखिलेश ने कहा है कि बागपत में कर्ज में डूबे किसान द्वारा आत्महत्या की घटना कम हृदयविदारक नहीं। भाजपा के राज में किसानों की ऐसी हालत सरकार के सभी झूठों का पदार्फाश कर रही है। आखिर प्रदेश का किसान कब तक यह सब सहेगा? उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार कितनी जनहितैषी और गरीबों की हमदर्द है, इसका ताजा नमूना यह है कि गरीब को मुफ्त अनाज देने की योजना पर ताला लगा दिया गया है। अखिलेश ने कहा कि दावा किया गया था कि महिलाओं-बच्चों के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया है। किन्तु हकीकत यह सामने आई है कि 33 लाख से ज्यादा बच्चे कुपोषित हैं। नवम्बर 2020 से 14 अक्टूबर 2021 के बीच गम्भीर रूप से कुपोषित बच्चों की संख्या में 91 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। गरीब, भूखे, वंचित वर्ग के लोग इस बार भाजपा को ह्यवोटबंदीह्य कर करारा जवाब देंगे। अखिलेश ने कहा कि उपचुनावों के हाल में जो परिणाम आए हैं, उससे हवा का रूख सामने आ गया है। भाजपा इसमें हारी और पीछे रह गई। जनता ने तय कर लिया है कि वह अब भाजपा के बहकावे में नहीं आने वाली है। वर्ष 2022 में होने वाले प्रदेश विधानसभा के चुनावों में भी अब करारी शिकस्त खाना और बहुत पीछे रह जाना ही भाजपा की नियति होगी।

यूपी : फतेहगढ़ जेल बवाल की घटना की जांच के लिए एसआईटी गठित

लखनऊ (एजेंसी)। डीजी जेल आनंद कुमार सोमवार को दोपहर जिला फतेहगढ़ पहुंचे और स्थलीय निरीक्षण करते हुए घटना के संबंध में जानकारी प्राप्त की। फतेहगढ़ जिला जेल में हुई हिंसक घटना की जांच के लिए उन्होंने विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन भी किया। जेल मुख्यालय के डीआईजी जेल बीपी त्रिपाठी इस एसआईटी के अध्यक्ष होंगे। जेल मुख्यालय के वरिष्ठ अधीक्षक अमरीश गौड़ और फतेहगढ़ सेंट्रल जेल के वरिष्ठ अधीक्षक पीके शुक्ला को इसका सदस्य बनाया गया है। यह एसआईटी घटना से संबंधित विभिन्न पहलुओं की गंभीरता से जांच कर अपनी रिपोर्ट डीजी जेल को सौंपेगी।

वाराणसी-गोरखपुर के बाद वढ की राजधानी लखनऊ में हुंकार भरेंगी प्रियंका गांधी, दिसंबर में होगी रैली

लखनऊ (एजेंसी)। कांग्रेस महासचिव व प्रियंका गांधी दिसम्बर में एक बड़ी रैली लखनऊ में करेंगी। चुनावी माहौल को धार देने के लिए नवम्बर में ही दो बड़ी रैलियां पश्चिमी उत्तर प्रदेश में करने की तैयारी है। ये रैलियां मेरठ और आगरा में होंगी। इसके बाद बुंदेलखण्ड के चित्रकूट में रैली होगी। वहीं प्रियंका गांधी जोनवार संवाद कार्यक्रमों में भी शामिल हो सकती हैं। अभी तक प्रियंका गांधी गोरखपुर व वाराणसी में रैलियां कर चुकी हैं। भीड़ के लिहाज से ये रैलियां सफल मानी जा रही हैं। इसी तरह की रैलियां आगरा व मेरठ में की जाएंगी।

इनकी तारीखें अगले एक-दो दिनों में घोषित की जाएंगी। वहीं बुंदेलखण्ड समेत अन्य रैलियां कर आखिरी रैली दिसम्बर में लखनऊ में की जाएगी। लखनऊ में होने वाली रैली में ऐतिहासिक भीड़ इकट्ठी करने की तैयारी है। पहले लखनऊ में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की जयंती के मौके पर 19 नवम्बर को रैली की योजना बनाई गई थी लेकिन चूंकि अभी मंडलवार रैलियां पूरी नहीं हो पाई है लिहाजा अब दिसम्बर तक इसे करने की योजना है। वहीं कांग्रेस जोनवार एक संवाद कार्यक्रम आयोजित करने जा रही है। इसमें पार्टी के बड़े नेता, कार्यकर्ता व पदाधिकारी शामिल होंगे और इसमें खुला संवाद होगा। लखनऊ में होने वाला कार्यक्रम 13 नवम्बर को हो सकता है। इन कार्यक्रमों में भी प्रियंका गांधी के शामिल होने की चर्चा है। इसके अलावा कांग्रेस 11 नवम्बर को पदयात्रा की शुरूआत भी कर रही है। इसका विस्तृत कार्यक्रम बनाया जा रहा है।

विधानसभा चुनाव में कौन करेगा भाजपा का नेतृत्व, पूर्व आईएएस और उपाध्यक्ष एके शर्मा ने नहीं लिया योगी का नाम

हाथरस (एजेंसी)। भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष व एमएलसी एके शर्मा भले ही विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटे हैं, लेकिन वह इस बात को स्पष्ट नहीं कर रहे कि 2022 का चुनाव किसके नेतृत्व में होगा। अन्य नेताओं की तरह उन्होंने योगी का नाम नहीं लिया। जब मीडिया ने उनसे सवाल पूछा तो वह बिना जबाव दिये ही प्रेस कांफ्रेंस छोड़कर चल दिये। पूर्व आईएएस एके शर्मा सोमवार को हाथरस के केला फार्म हाउस में आयोजित स्वागत समारोह में आये। स्वागत समारोह के बाद मीडिया से रूबरू हुये।

एमएएलसी एके शर्मा ने कहा कि जब से वह बीजेपी में आये हैं, लगातार भ्रमण कर रहे हैं। वह बीजेपी के कार्यकर्ता हैं। 2001 में नरेन्द्र मोदी गुजरात के सीएम थे। तीन आईएएस अधिकारियों की नियुक्ति उनके ऑफिस में हुई। उसमें वह भी शामिल थे। उस दौरान पार्टी के तमाम पदाधिकारी वहां आते थे। उन्हें देखकर अच्छा लगता था, क्योंकि भाजपा में अनुशासन है। भाजपा की संस्कृति बिल्कुल अलग है। यहां कार्यकर्ता किसी को प्रताड़ित नहीं करता है। बाकी दलों में छोटा सा पद मिलने पर कार्यकर्ता छह महीने में ही लग्जरी कार लेकर आता है।

भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेख? का ऐलान, योगी जहां से भी लड़ेंगे, वहीं से लडूंगा चुनाव

लखनऊ (एजेंसी)। भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर उर्फ रावण ने सोमवार को बड़ा ऐलान किया। आजाद पार्टी के नाम से पहली बार चुनाव के मैदान में उतरने जा रहे चंद्रशेखर ने ऐलान किया कि वह सीएम योगी आदित्यनाथ के खिलाफ खुद मैदान में उतरेंगे। यूपी की सभी 403 सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा कर चुके चंद्रशेखर ने गठबंधन पर भी अपनी स्थिति साफ की। एक बातचीत में चंद्रशेखर ने कहा कि जहां से भी योगी आदित्यनाथ चुनाव लड़ेंगे वहीं से वह भी मैदान में उतरेंगे। चंद्रशेखर ने कहा कि चुनाव लड़ने का फैसला पार्टी की कोर कमेटी करती है। अगर आप मेरी इच्छा पूछेंगे तो मैं वहीं से चुनाव लडूंगा जहां से यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ लड़ेंगे। पिछले साढ़े चार साल में उन्होंने जिस तरह से लोगों पर अत्याचार किये हैं, उसका बदला लेने के लिए उनके खिलाफ चुनाव लडूंगा और उन्हें विधानसभा में घुसने नहीं दूंगा।

खबर संक्षेप

ताला तोड़कर नगदी जेवर समेत लाखों का माल उड़ाया

हंडिया। चोरों ने घर का ताला तोड़कर बीती रात नगदी जेवर समेत लाखों का माल उड़ाया। मिली जानकारी के अनुसार जगुआ सौंधा गांव निवासी सुरेश कुमार गुप्ता पुत्र स्वर्गीय शिवराम गुप्ता जो कि गुजरात में रहकर मेहनत मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करता है बीती रात अज्ञात चोरों के द्वारा पीछे के रास्ते से छत पर चढ़ गए और कमरे में सो रहे बच्चियों को बाहर से कड़ी लगा दिया और घर का ताला तोड़कर नगदी जेवर समेत लाखों का माल उड़ा दिया। घटना की जानकारी तब हुई जब सुबह सुरेश कुमार की बड़ी बेटी उठी और अपने कमरे का दरवाजा खोलने लगी तो कमरे का दरवाजा बाहर से बंद था तो पड़ोस में रहने वाले बड़े पिता की बेटी को फोन करके बुलाया कि हमारे कमरे का दरवाजा बाहर से बंद है जब कमरे का दरवाजा खुला और बाहर आकर देखा तो अन्य कमरों के दरवाजों का ताला टूटा पड़ा था और घर में रखे बक्से गायब थे शोर शराबा हुआ और आस पास पड़ोस के लोग इकट्ठा हुए घटना की जानकारी डायल 112 पर दी गई। सूचना पर कोतवाल हड़िया ज्ञानेश्वर मिश्रा मय फोर्स मौके पर पहुंचे। मौके की जांच करते हुए पीड़ित को थाने पर आकर रिपोर्ट दर्ज कराने की बात कही।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में छठ पूजा की तैयारियों के सम्बंध में बैठक सम्पन्न

डीएम ने चिन्हित घाटों एवं अन्य स्थानों पर सभी आवश्यक व्यवस्थायें पूर्ण रूप से सुनिश्चित किये जाने के दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

अधिकारियों के साथ छठ पूजा की तैयारियों के सम्बन्ध में बैठक करते जिलाधिकारी

प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में कलेक्टेट स्थित संगम सभागार में कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में सूर्य षष्ठी डाला छठ पर्व को सकुशल सम्पन्न कराये जाने की तैयारियों के सम्बंध में बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने छठ पूजा के अवसर पर घाटों पर प्रकाश, साफ-सफाई, गोताखोर, बैरिकेटिंग सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं को समय से सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिया है। उन्होंने विद्युत विभाग को घाटों पर प्रकाश की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने के निर्देश दिये है। उन्होंने सफाई की व्यवस्था के लिए नगरीय क्षेत्रों में नगर निगम एवं नगर पंचायतों में अधिशाषी अधिकारी तथा ग्रामीण क्षेत्रों के घाटों पर जिला पंचायतराज अधिकारी को निर्देशित किया है कि साफ-सफाई की मुकम्मल व्यवस्था सुनिश्चित रहें। साथ ही साथ पुलिस प्रशासन को निर्देशित किया है कि यातायात की व्यवस्था के साथ-साथ पार्किंग की व्यवस्था तथा सुरक्षा आदि की व्यवस्थायें समय से पूर्ण कर ली जाय। उन्होंने गहरें पानी में साइनेज एवं बैरिकेटिंग लगाये जाने के निर्देश दिये है। डीएम ने सभी उपजिलाधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रों में घाटों का भ्रमण कर सभी आवश्यक व्यवस्थायें सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिये है। उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी को आयोजन स्थलों पर एम्बुलेंस की व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने के लिए कहा है। उन्होंने स्थलों पर सुरक्षा के भी पुख्ता इंतजाम किये जाने के लिए कहा है। जनपद में यह पर्व मुख्य रूप से नगर क्षेत्र के संगम, दशाश्वमेघ घाट, सरस्वतीघाट, बोट क्लब घाट, गउघाट, बलुआघाट, रसूलाबाद घाट, नारायणी आश्रम, सीताराम थानाक्षेत्र शिवकुटी, नींवा, ट्रांसपोर्ट नगर, प्रीतम नगर, धूमनगंज एवं गंगापार के फाफामऊ घाट थानाक्षेत्र सोरांव, झूंसी, छतनाग, यमुनापार क्षेत्र में मुख्य रूप से अरैल घाटों पर मनाया जायेगा। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन, एस0पी0 सिटी, मुख्य चिकित्साधिकारी नानक सरन सहित सभी उपजिलाधिकारी व अन्य सम्बंधित अधिकारीगण रहे।

एक सप्ताह पूर्व दुर्घटना के बाद इलाज के दौरान मौत

मासूम बच्चा और पत्नी छोड़ चला मृतक अखलेश

लालापुर। एक सप्ताह पूर्व दुर्घटना में घायल युवक की इलाज के दौरान रविवार की रात मौत हो गई । युवक की मौत की सूचना होते ही परिजनों में कोहराम मच गया। लालापुर थाना क्षेत्र के भटपुरा गांव निवासी अखिलेश द्विवेदी (35)पुत्र मुन्नू लाल द्विवेदी 31 अक्टूबर की शाम अपनी बाइक से शहर की ओर से घर के निकला था । अभी वह बारा थाना क्षेत्र के रिगवा स्थित सचिन ढाबा के पास पहुंचा था कि एक अज्ञात बोलेरो ने उसकी बाइक में जोरदार टक्कर मार दी । जिससे अखिलेश बाइक समेत सड़क पर गिर गया और गम्भीर रूप से घायल हो गया था। अखिलेश को गम्भीर हाल में एसआरएन में भर्ती कराया गया था ।जहां इलाज के दौरान अखिलेश की रविवार की रात मौत हो गई । घटना की सूचना घर पहुंची तो परिजनों में कोहराम मच गया । अखिलेश छ भाइयों में तीसरे नम्बर का था ,अखिलेश अपने पीछे अपनी पत्नी और एक नौ वर्ष का बेटा छोड़ गया है।

न्यूज झरोखा

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष की जनसभा की तैयारी की किया बैठक बांटी पत्रक

घूरपुर। मंगलवार के दिन खीरी मे भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह की जनसभा की तैयारी को लेकर भाजपा पिछड़ा वर्ग मोर्चा यमुनापार के जिला अध्यक्ष सुभाष सिंह पटेल ने मोर्चा के पदाधिकारियो संघ बैठक कर जनसभा को सफल बनाने के लिए रूपरेखा तैयार किया। और क्षेत्र के करमा, पवरी, चिल्ली, बलापुर, राजापुर, हथिगंन आदि दर्जनों गांवों में पत्रक बांट आयोजित प्रदेश अध्यक्ष की जनसभा में अधिक संख्या में पहुंचने की अपील की। साथ में जिला उपाध्यक्ष धर्मराज पाल, सूर्य प्रताप सिंह, धीरेंद्र यादव, सुरेंद्र सिंह, महामंत्री डॉ सूर्या यादव, संजय पाल, अनुपम सिंह, मयंक कुमार गुप्ता, ज़िला मीडिया प्रभारी आर के शर्मा, ज़िला सोशल मीडिया प्रभारी शिवम सिंह, आदि शामिल रहे।

शुआट्स के सत्यम कुमार केसरी बने एनएसएस शिविर के यूपी, उत्तराखंड के टीम लीटर

नैनी। सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज के कोआर्डिनेटर डा. रोहित लाल ने बताया कि विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी श्री सत्यम केसरी को राष्ट्रीय सेवा योजना के 15-24 नवंबर, 2021 को पटना में होने वाले शिविर के लिये उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड का टीम लीडर नामित किया गया है। एनएसएस के युवा अधिकारी अयोध्या प्रसाद द्वारा जारी पत्र के अनुसार श्री सत्यम कुमार केसरी, पूर्व गणतंत्र दिवस परेड शिविर हेतु उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड की टीम का पर्यवेक्षण करेंगे। सत्यम कुमार केसरी के टीम लीडर नामित होने पर विश्वविद्यालय प्रबंधन ने उन्हें बधाई दी। कोआर्डिनेटर डा. रोहित लाल ने कहा कि कुलपति मोस्ट रेव्ह. प्रो. राजेन्द्र बी. लाल के मार्गनिर्देशन में एवं प्रति कुलपति (प्रशासन) प्रो. एस.बी. लाल, प्रति कुलपति (शैक्षिक) प्रो. ए.के.ए. लॉरेन्स, कुलसचिव प्रो. रॉबिन एल. प्रसाद के निर्देशन में राष्ट्रीय सेवा योजना, शुआट्स द्वारा महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संचालन निरन्तर किया जा रहा है। टीम लीडर नामित होने पर सत्यम कुमार केसरी ने डा. अशोक श्रोती, निदेशक राष्ट्रीय सेवा योजना, उ0प्र0 उत्तराखंड तथा डा. अंशुमाली शर्मा, रा0से0यो0 अधिकारी, उत्तर प्रदेश शासन व रा0से.यो0 निदेशालय टीम, लखनऊ का आभार प्रगट किया।

विश्व हिंदू परिषद की बैठक में प्रतापपुर प्रखंड समिति का हुआ गठन, अशोक दुबे पुनः अध्यक्ष बने

प्रतापपुर। विश्व हिंदू परिषद जिला गंगापार में धर्म रक्षा अर्पण निधि कार्यक्रम के शुभारंभ की बैठक राजनारायण विधि महाविद्यालय सहसों में हुई।बैठक में मुख्य अतिथ काशी प्रांत के उपाध्यक्ष सुरेश अग्रवाल व प्रयाग विभाग संगठन मंत्री अमित पाठक का कार्यकताओं को मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।प्रखंड प्रतापपुर में नवीन दायित्व में अशोक दुबे अध्यक्ष, बबलू सिंह कार्याध्यक्ष, पं. अशोकानंद महराज संरक्षक, आचार्य धीरज महराज सत्संग प्रमुख, प्रभात सोनी उपाध्यक्ष, किशन पाठक मंत्री, बृजेश यादव संयोजक पद का नवीन दायित्व की संगठन द्वारा दिया गया।इस अवसर पर अमरनाथ विभाग मंत्री, सत्येन्दर मणि शुक्ला जिलामंत्री, पवन पांडे जी जिला संयोजक, किशन शुक्ला जिला उपाध्यक्ष, विनेक त्रिपाठी जिला सहमंत्री, आशुतोष त्रिपाठी जिला उपाध्यक्ष, दिपक द्विवेदी जिला मीडिया प्रमुख, पंकज त्रिपाठी धर्म प्रचार प्रसार प्रमुख आदि लोग उपस्थित रहें।

करछना ब्लाक परिसर में आयोजित क्षेत्र पंचायत सदन की बैठक को सम्बोधित करते वक्ता व उपस्थित क्षेत्र पंचायत सदस्य व लोग।

वरीयता के आधार पर गांवो में विकास कार्य करवाये जाएगे : प्रमुख सरोज द्विवेदी

अखंड भारत संदेश

सदन की बैठक में विकास एजेन्डा पर निर्वाचित एक भी महिला उपस्थित नहीं रहीं

करछना। सोमवार को करछना ब्लाक परिसर मे आयोजित क्षेत्र पंचायत सदन की बैठक के दौरान विकास कार्यो पर चर्चा की गई इस दौरान पूर्व मे कराए गये विकास कार्यो वर्ष 2021,22 की योजना पर पूरक कार्य योजना हेतु विंदुओ पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई।अध्यक्षता करते हुए ब्लाक प्रमुख श्रीमती सरोज कमलेश द्विवेदी ने कहा कि ब्लाक के माध्यम से होने वाले विकास कार्यो मे प्रधान और बीडीसी किसी प्रकार की लापरवाही न बरते और कार्य योजना के अनुरूप वरियता के आधार पर गांव मे विकास कार्य करवाये जाए।बीडीओ रामविलाश राय ने भी गांव मे कराए गये नाली खडाजा,आवास जैसे विकास कार्यो की समीक्षा करते हुए आगे भी पारदर्शिता के साथ कार्यो को संपादित कराने पर जोर दिया।बीडीसी सदस्यो से भी प्रस्ताव मागे गये और साथ ही विकास कार्यो की देख रेख के बारे मे दिशा निर्देश दिए गये।एडीओ पंचायत विवेक कुमार ने भी करछना को आदर्श ब्लाक बनाने पर जोर देते हुए कहा कि राष्ट्रीय आजीविका मिशन बाल विकास पुष्टाहार,स्वच्छता मिशन आवास योजना,महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना,समाज कल्याण विभाग द्वारा सचालित योजना सबधी कार्यो पर बराबर निगरानी रखी जाए और इनकी जानकारी करते हुए मानक के अनुरूप सभी गावो मे सबधित विकास कार्य सपादित किए जाए।इस मौके पर जिला पंचायत सदस्य ममता देवी, जिला पंचायत सदस्य डाक्टर विजय बाबू यादव संयुक्त विकास अधिकारी राम जी मिश्रा, संतोष पांडेय, शिव गणेश पटेल प्रधान ग्राम पंचायत हथसरा, चंद्र प्रकाश तिवारी, दूध नाथ यादव, पूर्व प्रमुख विजयराज सिह, कमलेश द्विवेदी, कुलदीप त्रिपाठी, भूपेन्द्र शर्मा,अवधेश पाडेय, रामेश्वर सिह, अल्पनारायण सिंह अध्यक्ष लेखा एवं लेखा परीक्षा सेवा एसोसिएशन जनपद ईकाई प्रयागराज , मनीष शुक्ला,विजय शकर तिवारी नागेन्द्र शर्मा कई क्षेत्र पंचायत सदस्य और प्रधान प्रतिनिधि मौजूद रहे।

चनेथू भागवत कथा में दैत्य हिरण्यकशयप वध का वर्णन

जंघई। चनेथू शरीफाबाद गाँव में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के तीसरे दिन कथा वाचक आचार्य शंकर नाथ महाराज ने श्रीमद्भागवत कथा में भगवान कपिलदेव संवाद, ध्रुव चरित्र, भरत प्रसंग व प्रह्लाद चरित्र व सती चरित्र का वर्णन किया। कथा वाचक ने कहा कि जहां भागवत कथा होती है, वहां स्वयं भगवान विराजमान होते हैं। भागवत कथा श्रवण मात्र से ही किए गए पापों से मुक्ति मिलती है।ध्रुव चरित्र का वर्णन करते हुए कहा कि ध्रुव जो समस्त मार्ग निर्देशकों का मार्गदर्शक हैं। जो चल नक्षत्रों में स्थिर हैं, का विवाह संस्कार आदि शुभ कार्यो में स्मरण किया जाता है। इनका नक्षत्र मंडल परिक्रमा करता है। अविनाशी परमानंद स्वरूप हैं। भक्त प्रहलाद का चरित्र वर्णन करते हुए कहा कि हिरण्यकश्यप नामक दैत्य ने घोर तपस्या कर भगवान ब्रह्मा से ऐसा वरदान प्राप्त किया कि वह न दिन में, न रात में, न अंदर, न बाहर, न कोई हथियार काट सके, न आग जला सके, न नर मार सके न नारी, न पानी में डूब कर मरने का वरदान प्राप्त किया था। हिरण्यकश्यप के पुत्र प्रह्लाद भगवान विष्णु के परम भक्त थे। हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु को अपना दुश्मन मानते थे। वह निर्भय थे। हिरण्यकश्यप पुत्र प्रह्लाद को तरह-तरह की यातनाएं देने लगे जबकि भगवान हमेशा प्रह्लाद की रक्षा करते रहे। अततः भगवान विष्णु नरसिंह का रूप धारण किया व अत्याचारी दैत्य हिरण्यकश्यप को गोधूलि बेला में वध किया था। भागवत कथा को लेकर चनेथू सहित आसपास के गांव में भक्ति का माहौल व्याप्त है।कथा यजमान उमाशंकर दुबे, जटाशंकर दुबे, दयाशंकर दुबे ने आये हुए अतिथियों का स्वागत किया।इस इस अवसर पर आचार्य शिव मोहन पांडेय, धर्मेंद्र मिश्रा, मुनीम पांडेय, अजय दुबे, धीरज, अमित, आलोक, संदीप सहित तमाम ग्रामीण उपस्थित रहे।

भागवत कथा के श्रवण मात्र से कट जाते हैं पाप : हरिप्रपन्नाचार्य महाराज

जंघई। जंघई बाजार हंडिया रोड पेट्रोल पंप के नजदीक श्रीमद्भागवत कथा के प्रथम दिन कथा व्यास प्रयाग पीठाधीश्वर शक्तिपीठ चक्र सुदर्शनपुरी प्रयागराज रामानुजाचार्य हरिप्रपन्नाचार्य महाराज ने सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा के प्रथम दिन महाराज ने धुंधकारी की कथा सुनाई। कहा कि धुंधकारी नामक एक पिशाच ने अपने जीवन में बहुत ही क्रूर कर्म व पाप किए थे। इस कारण वह प्रेत योनि में भटक रहा था। ईश्वर की महिमा से गांव में श्रीमद्भागवत कथा का आयोजन किया गया था धुंधकारी भी प्रतिदिन भागवत कथा का श्रवण कर रहा था। कथा सुनने के कारण उसके पाप कट गए और उसको मुक्ति मिल गई। उसने फिर से मनुष्य जीवन प्राप्त कर लिया।महाराज ने कहा की भागवत ऐसी अमृत कथा है जिसके श्रवण मात्र से मनुष्य का पाप कट जाते हैं और उसका हृदय निर्मल हो जाता है। इस मौके पर कथा के मुख्य यजमान रामराज मिश्रा, प्रेमलता मिश्रा, मानस भास्कर अनुज महाराज, आचार्य अंबुज द्विवेदी, मनीष पांडेय, अभिषेक शुक्ला, मनोज कुमार मिश्रा, अभिषेक मिश्रा, मयंक मिश्रा, शिवम् मिश्रा, छोटेलाल सोनी, छोटेलाल मिश्रा, अरविंद दुबे आदि मौजूद रहे।

हिंदी फिल्म की शूटिंग शुरू लोगों में दिखा उत्साह

प्रतापपुर। क्षेत्र में इन दिनों हिंदी फिल्म की शूटिंग चल रही है। शूटिंग देखने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी।क्षेत्र के उग्रसेनपुर बाजार में सोमवार को जैसे ही कलाकारों का शूटिंग के लिए जमघट हुआ भारी भीड़ जमा हो गई।शूटिंग देखने ग्रमीणों की भारी भीड़ उमड़ पड़ी। उग्रसेनपुर में संतोष सिंह की पुरानी कोठी हैं।जो प्राचीन की सभ्यता दशार्ती है। यहां शूटिंग के बाद पास में हीं शारदा शहाय नहर उदगी के दक्षिणी भाग में फिल्म के कई अहम दृश्यों को फिल्माया गया।फिल्म के लेखक और निर्देशक धीरज मिश्रा ने बताया कि तीन दिन शूटिंग के बाद फिल्म का और हिस्सा विंध्याचल में फिल्माया जायेगा। उसके बाद यूनिट मुम्बई के लिए रवाना होगी।फिल्म में मुख्य किरदार इमरान हसनी, तरुणिमा सिंह, मंजेश पांडेय के अलावा स्थानीय नवोदित कलाकार सूर्या यादव और राजसोनी भी फिल्म का हिस्सा बने।

ट्रेनों में उमड़ी भीड़, यात्रियों से भरा रहा प्लेटफार्म

अखंड भारत संदेश

छट्टियों के बाद अपने अपने गतव्य पर पहुंचने के लिए ट्रेनों पर लोगों की इस तरह दिखी भीड़

प्रयागराज। दिवाली मनाने के बाद अपने गंतव्य की ओर वापसी करने वाले लोगों की वजह से रविवार को ट्रेनों में इस सीजन की सर्वाधिक भीड़ उमड़ी। कोविड की दूसरी लहर थमने के बाद प्रयागराज से विभिन्न स्थानों की ओर जाने वाली तमाम ट्रेनों में लंबी प्रतीक्षा सूची के बाद नो रूम रहा। दिल्ली रूट की ट्रेनें यात्रियों से ज्यादा ठसाठस रहीं। बताया जा रहा है कि इस रूट की ट्रेनों में अब छठ के बाद ही राहत की उम्मीद है।

दिवाली के बाद प्रयागराज से विभिन्न स्थानों की ओर जाने वाली ट्रेनों में चार माह पूर्व ही सारी सीट भर गई। इस बार भैया दूज शनिवार को रहा। इस वजह से दिवाली पर जो लोग आए उसमें से अधिकांश ने रविवार सात नवंबर को ही वापसी की राह पकड़ी। पर्व मनाने के बाद संगम, प्रयागराज, हमसफर एक्सप्रेस, पुरुषोत्तम एक्सप्रेस, ब्रह्मपुत्र मेल, पूर्वा एक्सप्रेस, शिवगंगा एक्सप्रेस आदि ट्रेनों की रवानगी के दौरान जंक्शन पर खासी भीड़ हो गई। ट्रेनों में लंबी प्रतीक्षा सूची के साथ नो रूम होने की वजह से उन यात्रियों को भी परेशानी हुई, जिनके टिकट कंफर्म थे।ऐसे तमाम यात्रियों को प्रतीक्षा सूची वालों से अपनी सीट साझा करनी पड़ी। शाम को संगम एक्सप्रेस की रवानगी के दौरान तमाम प्रतीक्षा सूची वाले यात्री आरक्षित कोचों में बैठ गए। जबकि कोविड प्रोटोकाल के तहत ट्रेनों में केवल कंफर्म बर्थ टिकट वाले यात्रियों को ही सफर की अनुमति है। यही स्थिति प्रयागराज संगम रेलवे स्टेशन से नौचंदी और ऊंचाहार एक्सप्रेस की रवानगी के दौरान रही। उधर शाम को प्रयागराज एक्सप्रेस की रवानगी के दौरान भी जंक्शन पर खूब भीड़ हो गई।

प्रयागराज-जयपुर एक्सप्रेस से भी आज काफी भीड़ गई। इस ट्रेन के स्लीपर में प्रतीक्षा सूची 150 के पार हो गई। उधर, मुंबई रूट की प्रमुख ट्रेनों की बात करें तो महानगरी, काशी, कामायनी एक्सप्रेस के स्लीपर, एसी थ्री, एसी टू में भी रविवार को लंबी प्रतीक्षा सूची रही। इन ट्रेनों के आरक्षित कोचों में वेटिंग टिकट वाले यात्रियों के बैठ जाने की वजह से जिन लोगों ने काफी पहले ही अपने रिजर्वेशन ट्रेनों में करा रखे थे, उन्हें काफी परेशानी हुई।

सहकारी समिति : कर्मचारियों का हड़ताल, समिति में लगा ताला

अखंड भारत संदेश

डी ए पी के लिए दर-दर भटक रहे किसान

जसरा। विकास खंड जसरा के समितियों के सचिवों के हड़ताल पर जाने के कारण किसानों को महंगे दामों पर खाद खरीदने पड़ रहे हैं। समितियों में ताला लटकने से रबी की बुआई में किसान खाद बीज के लिए दर दर भटकने को मजबूर है। जसरा ब्लॉक में कुल 6 सहकारी समितियां खाद बीज समिति में बने सदस्यों को देती चली आ रही है। वहीं समिति में कार्य करने वाले कर्मचारियों ने बताया कि वर्षों से वेतन न मिलने के कारण हम सब प्रदेश संगठन के आह्वान पर हड़ताल पर हैं। जब कि समिति के ज्यादातर कर्मचारी वेतन न मिलने के कारण भुखमरी के कगार पर हैं। साथ ही रबी की बुआई के लिए किसानों को डीएपी खाद की आवश्यकता है। हड़ताल होने के कारण समितियों में खाद न होने के कारण समितियों के सचिव खाद नहीं मंगवा रहे हैं। जसरा में किसान सेवा सहकारी समिति जसरा, चिल्ला गौहानी, घूरपुर, क्षेत्रीय सहकारी समिति बारा,साधन सहकारी समिति जारी और लोटाढ़ गौहानी में हड़ताल के कारण खाद किसानों को न मिल पाने से बाजार में प्राइवेट दूकानों पर महंगे दामों में खाद लेने को किसान मजबूर हैं।

1- प्राइवेट दूकान दारों की बल्ले बल्ले

समितियों में हड़ताल होने के कारण बाजारों में प्राइवेट दूकानदार औने पौने दामों में खाद बेंच रहे हैं। अन्नदाता कहा जाने वाला किसान अपने आपको ठगा महसूस कर रहा है।

2- किसानों को कितनी खाद की जरूरत

बताते चलें कि रबी की बुआई में सरसों, चना,गेहूं,मटर आदि के लिए किसानों को सबसे पहले डीएपी खाद की आवश्यकता होती है। किसान एक बीघे में कम से कम 20 से 25 किलोग्राम डीएपी खाद खेतों में डालता है। अगर किसान के पास पांच बीघा भी खेत होगा तो उसे ढाई बोरी डीएपी की जरूरत पड़ेगी।

3- समिति और खुले बाजार के भाव

सहकारी समितियों में डीएपी लगभग एक हजार दो सौ रुपए में है। जबकि बाजार में यही डीएपी साढे बारह से लेकर साढ़े तेरह सौ में बेंची जा रही है।

4- प्राइवेट दूकानदारों पर नहीं है अधिकारियों का दबाव

सहकारी समितियों के कर्मचारियों द्वारा किसान बही देखकर उसमें दर्ज खेत के अनुसार ही खाद बेचने का आदेश समितियों में अधिकारियों ने दिया है। जब कि बाजार के दूकानदार धड़ल्ले से बिना रोकटोक खाद बेंच रहे हैं।

5- मांगों को लेकर कर्मचारी लामबंद

मांगों को लेकर संयुक्त सहकारी कर्मचारी समन्वय समिति के लोगों ने मांग पूरी न होने तक आर पार की लड़ाई लड़ने के लिए कमर कस लिया है। मांगों में पैक्स कैडर सचिवों को सहकारी निरीक्षक वर्ग दो एवं नान कैडर सचिवों, प्रभारी सचिवों को कैडर सचिव के पद पर पदोन्नति किये जाने की मांग की गई है।

सपूर्ण समाधान दिवस पर मायूस लौटे फरियादी

करछना। शनिवार को तहसील सभागार मे आयोजित सपूर्ण समाधान दिवस पर कुल 79 शिकायते आई लेकिन मौके पर एक भी शिकायत का निस्तारण नही हो सका जबकि पूर्व मे आई शिकायतो मे से 8 शिकायतो का निस्तारण किया गया।अध्यक्षता एसडीएम अम्रिता सिह करते हुए मातहतो को शिकायतो के त्वरित निस्तारण करने और लंबित शिकायतो का टीम के साथ स्थलीय निरीक्षण करने और किसी के साथ बिना भेदभाव के समय से निपटाए।मझिगवा गाव के कोटेदार के खिलाफ ग्राम प्रधान निर्भयनयन सिह ने करते घटतौली और मनमानी करने की शिकायत की।इसी तरह सोनाई गाव के अधिवक्ता सुरेश कुमार मौर्या ने भी अपने पुत्र के साथ दबंगो द्वारा मारपीट की शिकायत दर्ज कराई जिसे लेकर प्रभारी ने सबधित थाने को निर्देशित किया।इस दौरान तहसीलदार रमेश चन्द्र पाण्डेय,नायब तहसीलदार विनय द्विवेदी,वीरेन्द्र कुशवाहा जेई वीरेन्द्र कुमार समेत कई विभागीय लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

सपा का बूथ करो मजबूत कार्यक्रम कोराव में आयोजित

कोराव। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यछ पुर्व एवम भावी मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के निर्देश पर आज कोराँव विधानसभा बीवी में रोशनी गार्डेन में आयोजित अपना बूथ करो मजबूत कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व कबीना मंत्री के के गौतममुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। पुर्व कैबिनेट मंत्री कमलाकांत गौतम का स्वागत कार्यकताओं ने किया। उपस्थित सेक्टर बूथ के प्रभारियों कार्यकताओं नेताओं को सम्बोधित मुख्य अतिथि ने किया। साथ ही चुनाव जीतने का मंत्र भी दिया।

शहीद के नाम पर डीहा में बने मनरेगा पार्क : त्रिवेणी पांडेय

करछना। विकास खण्ड करछना के डीहा गांव में बनवाये जा रहे मनरेगा पार्क का नाम शहीद संतोष तिवारी पार्क रखा जाए।डीहा गांव में पूर्व जिला पंचायत सदस्य त्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय की अध्यक्षता में हुई बैठक में गांव के लोगों ने इसपर सहमति जताई।इसे लेकर खण्ड विकास अधिकारी से भी पत्र के माध्यम से शहीद संतोष तिवारी मनरेगा पार्क के नामकरण के लिए आग्रह किया गया है। गांव के लोगों ने कहा कि डीहा गांव के लाल कुपवाड़ा में शहीद हुए अमर शहीद संतोष तिवारी की स्मृतियां इससे जीवंत रहेगी।

चोरी की माल के साथ चार चोरों को पुलिस ने पकड़ा

घूरपुर। घूरपुर पुलिस टीम ने चोरी के माल के साथ चार चोरों को पकड़कर जेल भेजा है। घूरपुर एसओ राकेश कुमार राय ने बताया कि चोरी का माल बेचते व खरीदते समय इलाके से चार लोगों तेंदुई बनी चौराहा हनुमानगंज निवासी समीर सिद्दीकी ,इमरान कुरेशी निवासी कोहड़ार घाट,जावेद कबाड़ी निवासी भंडरा नैनी व संतोष कुमार जायसवाल को चोरी की दस कुंतल सरिया व एक घरेलू गैस सिलेंडर के साथ पकड़ा है।

दबगो ने युवक को पीटा

करछना। सोमवार सुबह घर से खाई जा रहे एक युवक को कुछ दबगो ने गांव के सामने रोककर उसकी पिटाई कर दी जिससे उसे काफी चोटे आई.सोनाई गाव निवासी मनोज कुमार घर से खाई गाव जा रहा था कि खाई का ही सोनू भारतीया ने भद्धी भद्धी गालिया देते हुए लाठी डडे से जमकतर पिटाई कर दी।लोगो ने किसी बीच बचाव कर मामला शात कराया और भुक्तभोगी किसी तरह वहा से जान बचाकर भागा और घटना की जानकारी पिता को दी।पिता सुरेश की तहरीर पर एक के खिलाफ पुलिस मामला दर्ज कर जाच पड़ताल मे जुटी है।

मोदी, योगी में बढ़ा लोगों का भरोसा पहले से ज्यादा सीटें जीतेगी भाजपा

अखंड भारत संदेश

केन्द्रीय शिक्षा मंत्री व भाजपा यूपी चुनाव प्रभारी धर्मेन्द्र प्रधान का स्वागत करते

प्रयागराज। केंद्रीय शिक्षा मंत्री और भाजपा के यूपी चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान ने सोमवार को कहा कि प्रधानमंत्री मोदी और सीएम योगी पर लोगों का भरोसा बढ़ा है। उन्होंने दावा किया कि यूपी में वर्ष 2017 में हुए चुनाव के मुकाबले भाजपा इस बार ज्यादा सीटें जीतेगी, क्योंकि भाजपा सरकार ने प्रदेश का विकास किया है। यूपी अब विकसित राज्य है। यहां कानून व्यवस्था में भी सुधार हुआ है।

केपी कॉलेज परिसर में भाजपा काशी प्रांत के पांच जिलों के मंडल पदाधिकारियों की बैठक को संबोधित करने के पूर्व संवाददाताओं से मुखातिब धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था की अन्य राज्य मिसाल देते हैं। कोरोना के दौरान यूपी सरकार का कुशल प्रबंधन रहा। अर्थव्यवस्था भी दोबारा पटरी पर आ गई है। डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और कैबिनेट मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी की मौजूदगी में धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि मोदी और योगी सरकार के तमाम विकास कार्य ही हमारे प्लस प्वाइंट हैं। इस आधार पर भाजपा पिछली बार से ज्यादा सीटें अगले वर्ष जीतने जा रही है।

संजय निषाद एनडीए के सहयोगी, भाजपा से हैं उनके अच्छे रिश्ते

निषाद पार्टी के अध्यक्ष संजय निषाद को लेकर पूछे गए सवाल पर धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि वह एनडीए के वरिष्ठ नेता हैं। कहा कि सर्किट हाउस में सोमवार सुबह उनसे मुलाकात हुई। इस दौरान कई मुद्दों पर चर्चा हुई। धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि निषाद पार्टी एनडीए का ही हिस्सा है। संजय निषाद से भाजपा के अच्छे रिश्ते हैं। भाजपा उनके साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ेगी।

प्रयागराज में अमित शाह का जल्द होगा आगमन , मछुआ प्रकोष्ठ के कार्यक्रम में होंगे शामिल

केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि प्रयागराज में जल्द ही केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह का आगमन होगा। वह आने वाले दिनों में मछुआ प्रकोष्ठ की ओर से आयोजित कार्यक्रम में शिरकत करेंगे। यह कार्यक्रम एनडीए की ओर से होगा। इसमें भाजपा के साथ निषाद पार्टी, अपना दल एवं एनडीए के अन्य घटक दल के नेता मौजूद रहेंगे।

धर्मेंद्र प्रधान से मिलने पर अड़े छात्र नेताओं पर पुलिस ने किया लाठीचार्ज

प्रयागराज। छात्रसंघ बहाली के मुद्दे पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय (इविवि) में दीक्षांत समारोह के दौरान केंद्रीय शिक्षा मंत्री से मिलने जा रहे छात्रों को पुलिस ने खदेड़ दिया। 15 छात्र हिरासत में ले लिए गए, जिन्हें देर शाम रिहा करा दिया गया। छात्रों का आरोप है कि पुलिस ने हॉलैंड हॉल हॉस्टल में लाठीचार्ज भी किया। हालांकि पुलिस ने लाठीचार्ज से इनकार किया है।छात्रसंघ बहाली को लेकर इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सोमवार को छात्रों के आंदोलन का 475वां दिन था। आंदोलन में शामिल छात्र शिक्षा मंत्री से मिलना चाहते थे। छात्रों ने अपने दोनों हाथ बांध रखे थे और उनके हाथों में फूल थे। छात्रों का कहना था कि वह शांतिपूर्ण तरीके से मंत्री से मिलकर छात्रसंघ बहाली के मुद्दे पर ज्ञापन देना चाहते हैं, पुलिस ने रोक दिया। इस पर छात्रों की पुलिस से झड़प हो गई और उन्होंने नारेबाजी शुरू कर दी। मामला बिगड़ने पर पुलिस ने उन्हें खदेड़ा तो कई छात्र हॉलैंड हॉल हॉस्टल की ओर भागे। इस दौरान पुलिस ने 15 छात्रों को हिरासत में ले लिया। छात्रों का आरोप है कि हॉस्टल में उन पर लाठियां चलाई गईं। हिरासत में लिए गए छात्र नेता अजय यादव सम्राट सहित 15 छात्रों मुबाशिर हारून, सौरभ सिंह बंटी, राहुल पटेल, मसूद अंसारी, अमित द्विवेदी, मोहम्मद अशफाक, शिव शंकर सरोज, आदर्श भदौरिया, मोहम्मद सलमान, अभिषेक सिंह माइकल, अजय राज त्रिपाठी, उपेंद्र भारती, हरिकेश कुमार हैरी, अभिषेक प्रधान को पुलिस लाइन ले जाया गया, जहां देर शाम उन्हें रिहा कर दिया गया।

न्यूज झरोखा

पत्रकार उत्पीड़न को लेकर शिव सैनिकों की बैठक संपन्न

मेजा रोड। सोमवार को मेजारोड बाजार मे पत्रकार उत्पीड़न को लेकर शिव सैनिकों की एक बैठक आयोजित हुई। बैठक यमुनापार प्रभारी चंद्रमा शुक्ला की अगुआई मे आयोजित हुई जिसमें शिव सैनिकों ने हिंदी दैनिक अखबार के पत्रकार जयप्रकाश द्विवेदी के साथ हुई घटना को गंभीरता से लेते हुए निर्णय लिया कि यदि पत्रकार के साथ मारपीट और लूट करने वाले आरोपियों की सप्ताह भर के अंदर गिरफ्तारी नहीं की जायेगी तो शिवसैनिक मेजारोड मे धरना प्रदर्शन व चक्का जाम करने को मजबूर होगे। यमुनापार प्रभारी ने आगे कहा कि किसी भी सूरत में पत्रकार उत्पीड़न बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।बैठक में यमुनापार उपप्रमुख बबलू उपाध्याय ने कहा कि पत्रकार देश का चौथा स्तंभ हैं यदि पत्रकार सुरक्षित नहीं रह पाएंगे तो देश पतन की ओर चला जाएगा। आगे कहा कि जब से भाजपा सरकार आई है पत्रकारों पर हमले बढ़ गए हैं। पत्रकार सुरक्षित नहीं है। बैठक में ब्लाक प्रमुख उरुवा मूलचंद पांडे, पुरुषोत्तम तिवारी, उत्तम पांडे, बृजेश मिश्रा, डबल तिवारी, प्रभाकर शुक्ला, पंकज मिश्रा, अमन मिश्रा सहित दर्जनों पदाधिकारी मौजूद रहे।

मेजा विधायक नीलम करवरिया ने खत्म कराया अनशन

मेजा रोड। उरुवा ब्लाक के अंतर्गत नरवर चौकठा में कटान को लेकर ग्रामीणों ने महीनों से अनशन पर बैठे थे सोमवार को मेजा विधायक के आश्वासन पर दिव्या चौराहे पर अनशन खत्म किया गया था कि 1 महीने के अंदर वहां पर पक्का घाट बनेगा और इसका जो मुस्कान का उसका मुआवजा मिलेगा तब जाकर अनशन तपन सिंह के नेतृत्व में समाप्त किया गया ,जिसमें ग्राम प्रधान मंगला पाल,शक्ति सिंह शैलेश कुमार पवन कुमार जानबहादुर अमित सिंह राधेश्याम गोविंद पाल सूरज सिंह आदि रहे।

दो नशे के सौदागर गिरफ्तार, गांजा बरामद

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र थाना प्रभारी संजीव कुमार चौबे को सोमवार को जरिए मुखबिर से सूचना मिली की गलुआ बाद ओवर ब्रिज पर एक नशे का सौदागर मौजूद है और उसके पास नशीला पदार्थ भी है। सटीक सूचना मिलते ही थाना प्रभारी के निर्देश पर रामपुर पुलिस चौकी प्रभारी विनय कुमार गुरुदेव दलबल के साथ पहुंचे और घेराबंदी करते हुए उसे गिरफ्तार कर थाने पर उठा लाए। पुलिस के मुताबिक पकड़ा गया नशे का सौदागर मुंगारी गांव निवासी नगेंद्र प्रताप सिंह उर्फ मुन्नू पुत्र स्वः बजडू सिंह है और उसके मौजूद प्लास्टिक के झूले से दो किलो अवैध नशीला पदार्थ (गांजा) बरामद किया गया है। इसी प्रकार नैनी कस्बा पुलिस चौकी प्रभारी सुशील कुमार दुबे ने जरिए मुखबिर से सूचना पर मलहारा रेलवे फाटक के निकट एक नशे के सौदागर को दलबल के साथ घेराबंदी करते हुए उसे गिरफ्तार कर लिए। पुलिस के मुताबिक पकड़ा गया नशे का सौदागर दूरवाणी नगर निवासी सूरज निषाद पुत्र जीत लाल निषाद है और उसके कब्जे से 12 सौ ग्राम अवैध नशीला पदार्थ (गांजा) बरामद किया गया है। बता दें कि पकड़े गए आरोपी के खिलाफ नैनी कोतवाली में ही चार मुकदमें पहले से ही दर्ज है। हालांकि पुलिस ने पकड़े गए दोनों आरोपियों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत कानूनी कार्रवाई करते हुए चालान कर दिए।

सामाजिक संगठन भारतीय भीम सेवा सेवा समिति भीम सेना का जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन में आये लोग व भीम सेना के पदाधिकारीगण।

भीम सेना का जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन संपन्न

अखंड भारत संदेश

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए महिलाओं ने बढ़ चढ़कर लिया हिस्सा

मांडा। सामाजिक संगठन भारतीय भीम सेवा समिति भीम सेना का जिला स्तरीय कार्यकर्ता सम्मेलन ग्राम सभा नौगांव छानबे मिजार्पुर में रमाकांत पासी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ ,भीम सेना सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भीम सेना अनुशासन समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष रामा भारतीय ने कहा कि देश की बड़ी आबादी बहुजन समाज के हक, अधिकार, सम्मान, सुरक्षा के लिए संगठित होना पड़ेगा ' धन्य हो बाबा साहेब डा० भीम राव अम्बेडकर जी जो कि आजिवन तकलीफ सहते हुए बहुजन समाज को संवैधानिक अधिकार दिया वरना यह बड़ी आबादी बहुजन समाज जानवरों से भी बदतर जीवन जीने को मजबूर था,भीम सेना के मुख्य संरक्षक राजेश कुमार सुमन ने बाबा साहेब अम्बेडकर के मूल मंत्र शिक्षित बनो , संगठित हो, संघर्ष करो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वर्तमान राजनैतिक दौर में बहुजन समाज को उच्च शिक्षा हासिल करके संगठित जनआंदोलन की रुपरेखा तैयार करके अपना हक अधिकार लेना पड़ेगा '

सम्मेलन में विशेष रूप से सुरेश चन्द्र राव, प्रेम शंकर कुशवाहा, हरि बाबा, भीम राव गौतम,डा० शीला भारती, किरन कैथवास, केदार नाथ, जीत नारायण पाल, महेश यादव, भोला शंकर, प्रवीण पटेल, नेहाल अख्तर, प्रेम मेकार्टी, राकेश सोनकर, रामफल सरोज ने विचार व्यक्त किया सैकड़ो नये समाजसेवियों ने भीम सेना के संस्थापक सनाउल्ला खान की विचारधारा से प्रभावित होकर बाबा साहेब अम्बेडकर जी का मिशन बढ़ाने के लिए भीम सेना की सदस्यता ग्रहण किया ,संचालन संतोष बौद्ध तथा धन्यवाद ज्ञापन संस्थापक सनाउल्ला खान ने किया।

अधिकारियों संगठन के पदाधिकारियों के बीच वार्ता विफल

किसानों के हक की लड़ाई लड़ाई लूंडूगा : राजू चौबे

उपजिलाधिकारी कोरांव से वार्ता करते किसान यूनियन के नेता

अखंड भारत संदेश

कोरांव। भारतीय किसान यूनियन भानू ने ज्ञापन और सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह के कार्यक्रम को लेकर घेरने की धमकी दी थी। जिस क्रम में खीरी एवं उप जिलाधिकारी कोरांव अभिनव कनौजिया के बीच घंटों चली वार्ता विफल हो गई। जहां एक ओर संगठन के पदाधिकारी किसान हित को देखते हुए अपनी ग्यापन देने की बातों पर अडे रहे वही अधिकारी किसान पदाधिकारियों को कार्यक्रम स्थल पर ना जाने को लेकर हीला हवाली करते नजर आए । भारतीय किसान यूनियन भानु के जिला अध्यक्ष राजू चौबे ने कहा कि किसानों के हक व अधिकार की लड़ाई लड़ने के लिए रोड पर आना पड़ेगा। अगर चुनाव में जनता में किए गए वादे को सरकार भूल रही है तो उसे याद दिलाना हम जानते हैं। उन्होंने कार्यकताओं का आह्वान करते हुए कहा कि कल संगठन कार्यालय कोरांव से चलकर कार्यक्रम के बगल किसान पंचायत करेंगे।वही मंडल सचिव प्रकाश सिंह पटेल ने कहा कि जिस तरह सत्ताधारी नेता किसानों से नजरें चुराने का काम कर रहे हैं उससे यह प्रतीत होता है कि यह उद्योगपतियों की सरकार है। पदाधिकारियों में प्रमुख रूप से मंडल उपाध्यक्ष राजेश पांडेय युवा जिलाध्यक्ष एवं जिला पंचायत सदस्य पिंटू चौबे समाजसेवी प्रमोद मिश्रा पयासी ब्लाक अध्यक्ष पूष्प राज शूक्ला कामता यादव देवराज मिश्रा प्रकोष्ठ के ब्लॉक प्रभारी मंगला कोल आदि मौजूद रहे।

दुकान में लगी आग, ऊलेन कपड़े जलकर राख

प्रयागराज। कोतवाली क्षेत्र के चौक स्थित पान दरीबा स्थित गोदाम में आग लग जाने से करीब 25 लाख रुपये के ऊलेन कपड़े जलकर राख हो गए। इस घटना से इलाके में हड़कंप मचा रहा। फायर ब्रिगेड की टीम ने मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पाया, तब तक लाखों का नुकसान हो चुका था। आर्य समाज मंदिर गली में चौक स्थित पान दरीबा मुहल्ले में अंकित रस्तोगी के कपड़ों का गोदाम है। कुछ दिनों पहले उन्होंने ऊलेन कपड़े मंगाए थे। रविवार की रात गोदाम में आग लग गई। जिससे सर्दियों के लिए मंगाया गया करीब 25 लाख रुपये के कपड़े जलकर राख हो गए। घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। सूचना पाकर मौके पर दमकल के साथ फायर ब्रिगेड की टीम पहुंच गई। काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया।

बूथ पदाधिकारियों के बल पर ही सूबे में बनेगी सपा सरकार : केके गौतम

अखंड भारत संदेश

अपना बूथ करो मजबूत कार्यक्रम में पूर्व मंत्री ने नेताओं को दी नसीहत

रत्योरा। समाजवादी पार्टी के सभी वरिष्ठ नेता एवं पदाधिकारी बूथ पदाधिकारियों का सम्मान करें। बूथ पदाधिकारियों के बल पर ही पार्टी के विधायक चुने जाएंगे और सूबे में समाजवादी पार्टी की सरकार बनेगी। यह बातें पूर्व कैबिनेट मंत्री कमलाकांत गौतम ने विधानसभा कोरांव में सोमवार को आयोजित अपना बूथ करो मजबूत कार्यक्रम में उपस्थित बूथ पदाधिकारियों पार्टी कार्यकताओं व संभावित उम्मीदवारों को संबोधित करने के दौरान बतौर मुख्य अतिथि कही। पूर्व मंत्री कमलाकांत गौतम ने कहा कि समाजवादी पार्टी के लाल टोपी में ही अभूतपूर्व शक्ति है आप किसी भी ऑफिस अथवा कार्यालय में समाजवादी पार्टी की टोपी पहनकर जाएंगे तो निश्चित तौर पर आपका सम्मान होगा, और डबल इंजन रूपी मोदी व योगी की सरकार से डरे सहमे लोगों का डर खतम होगा। उन्होंने कहा कि बाबा भीमराव अंबेडकर द्वारा दी गई शक्तियों एवं उनके द्वारा बनाए गए संविधान का अस्तित्व भी खतरे में आ गया है। आगे उन्होंने कहा कि संविधान को बचाने के लिए एवं देश के पीड़ितों शोषितों वंचितों के अधिकार के लिए प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाना जरूरी है। उन्होंने कहा कि योगी, योगी नहीं भोगी हैं। तर्क देते हुए कहा कि योगी शिवालय नहीं छोड़ सकता। शिवालय छोड़कर सचिवालय आने वाला व्यक्ति भोगी है। पूर्व मंत्री कमलाकांत गौतम ने अपने राजनीतिक अनुभव एवं कार्यशैली के जरिए उपस्थित पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकताओं में नई ऊर्जा का संचार भी किया। इसी प्रकार अपना बूथ करो मजबूत कार्यक्रम को विधानसभा प्रभारी जिला पंचायत सदस्य जिला सचिव समाजवादी पार्टी सोमदत्त सिंह पटेल, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष अवध नारायण सिंह पटेल, पूर्व जिला पंचायत सदस्य ललन सिंह पटेल, प्रमोद मिश्र पयासी, राजेश पांडेय एवं संभावित उम्मीदवार गणों में रामदेव निडर, ओम सहाय, दीपांशु कोल, सुमन कोल, लाल जी पाल निराला सहित पूर्व विधनसभा अध्यक्ष उमाशंकर सिंह पटेल आदि ने संबोधित कर बूथ कैसे मजबूत होगा आदि के बारे में उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम में उपस्थित लोगों में प्रमुख रूप से राधेश्याम यादव, दिनेश पटेल, मुस्ताक अहमद पूर्व प्रधान, गुरुदीन यादव, गुलफाम खान, पवन सोनकर, प्रशांत सिंह, सुरेंद्र कोल, सहित भारी संख्या में बूथ पदाधिकारी एवं पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता विधानसभा अध्यक्ष ओमप्रकाश कुशवाहा एवं कुशल संचालन विधानसभा महासचिव पवन सिंघाल पटेल ने किया।

दीपावली बाद नैनी पुलिस की खुली नींद, पांच जुआरी हुए गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

नैनी। आखिरकार दीपावली पर्व बीतने के बाद नैनी कोतवाली पुलिस की कुंभकर्णीय नींद खुल ही गई और बीती देर रात सीएचसी चाका के समीप छापेमारी की कार्रवाई करते हुए पांच जुआरियों को गिरफ्तार कर चालान कर दिए। बता दें कि नैनी कोतवाली क्षेत्र के विभिन्न इलाकों में दीपावली से कुछ दिन पूर्व बड़े पैमाने पर जुए के खेल को अब तक खेला जा रहा है। पुलिस को पूर्ण रूप से जानकारी होने के बाद भी कार्रवाई करने से कतरा रही थी। इस संबंध में हिंदी दैनिक समाचार पत्र अखंड भारत संदेश ने खबर को प्रमुखता से प्रकाशित कर अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकर्षित कराया था। दीपावली पर्व बीतने के बाद नैनी पुलिस की कुंभकर्णीय नींद खुली और बीती देर रात जरिए मुखबिर की सूचना पर सीएचसी चाका मुख्यालय के समीप जुए के फड़ पर छापेमारी की कार्रवाई करते हुए पांच जुआरियों को गिरफ्तार कर लिए, लेकिन एक जुआरी अंधेरे का फायदा उठाते हुए फरार हो गया। पुलिस के मुताबिक फड़ व जामा तलाशी के दौरान जुआरियों के कब्जे से 8,750 रुपए नकदी व 52 ताश के पत्ते बरामद किए गए हैं। जबकि पकड़े गए जुआरियों में महेवा पश्चिम पट्टी निवासी चंद्र प्रकाश पुत्र छोटे लाल, आलोपी बाग निवासी हिमांशु सोनकर पुत्र स्वर्गीय विनोद कुमार सोनकर, आलोपी बाग, मटियारा निवासी कोमल सोनकर पुत्र लल्लू सोनकर, मड़ौका गांव निवासी एजाज खान पुत्र महबूब खान व श्याम निषाद पुत्र अशोक निषाद शामिल हैं। वहीं फरार आरोपी मड़ौका गांव निवासी रजनीश सोनकर पुत्र अज्ञात शामिल है।

विद्युत सब स्टेशन कोरांव के मीटर रीडरों ने किया प्रदर्शन

बकाया मानदेय का भुगतान व मानदेय वृद्धि को लेकर हुआ प्रदर्शन, स्टर्लिंग कंपनी के विरोध में जमकर की नारेबाजी

अखंड भारत संदेश

कोरांव विद्युत सब स्टेशन के मीटर रीडर प्रदर्शन करते

रत्योरा। विद्युत सब स्टेशन कोरांव के अंतर्गत कार्यरत मीटर रीडरों ने बकाए मानदेय के भुगतान व मानदेय वृद्धि को लेकर सोमवार को पावर हाउस वैदवार पर एक दिवसीय प्रदर्शन कर स्टर्लिंग कंपनी व एनशॉप्ट कंपनी के प्रति विरोध जताया। विरोध प्रदर्शन कर रहे मीटर रीडरों के मुताबिक एनशॉप्ट कंपनी के द्वारा हम लोगों को मीटर रीडिंग कार्य का आठ हजार रुपये प्रति माह जहां मानदेय दिया जा रहा था वहीं अब नई कंपनी स्टर्लिंग के द्वारा पच्चीस सौ रुपये प्रति महीने मानदेय दिया जा रहा है जो बहुत कम है। हम लोग उपभोक्ताओं के घर पहुंचकर मीटर रीडिंग कर बिल पहुंचाने का काम करते हैं। पेट्रोल का भी खर्च नहीं मिल पा रहा है। मीटर रीडरों ने कहा कि कंपनी के द्वारा हम लोगों को प्रिंटर प्रो भी नहीं दिया गया है। जिससे मीटर रीडिंग करने में असुविधाएं हो रही हैं। प्रदर्शन कर रहे मीटर रीडरों ने एनशॉप्ट कंपनी के द्वारा 4 महीने के बकाए मानदेय का शीघ्र भुगतान कराने एवं स्टर्लिंग कंपनी के द्वारा प्रति महीने पंद्रह हजार मानदेय दिए जाने की मांग की है। प्रदर्शन कर रहे मीटर रीडरो में अजय कुमार शर्मा, गिरधारी, लवकुश कुमार, अजय कुमार सिंह, अभिषेक कुमार, पवन कुमार, अजय कुमार, राम अनुज यादव, विनीत कुमार शुक्ला, धनंजय कुमार, संतोष चौधरी, राजेश कुमार पाल, सुनील कुमार सिंह, आत्मा सिंह सहित कुल 42 मीटर रीडर मौजूद रहे। मीटर रीडर ने 17 मीटर रीडरों के आईडी बंद होने की शिकायत करते हुए तत्काल उनकी आईडी चालू करने की मांग की है।

मेजारोड बाजार में आम जनता के लिए बना परिवहन विभाग का बस स्टॉप महज खानापूर्ति

अखंड भारत संदेश

स्टॉप पर नहीं रुकती है विभाग की बस

मेजा रोड। मेजारोड बाजार में आम जनता के लिए बना परिवहन विभाग का बस स्टॉप महज खानापूर्ति करता नजर आ रहा है। जबकि बाजार में दिन रात हजारों यात्रियों का आवागमन लगा रहता है। लेकिन गौर करने वाली बात यह है कि मेजारोड चौराहे पर परिवहन विभाग के द्वारा बने बस अड्डे पर रोडवेज बसों का ठहराव नही होता जिससे लोगों में आक्रोश बना हुआ। जबकि इसकी शिकायत व्यापार मंडल सहित न जाने कितने समाजसेवियों ने विभागीय अधिकारियों को किया है लेकिन विभागीय अधिकारियों के द्वारा मामले का संज्ञान नही लिया जाता है और उसे ठंडे बस्ते में डाल दिया जाता है। जिसके चलते रोडवेज बस के चालक अपनी मनमानी करने से कतई बाज नहीं आ रहे हैं। ऐसा ही एक मामला रविवार रात्रि 9 बजे के आसपास देखने को मिला। बस के इंतजार में खड़े दर्जनों लोग जब बस को हाथ देना चाहा तो चालक गाड़ी को रोककर आगे निकल गया?। घंटों से गाड़ी के इंतजार में खड़े लोगों ने आपा खो दिया और शोर-शराबा करने लगे इस दौरान रास्ते से गुजर रही विधायक नीलम करवरिया को जब मामले की जानकारी हुई तो उन्होंने बस संचालक को अपनी गाड़ी से ओवरटेक करके आगे रोक लिया और पूछताछ करते हुए फटकार लगाई तथा विभाग से जुड़े अधिकारियों को मामले से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि जन सुविधा के लिए बना बस अड्डा गाड़ियों के ठहराव के लिए बना है आप लोगों की लापरवाही के चलते सरकार बदनाम होती है।

कोरियर कम्पनी के कर्मचारी को घायल कर लूटे साढे.आठ लाख रुपये

दिनदहाडे.हुई इस लूट से पुलिस विभाग में हड़कंप

घटना स्थल का निरीक्षण करते पुलिस अधिकारी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगर कोतवाली क्षेत्र के विकास भवन के पास सशस्त्र लुटेरों ने बैंक में पैसा जमा करने जा रहे एक कोरियर कम्पनी के कर्मचारी को कट्टे की बट से घायल कर साढे.आठ लाख रुपये लूटकर फायरिंग करते हुए दिनदहाडे.फरार हो गये।

घटना के बारे में बताया जाता है कि शहर कोतवाली क्षेत्र के कटरा रोड पर पूरे सुकाल का पुरवा गांव निकट विकास भवन में दो मोटरसाइकिल पर सवार चार सशस्त्र बदमाशों ने कट्टे की बट से कोरियर कम्पनी के कर्मचारी हिमांशु दुबे को घायल कर दिया। जब वह गिर गया तो वह उसका बैग लेकर फरार हो गये जिसमें साढे.आठ लाख रुपये थे जो पंजाब नेशनल बैंक में जमा करने जा रहा था। लुटेरे फायरिंग करते हुए फरार हो गये। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया। थोड़ी ही देर में पुलिस के आला अफसर घटना स्थल पर पहुंचे और घटना की तह में जाने की कोशिश में जुट गये। बहरहाल दिनदहाडे. बैंक में पैसा जमा करने जा रहे प्राइवेट कोरियर कम्पनी के कर्मचारी को घायल कर साढे.आठ लाख रुपये लूटकर लुटेरे सुरक्षित भाग निकले। घायल कर्मचारी हिमांशु को उपचार के लिये अस्पताल लाया गया है और पुलिस घटना स्थल का निरीक्षण करने के बाद अपराधियों तक पहुंचने का भरसक प्रयास कर रही है। बहरहाल समाचार भेजे जाने तक लुटेरों का पता नहीं चल सका।

अधेड़ पर कट्टा लगाकर नगदी व पिस्टल लूट ले गये बदमाश

अखंड भारत संदेश

बाघराय, प्रतापगढ़। अधिवक्ता के घर से मुलाकात कर अपने घर जा रहे अधेड़ को अपाचे सवार बदमाशों ने रोक लिया और कनपटी पर तमंचा लगा कर जेब में हाथ डालकर पैसे निकाले और लाइसेंसी पिस्टल भी लूट लिया और बड़े आराम से चलते बने। सूचना पर कई थानों की फोर्स और सी ओ सदर अपर पुलिस अधीक्षक मौके का मुआयना कर अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी का निर्देश दिया। जेठवारा थाना क्षेत्र के पूरे विक्रम शाह का पुरवा सराय इंद्रावत गांव निवासी राम दुलारे यादव (58) रविवार शाम को भाव निवासी अधिवक्ता कमलाकांत से मिलने उनके घर गए थे। मुलाकात कर वापस आते समय लगभग सात बजे मंडल भासो डेरवा मार्ग पर तारापुर कंधई गांव के समीप सुनसान रास्ते पर अपाचे सवार नकाबपोश दो युवकों ने उन्हें रोक लिया रुकते ही कनपटी पर तमंचा जेब में रखे 1700 रुपए निकाल लिए। निकालते समय बगल लगी पिस्टल भी छीनकर फरार हो गए।

डुहिया गांव में श्रमदान करते डा0 नीरज तिवारी

डुहिया गांव में श्रमदान कर बनाई गई पुलिया

यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा0 नीरज तिवारी ने की पहल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। विधानसभा सदर क्षेत्र के मंगरौरा विकासखंड के औरंगाबाद न्याय पंचायत के पूरब पट्टी ग्रामसभा के डुहिया गांव में लगभग 30-35 वर्ष पूर्व पीडब्ल्यूडी द्वारा एक पक्के पुलिया के टूटने से दर्जनों गांव का आवागमन प्रभावित हो गया था। इस परेशानी को दूर करने के लिये सोमवार की सुबह यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा0 नीरज तिवारी ने जेसीबी मंगवा कर ट्रैक्टर से लगभग 100 ट्रैक्टर से ज्यादा मिटटी डलवा कर अपने साथियों एवं ग्रामसभा वासियों के साथ मिलकर श्रमदान कर पुलिया बनाई गई जिससे आवागमन सुचारू रूप से शुरू हो सका।

बता दें कि पुलिया टूटने से पूरब पट्टी, सराय शंकर, मलाक चिगुड़ा, हथसारा, राजापुर वहीं दूसरी तरफ औरंगाबाद, नरहरपुर, लच्छीपुर, शंकरपुर, सहित कई ग्रामसभा प्रभावित है। ग्रामसभा वासियों ने जनप्रतिनिधियों सहित पी डब्लू डी के आला अधिकारियों से मिलकर शिकायत दर्ज कराई लेकिन चार माह बीत जाने के बाद भी कोई कार्यवाही नहीं हुई। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि यदि पक्के पुलिया का निर्माण एवं बाढ़ पीड़ित किसान भाइयों को मुआवजा जल्द से जल्द न दिया गया तो हम सब मिलकर धरना प्रदर्शन आंदोलन करने को बाध्य होंगे जिसकी सारी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी। श्रमदान में श्रीपाल, रामसमुझ, धीरेंद्र पाल, जियालाल सरोज, रामलाल सरोज, बजरंगी गौतम, मुरली वर्मा, जयप्रकाश वर्मा, अनवर हुसैन, देवराज पाल, अशोक वर्मा, विकास सिंह, सूबेदार यादव, रामबाबू आदि लोग मौजूद रहे।

पुलिस को ज्ञापन देते विहिप के पदाधिकारी

नवाबगंज थाना क्षेत्र में गौमांस के अवशेष मिलने से मचा हड़कम्प

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के बेडौरा अस्थान में बीते दिनों गाय के कई टुकड़ों में कटे अवशेष मिलने से विहिप व बीजेपी कार्यकताओं में हड़कम्प मच गया। घटना की जानकारी मिलते ही थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने मौके पर पहुँचकर गाय के अवशेष टुकड़ों को कब्जे में लेकर लिखा पढ़ी कर जांच में जुट गई तथा आरोपियों की तलाश में लगी हुई है। सोमवार को पुलिस कार्रवाई से असंतुष्ट बीजेपी मण्डल कुसुवापुर के महामंत्री गौरव शुक्ल व मिश्रीलाल विश्वकर्मा, भोला यादव,समरजीत सरोज, उदय नारायण पाल, सर्वेश कुमार पासी, दीपक साहू आदि लोगो ने थाना प्रभारी को एक हस्ताक्षर युक्त लिखित ज्ञापन दिया जिसमें गाय के अवशेष मिले टुकड़ो की मेडिकल कराने व दोषी आरोपियों के खिलाफ कड़ी करने की मांग की है। इस बाबत पूछे जाने पर थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने बताया कि गाय के मिले अवशेष टुकड़ो को विधि प्रयोगशाला मथुरा को भेजा गया है। घटना स्थल पर अवशेष के बारे में एस आई सुरेंद्र सिंह को जांच के लिए दिया गया है जांच पूरी होने पर व प्रयोगशाला से रिपोर्ट आने के बाद निष्पक्ष कार्रवाई की जाएगी।

43 अपराधियों की खुली हिस्ट्रीशीट

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में जनपद में कानून-व्यवस्था बनाए रखने एवं अपराध/अपराधियों पर प्रभावी अंकुश लगाने व साथ ही साथ अपराधियों की निरंतर निगरानी किये जाने के दृष्टिगत विभिन्न थानों से कुल 43 अपराधियों की हिस्ट्रीशीट खोली गयी है, जिन पर संबंधित थानों द्वारा निरंतर निगरानी रखी जा रही है। हिस्ट्रीशीट खोले गये अपराधियों का थानावार है जिसमें थाना नवाबगंज से 04, थाना कोहड़ौर से 01, थाना रानीगंज से 01, थाना महेशगंज से 03, थाना हथिगवां से 02, थाना अन्तू से 03, थाना जेठवारा से 02, थाना बाघराय से 04, थाना आसपुर देवसरा. से 02, थाना सांगीपुर से 02, थाना कुण्डा से 05, थाना पट्टी से 01, थाना फतनपुर से 01, थाना मानिकपुर से 04, थाना कंधई से 06 व थाना मांधाता से 02 हैं।

नगर पालिका ने बेल्हा देवी घाट को कराया साफ

छठ पूजा की तैयारी शुरू

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। छठ पूजा के लिये नगर पालिका ने आज सोमवार को बेल्हा देवी की साफ-सफाई कराई। सोमवार को सुबह से ही नगर पालिका के 50 कर्मचारी बेल्हा देवी मंदिर के किनारे बहने वाली सई नदी के घाटों पर सफाई शुरू कर दी थी।

कुछ कर्मचारी नाव में बैठकर नदी में पड़ी पालिथिन व गंदगी को निकालते देखे गये। सोमवार को अपरान्ह तक सफाई का कार्य चलता रहा। यह जानकारी देते हुए नगर पालिका के सफाई निरीक्षक संतोष कुमार सिंह ने बताया कि नगर पालिकाध्यक्षा प्रेमलता सिंह व अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह के निर्देशन में छठ पूजा के लिये नगर पालिका कर्मचारी सोमवार से ही जुट गये हैं। बता दें कि 10 नवम्बर को छठ पूजा के लिये बड़ी संख्या में महिलाएं बेल्हा देवी घाट पर एकत्रित होकर पूजा अर्चन करती हैं।

आज सोमवार से ही नहाय खाय के साथ छठ पूजा शुरू हो गई है। मंगलवार को खरना और बुधवार को भगवान भास्कर को अर्घ्य दिया जाएगा। इसकी तैयारी आज से ही शुरू हो गई है। नगर पालिका के इस सफाई अभियान में सफाई निरीक्षक एसके सिंह के अलावा सफाई प्रभारी प्रशांत सिंह और सफाई नायक शैलेन्द्र सिंह भी दिन भर जुटे रहे।

बेल्हा देवी घाट पर साफ-सफाई करते नगर पालिका कर्मी

भाजपा के सदस्यता अभियान कैंप का हुआ शुभारंभ

बसपा छोड़ ओम प्रकाश ने थामा भाजपा का दामन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता अभियान कैंप का शुभारंभ ताला प्राइमरी स्कूल और कोठा नेवरिया में किया गया। इस दौरान ताला के संयोजक रवि गुप्ता जिला सदस्यता अभियान संजोजक और किठावर मंडल में प्रतिभा सिंह क्षेत्रीय कोषाध्यक्ष के आयोजकत्व में कैंप का आयोजन किया गया। उक्त दोनों कैंप में बतौर मुख्य अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष हरिओम मिश्र उपस्थित रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि समाज के हर वर्ग को पार्टी से जोड़ना है। कार्यक्रम के संचालन जिला सह मीडिया प्रभारी मुन्ना पाल ने किया। इस मौके पर शक्ति केंद्र प्रमुख ओम प्रकाश सोनी,रमाकांत मिश्रा, इंद्रजीत सिंह, पवन गुप्ता, संदीप विश्वकर्मा, रघुवीर सिंह चौहान, अमन पाल, विपिन सिंह सोमवंशी, अभिषेक पाल, भारत सिंह,आदि उपस्थित रहे। वही दूसरी ओर भाजपा द्वारा चलाया जा रहा सदस्यता अभियान के दौरान बसपा नेता ओमप्रकाश अग्रहरि ने भारतीय जनता पार्टी की नीतियों एवं विचार धारा से प्रभावित होकर बसपा छोड़कर भाजपा की सदस्यता ग्रहण किया। भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों की मौजूदगी में भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र ने उन्हें भाजपा की सदस्यता ग्रहण करायी।

भाजपा की सदस्यता लेते ओम प्रकाश

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट का मुकदमा दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट तथा गालीगलौज व धमकी का मुकदमा दर्ज किया है। कोतवाली के मुड़ियन का पुरवा बेलहा निवासी देशराज पुत्र कड़ेदीन ने दी गई तहरीर में कहा है कि बीती सात नवम्बर की पांच बजे शाम गांव के बाबूलाल, कमलेश तथा मोनी व बाबूलाल की पत्नी ने रंजिशन एक राय होकर पीड़ित तथा उसके परिवार को गाली देते हुए लाठी डंडे से मारा पीटा। शोर मचाने पर आरोपियों ने जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी बाबूलाल समेत चार के खिलाफ रविवार की रात केस दर्ज किया है।

जिला अस्पताल में बच्चों की सभी ओपीडी महिला अस्पताल में शुरू

पुरूष अस्पताल के तीनों बाल रोग विशषज्ञ महिला में बैठेंगे

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बीमार बच्चों को दिखाने जिला अस्पताल आ रहे परिजनो को अब महिला अस्पताल जाना पड़ेगा। क्योंकि यहां के तीनों बाल रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अनिल गुप्ता और योगेश और शैलेंद्र की तैनाती महिला में कर दी गई है। अब से ये तीनों वहीं पर ओपीडी में बैठकर मरीज बच्चों को देखेंगे और भर्ती भी करेंगे। जिला अस्पताल में मेडिसिन और सर्जरी के लिए जगह कम पड़ रही थी। मरीजों को बेहतर सुविधाएं देने के लिये मेडिकल कालेज प्रशासन का यह प्रयास सराहनीय है। अब सब चीजें व्यवस्थित तरीके से हो जायेंगी। प्राचार्य का ऐसा ही मानना है। अभी तक पुरूष जिला अस्पताल में ही बच्चों को देखना उन्हें भर्ती किया जाता रहा है। मेडिकल एंड चाइल्ड हेल्थ यूनिट के बाद महिला अस्पताल में बाल रोग विशेषज्ञ की जरूरत पड़ना शुरू हो गई थी। दिवाली पर्व के बाद से जिला अस्पताल के तीनों बाल रोग विशेषज्ञ को महिला अस्पताल में भेज दिया गया है। मेडिकल कालेज के प्राचार्य डॉक्टर आर्य देश दीपक ने बताया की अब तीनों बाल रोग चिकित्सक महिला अस्पताल में ओपीडी करेंगे। मरीज भी वहीं भर्ती करेंगे। बता दें कि सोमवार, गुरुवार डॉक्टर शैलेंद्र, मंगलवार शुक्रवार डॉक्टर अनिल गुप्ता, बुधवार और शनिवार को डॉक्टर योगेश का ओपीडी में बैठने का दिन निर्धारित है। बता दें कि जब तक व्यवस्था पूरी तरह से पटरी पर नहीं आती है। भले ही डॉक्टर महिला में ओपीडी करेंगे। लेकिन महिला के अलावा अगर कोई मरीज पुरूष अस्पताल का पर्चा लेकर जाता है तो डॉक्टर उसे बच्चे को भी देखेंगे।

मरीजों की सुविधा को और बेहतर बनाने का मेडिकल कालेज का सराहनीय प्रयास

जीडीपी व विकास दर में गिरावट चिंताजनकः प्रमोद तिवारी

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य एवं यूपी आउट रीच एण्ड को ऑर्डिनेशन कमेटी के प्रभारी प्रमोद तिवारी ने नोटबंदी के फैसले को देश की अर्थव्यवस्था की तबाही का गलत फैसला करार दिया है। आठ नवम्बर को मोदी सरकार द्वारा नोटबंदी के लिए गए तत्कालीन फैसले पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री तिवारी ने कहा है कि नोटबंदी के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अविवेकपूर्ण फैसले से जीडीपी माइनस में पहुंच गई तथा विकास दर में भी भारी गिरावट आ गई है। श्री तिवारी ने कहा कि मोदी सरकार को अर्थशास्त्र का बहुत ज्ञान न होने के कारण भी अर्थशास्त्री मानकर नोटबंदी का लिया गया। फैसला देश के सैंतालीस वर्षों के इतिहास में सबसे अधिक बेरोजगारी की पीड़ा दे गयी है। वहीं प्रमोद तिवारी ने कहा है कि इस फैसले से लघु तथा मध्यम एवं बड़े उद्योग बन्दी के कगार पर पहुंच गये। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के नोटबंदी के चलते मात्र दो घरानों तथा मुख्य रूप से देश के चौदह बड़े औद्योगिक घरानों में देश की छियासी प्रतिशत दौलत सिमटकर रह गयी। मोदी सरकार पूरी तरह किसान विरोधी हो चुकी है। उन्होंने कहा कि सरकार जब तक तीनों काले कृषि कानूनों को वापस नही नहीं लेती कांग्रेस किसानों के हक की लड़ाई में अपना संघर्ष और तेजी से जारी रखेगी।

दीवार काटकर चोरों ने उड़ाई नकदी व शराब

बाघराय, प्रतापगढ़। जेठवारा थाना अंतर्गत सरायइंद्रावत गांव निवासी जगदीश बहादुर सिंह पुत्र शिव बहादुर सिंह मंडलभासौ बाजार में अंग्रेजी शराब की दुकान का ठेका अपनी माता प्रभावती देवी के नाम दुकान आवंटित करा कर दुकान खोली है। बीते रविवार की देर रात नौ बजे के करीब जगदीश बहादुर सिंह ने अंग्रेजी शराब का ठेका बंद करके अपने घर चले गए। बीती रात चोरों ने कमरे के उत्तर तरफ की दीवार काटकर ठेके के अंदर घुस कर लगभग 80 हजार की अंग्रेजी शराब एवं कैश बॉक्स में रखें लगभग 42 हजार नगद उठा ले गये। जगदीश बहादुर सिंह ने इस मामले की लिखित तहरीर थाना बाघराय में दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

राजेश अध्यक्ष व रोहित बने उपाध्यक्ष, विद्युत मण्डल की बैठक सम्पन्न

दशहरा मेला पर कलात्मक झांकियों से सजेगी पट्टी नगरी

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। पट्टी का ऐतिहासिक दशहरा मेला 14, 15 और 16 दिसंबर को है दशहरे मेले में जहां एक तरफ दर्शनार्थी मेले में बड़े धूमधाम के साथ हिस्सा लेते हैं और भरत मिलाप का आनंद लेते हैं वही जगमगाती कलात्मक झांकियो का आकर्षण भी लोगों का मन मोह लेती है।

पट्टी नगर स्थित रायपुर रोड पर एकता कलात्मक झांकी और विद्युत मंडल इस बार सबसे अलहदा और आकर्षक होने जा रहा है, जिसके लिए कमेटी का गठन भी कर लिया गया सोमवार को एकता कलात्मक झांकी एवं विद्युत मंडल का अध्यक्ष सर्वसम्मति से राजेश कुमार उमरवैश्य उर्फ पिंटू को बनाया गया तो उपाध्यक्ष ओजस्वी पत्रकार रोहित जायसवाल को बनाया गया है।

कार्यक्रम के व्यवस्थापन जावेद अहमद उर्फ शेरू के कंधों पर रहेगी कोषाध्यक्ष की जिम्मेदारी दिनेश कुमार वर्मा को दी गई है। संरक्षक के रूप में निर्मल श्रीवास्तव (सुधीर) वरिष्ठ संरक्षक के रूप में राम गुलाब सिंह रहेंगे तो कार्यक्रम के प्रबंधक सुरेंद्र पांडे को बनाया गया है। मंत्री कांता पटेल तथा महामंत्री इरफान अहमद को बनाया गया, वहीं सहप्रबंधक के रूप में लखनलाल उमरवैश्य और मीडिया प्रभारी के रूप में मनोज यादव अपनी जिम्मेदारी निभाएंगे।

दलित की पिटाई व तोड़फोड़ एवं आगजनी का आरोप, दी तहरीर

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर थाना के पूरे मुरली निवासी उदयचन्द्र की पत्नी रन्नों ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि सोमवार को सुबह नौ बजे वह अपने दरवाजे पर बैठी थी। इस बीच गांव के शिवम तथा महेश व मनोज तिवारी पुत्र सोहनलाल निवासी राजातारा एक राय होकर आ गये। आरोपियों ने उसे गाली देते हुए मारने पीटने लगे। आरोपियों ने हमले में उदयचन्द्र सरोज के सिर पर जानलेवा हमला कर दिया। आरोपियों ने जातिसूचक शब्दों से गालियां दी। शोर सुनकर अतुल, फूलचन्द्र तथा रमा देवी बचाव को दौड़े तो इन्हें भी आरोपियों ने मारापीटा। आरोप है कि हमले के बीच आरोपियों ने घर के सामान में तोड़फोड़ करते हुए पीड़िता के छप्पर में आग भी लगा दी। पीड़िता ने घटना की सूचना सांगीपुर पुलिस को दी है। पुलिस का कहना है कि जांच कर आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

खबर संक्षेप

मतदान केंद्रों का एसडीएम ने किया भ्रमण

कौशाम्बी। उप जिलाधिकारी मंझनपुर प्रखर उत्तम ने मतदान केंद्रों का भ्रमण किया है और मतदान केंद्रों की व्यवस्था सुधारने मतदाता सूची को दुरुस्त करने का निर्देश उन्होंने अधीनस्थों को दिया है एसडीएम द्वारा मंझनपुर तहसील के विभिन्न ग्राम पंचायत नगर पालिका परिषद और नगर पंचायत स्थित मतदान केंद्रों का दौरा कर स्थित देखी गयी मतदाता विशेष पुनरीक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न बूथों का उन्होंने भ्रमण किया और आवश्यक दिशा निर्देश दिया

डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन

कौशाम्बी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वाधान में आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत 50 ग्राम सभा एवं 05 शहरी क्षेत्रों में डोर टू डोर कैम्पेन व विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन जनपद किया गया है। सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से विधिक सेवा सप्ताह के अवसर पर वैकल्पिक विवाद समाधान प्रणाली की महत्ता विषय पर विधिक साक्षरता एवं सहायता हेतु जागरूक किया गया। शिविर में सभी ब्लॉकों के सी0डी0पी0ओ0, आंगनबाड़ी कार्यकत्री एवं एन0जी0ओ0 व समाज सेवी उपस्थित रहे।

सम्पूर्ण समाधान दिवस : तहसील सिराथू में डीएम एसपी ने सुनी जनसमस्यायें

फरियादियों की समस्याओं को सुनते जिलाधिकारी व पुलिस अधीक्षक।

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार एवं पुलिस अधीक्षक राधेश्याम विश्वकर्मा ने सम्पूर्ण समाधान दिवस के अवसर पर तहसील सिराथू में जनसमस्यायें सुनी एवं सम्बन्धित अधिकारियों को समयान्तर्गत एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने भूमि विवाद/राजस्व से सम्बन्धित मामलों में राजस्व एवं पुलिस की संयुक्त टीम को मौके पर भेजकर तत्काल निस्तारित करने के निर्देश दिये। उन्होनें सभी अधिकारियों को आई0जी0आर0एस0 के तहत प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के साथ ही टाइप आख्या अपलोड करने के निर्देश दिये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 104 शिकायतें प्राप्त हुई जिसमें से 09 शिकायतों का निस्तारण मौके पर ही कर दिया गया समाधान दिवस में प्राप्त शिकायतें-भूमि विवाद, अवैध कब्जा, विद्युत, कृषि एवं पैमाइश आदि से संबंधित थी इस अवसर पर उप जिलाधिकारी विनय कुमार गुप्ता सहित जनपद स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित थे।

डम्फर की टक्कर से बाइक सवार महिला की मौत

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। कड़ा धाम कोतवाली के लेहदरी गांव के पास तेज रफ्तार अनियंत्रित डम्फर ने बाइक सवार महिला को कुचल दिया है जिससे महिला की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गयी है स्थानीय ग्रामीणों ने डम्फर को पकड़कर स्थानीय पुलिस को सूचना दी है मौके पर पहुंची पुलिस विधिक कार्रवाई में जुट गई है। जानकारी के अनुसार समीउद्दीन 44 वर्ष पुत्र रजीउद्दीन निवासी गोतनी मानिकपुर प्रतापगढ़ चांदनी बेगम 38 वर्ष साहा उम्र 2 वर्ष सानिया बेगम 18 वर्ष के साथ ससुराल मीरापुर तकिया जा रहे थे पीछे से अनियंत्रित डंपर चालक अमर पुत्र चंदूलाल निवासी लालापुर सलोन रायबरेली डंपर लेकर गिट्टी लादने भरतकूप जा रहा था अनियंत्रित होकर बाइक सवारों को पीछे से टक्कर मार दिया जिससे बाइक में पीछे बैठी महिला सानिया बेगम की मौके पर मौत हो गई है क्षेत्रीय पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज कर विधिक कार्रवाई में जुट गई है।

ओवरलोड वाहनों पर कार्यवाही

कौशाम्बी। यातायात माह नवंबर के तहत पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में जनपद के पश्चिम शरीरा से महेवाघाट एवं महेवाघाट से भरवारी मार्ग तथा बेनीराम कटरा, पिपरी एवं चायल मार्गों पर डग्गामार वाहनों एवं ओवरलोडिंग सवारी भरने वाले बसों, टेक्सी, टेम्पो के चालकों तथा ढाला खोलकर चलने वाले वाहन से बाहर तक समान निकाल कर तथा वाहन की निर्धारित बॉडी के ऊपर तक माल लादने वाले व्यावसायिक माल वाहक वाहनों के विरुद्ध सघन अभियान चलाकर वाहनों की फिटनेस, प्रदूषण प्रमाण पत्र, वाहन में बैठी हुई सवारियों की संख्या, चालक का डीएल तथा ओवरसाइज्ड लोडिंग सहित मोटर वाहन अधिनियम के विभिन्न नियमों के उल्लंघन पर 112 वाहन चालकों के विरुद्ध ई चालान की कार्यवाही की गई तथा 5 वाहन चालकों से 2500 रुपए का जुमार्ना वसूला गया और वाहन चालकों को यातायात के नियमों से जागरूक कराते हुए अवगत कराया गया की ओवरलोडिंग सवारी बैठाने तथा ओवरसाइज माल ढोने तथा वाहनों की फिटनेस ठीक ना होने की दशा में दुर्घटना की संभावना कई गुना बढ़ जाती है। ऐसा करने से बचें और अपना आम जनमानस का जीवन संकट में न डालें।

न्यूज झरोखा

संदिग्ध परिस्थितियों में स्कूली छात्रा की मौत

कोखराज कौशाम्बी। कोखराज थाना क्षेत्र के मारूफ पुर गांव में एक स्कूली छात्रा की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है सूचना पाकर मौके पर पहुंची पुलिस ने बालिका की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनाक्रम में बताया जाता है कि कोखराज थाना क्षेत्र के मारूफपुर गांव निवासी अंतिमा उम्र 17 वर्ष लगभग पुत्री हरिश्चंद्र तिवारी भरवारी कस्बे के एक बालिका इंटर कॉलेज की हाई स्कूल की छात्रा थी परिजनों के मुताबिक सोमवार की दोपहर को पूरा परिवार घर छोड़कर खेत की ओर गए थे सोमवार की दोपहर बालिका की लाश घर के भीतर फंदे से लटक रही थी खेत से वापस आने पर परिजनों ने बालिका की लाश देखी परिजनों ने पुलिस के पहुंचने के पूर्व लाश उतार लिया उसके बाद परिजनों ने मामले की सूचना स्थानीय पुलिस को दिया मौके पर पहुंची पुलिस ने स्कूली छात्रा की लाश को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है पुलिस का कहना है कि बालिका की मौत कैसे हुई है यह पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद पता चलेगा।

भूमि विकास बैंक चायल की शाखा कौशांबी लाने की मांग

कौशांबी। भारतीय किसान मजदूर संयुक्त यूनियन आराजनैतिक के जिला अध्यक्ष नरेंद्र कुमार पांडेय के नेतृत्व में दर्जनों लोग जिलाधिकारी कार्यालय पहुंचे और ज्ञापन देकर जिलाधिकारी को बताया कि कौशांबी जनपद का सृजन होने के 24 वर्ष बाद भी भूमि विकास बैंक तहसील चायल की शाखा चायल में संचालित ना होकर प्रयागराज जिले से संचालित हो रही है जिससे कौशांबी जिले के चायल क्षेत्र के किसानों को बैंक से संबंधित कार्यों के लिए इलाहाबाद जाना पड़ता है जिससे किसानों को आर्थिक मानसिक शारीरिक कष्ट उठाना पड़ता है नरेंद्र कुमार पांडेय ने कहा कि चायल कस्बा स्थित यूनानी अस्पताल अत्यंत जर्जर एवं खपरैल कमरे में चल रहा है जिससे किसी भी समय भवन धराशाई होने से बड़े हादसे हो सकते हैं इस भवन की मरम्मत कराए जाने की मांग उन्होंने डीएम से की है नगर पंचायत चरवा में 15 माह से अधूरा गौशाला पड़ा है निर्माण कार्य बाधित है गौशाला निर्माण का दोबारा टेंडर किया गया लेकिन उसके बाद भी गौशाला के निर्माण का कार्य नहीं शुरू हो सका जिससे आवारा पशु किसानों के खेत की फसल चर रहे हैं और किसानों की फसलों का नुकसान हो रहा है। इस दौरान रवि शंकर प्रजापति प्रेमचंद्र शिवराज आकाश कुमार दिलीप कुमार सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

जनता की सेवा करना ही सर्वोच्च प्राथमिकता : योगेश

कौशाम्बी। जिला पंचायत सदस्य पंचायत प्रकोष्ठ भाजपा मीनू योगेश साहू ने अपने कार्यालय में फरियादियों की समस्याओं को सुना और उसके निस्तारण के लिए उन्होंने अधिकारियों को पत्र भेजकर निस्तारण के लिए आग्रह किया प्रतिदिन की भांति आज भी अपने तेराह मील काजीपुर विष्णु भगवान पब्लिक स्कूल कार्यालय में आम जनता से मुलाकात की उनकी समस्याओं को सुना जन सुनवाई के दौरान 40 फरियादियों ने शिकायतें दर्ज कराते हुए मदद मांगी ज्यादातर शिकायतें जमीनी विवाद, पारिवारिक विवाद ,प्रधानमंत्री आवास से संबंधित रही हैं 15 शिकायतों को जिला पंचायत सदस्य मीनू योगेश साहू ने सुनकर मौके पर ही निस्तारण किया शेष बची शिकायतों को संबंधित विभागों के अधिकारियों को पत्र के माध्यम से भेज कर अभिलंब निष्पक्ष निस्तारण करने का आग्रह किया एवं शिकायतों से सम्बन्धित अधिकारियों से फोन के माध्यम से उन्होंने आग्रह किया कि मेरे द्वारा भेजे गए सभी पत्रो को तत्काल संज्ञान में लेकर उचित कार्यवाही सुनिश्चित करें।

अलग अलग थाना से चार वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जिले में अपराध एंव अपराधियों के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में अलग अलग थानों द्वारा चार वांछित अभियुक्तो को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात न्यायालय भेज दिया है जानकारी के मुताबिक थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त श्याम बाबू पुत्र भगवत निवासी ग्राम नासिरपुर फरीदगंज थाना कड़ाधाम को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है इसी प्रकार थाना पिपरी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त धारा गुप्ता पत्नी शादी लाल निवासी असरावलकला थाना पिपरी के कब्जे से चोरी का एक कंगन पीली धातु व दीपू कुमार गुप्ता पुत्र सुरेश कुमार गुप्ता निवासी मकदूमपुर थाना पिपरी को गिरफ्तार कर कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना पश्चिम शरीरा पुलिस बल द्वारा वांछित व वारण्टी अभियुक्त प्रेम चन्द्र उर्फ रवी पुत्र केवट निवासी पभोसा थाना पश्चिम शरीरा को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

चायल वेलफेयर सोसाइटी का सिलाई कढ़ाई ट्रेनिग सेंटर का समापन

इमामगंज कौशाम्बी। मदरसा दारुल उलूम गौसिया हबीबिया मूरतगंज में सोमवार को चायल वेलफेयर सोसाइटी यूथ विंग के तरफ से सिलाई कढ़ाई ट्रेनिंग सेंटर प्रोग्राम का समापन हुआ। जिसमें सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र दिया गया, बताते चलें कि मदरसा दारुल उलूम गौसिया हबीबिया मूरतगंज में पिछले 6 महीनों से सिलाई कढ़ाई सेंटर शुरू था जिसका समापन सोमवार को किया गया इस अवसर पर चायल वेलफेयर सोसाइटी के पदाधिकारी मौजूद रहे कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए चायल वेलफेयर के पेट्रोन मेंबर असद जावेद साहब ने कुरान की तिलावत की और उसके बाद जनरल सेक्रेटरी जावेद मोहम्मद ने सिलाई सेंटर की लड़कियों को संबोधित करते हुए उन्हें आगे भी ऐसे मेहनत करने और कामयाबी की तरफ अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित किया इसके बाद चायल वेलफेयर सोसाइटी के पेट्रोन मेंबर शकील ने बच्चों को आगे भी इल्म हासिल करने और हुनर से अपना मुस्तकबिल बनाने के लिए दुआ दी सभी बच्चियों को प्रमाण पत्र के साथ साथ चायल वेलफेयर सोसाइटी की तरफ से गिफ्ट भी दिया गया और चायल वेलफेयर सोसाइटी की जानिब से यह आश्वासन भी दिया गया कि भविष्य में अगर किसी तरह का कोई योगदान सोसाइटी की तरफ से आप लोगों को चाहिए तो बिल्कुल किया जाएगा इस अवसर पर जावेद मोहम्मद के साथ-साथ असद जावेद शकील अहमद चायल वेलफेयर सोसाइटी के मेंबर नसर हाशमी, और यूथ विंग से माज शोएब मोहम्मद अफसर, मेराज मंसूर व मदरसे के मैनेजर हाफिज मोहम्मद शरीफ साहब, प्रधानाचार्य वकील अहमद आदि लोग मौजूद रहे।अंत में दोनों संचालिका राबिया बेगम व साबिया बेगम को चायल वेलफेयर सोसाइटी की तरफ से प्रोत्साहन स्वरूप गिफ्ट दिया गया। इस अवसर पर चायल वेलफेयर सोसाइटी यूथ विंग की तरफ से सोसाइटी को स्मृति चिन्ह भेट किया गया।

विधायक के नेतृत्व में नाविकों ने डीएम को सौंपा ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

नाविकों ने कहा कि बालू माफियाओं के सूर्यास्त होने के बाद बड़ी-बड़ी यंत्र पोकलैंड जेसीबी भी नहीं चलने दिया जाए

विधायक के नेतृत्व में नाविकों ने जिलाधिकारी को सौंपा ज्ञापन

कौशाम्बी। विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता के नेतृत्व में नाविक मजदूर निषाद समाज के लोग जिलाधिकारी कौशांबी सुजीत कुमार से मिलकर ज्ञापन सौंपा निषाद समाज के सभी नाविकों ने मांग किया है कि अगर एनजीटी के तहत हमारी नाव नहीं चल सकती तो बालू माफियाओं के सूर्यास्त होने के बाद बड़ी-बड़ी यंत्र पोकलैंड जेसीबी भी नहीं चलने दिया जाए नाविकों ने मांग करते हुए कहा कि एनजीटी के तहत नाविक अपने नाव से बालू एक जगह से दूसरे जगह तक पहुंचा सकता है सभी एकत्र निषाद समाज ने कहा कि अगर किसी भी तरह का यंत्र बालू माफियाओं ने चलाया तो उसके लिए हम आंदोलन करने के लिए तैयार है साथ ही विधायक संजय कुमार गुप्ता ने नाविकों का पक्ष रखते हुए कहा कि हम सरकार से आपका पक्ष रखते हुए मांग करेंगे कि नाविकों की भी रोजी रोजगार चलना चाहिए जिससे वह भुखमरी की कगार पर ना पहुचे। इस संबंध में जिलाधकारी ने नियमों के सापेक्ष सहयोग करने का भरोसा दिलाया इस मौके पर मुख्य रूप से नाविक संघ के उत्तर प्रदेश अध्यक्ष ऋषि कुमार निषाद, निषाद कुमार बजरंगी, राजेंद्र निषाद, लालचंद निषाद, शिवदयाल निषाद सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

चाचा भतीजे के हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग

अखंड भारत संदेश

कोखराज थाना क्षेत्र के बिसारा गांव में 14 अक्टूबर को चाचा भतीजे की बड़ी बेरहमी से किया गया था कत्ल

हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर कलेक्ट्रेट में प्रदर्शन करते परिजन

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के बिसारा गांव में 14 अक्टूबर को देशराज प्रजापति और उसके भतीजे राजकुमार की बेरहमी से हत्या कर दी गई थी दोनों हत्याकांड का खुलासा 25 दिन बीत जाने के बाद भी कोखराज पुलिस नहीं कर सकी है बताया जाता है कि चाचा की हत्या का चश्मदीद गवाह भतीजा था जिससे भतीजे की भी हत्यारों ने हत्या कर दी है दोहरे हत्याकांड के खुलासे में 25 दिन बाद भी कोखराज पुलिस किसी नतीजे तक नहीं पहुंच सकी है दोहरे हत्याकांड के आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर मृतक देशराज प्रजापति की पत्नी पूनम दर्जनों लोगों के साथ कलेक्ट्रेट पहुंची और डायट मैदान में एक दिन भूख हड़ताल पर बैठ कर शासन प्रशासन का ध्यान आकर्षित करते हुए हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग की है मृतक की पत्नी ने कहा कि कातिलों को पकड़ा जाए और उन्हें सरकार से आर्थिक मदद दिलाई जाए उनके पास दो जून रोटी खाने की व्यवस्था नहीं है इस दौरान मृतक की बेटी बंदना देवी बनवारी लाल चंद्रपाल प्रजापति कमलेश कुमार सत्यनारायण राजकरण सिंह श्यामलाल शिवराज भगवती प्रसाद सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

हत्याओं की घटना को ठंडे बस्ते में डालने की अभ्यस्त है कोखराज पुलिस

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र में हत्याओं के घटनाओं के खुलासे में कोखराज पुलिस फिसड्डी साबित हो रही है बीते वर्षों से कई हत्या की घटनाओं के खुलासे में विफल हो चुकी पुलिस ने हत्याकांड की फाइल को ठंडे बस्ते में डाल दिया है चर्चा तो यहां तक आती है कि हत्यारों से धना दोहन करने के बाद पुलिस ने हत्या की घटनाओं को ठंडे बस्ते में डाल कर हत्यारो को लाभ दिया है हत्या की कई घटनाओं का खुलासा करने में पहले से कोखराज पुलिस हाफ रही है और इस स्थिति में बिसारा गांव में चाचा भतीजे की हत्या कांड का खुलासा पुलिस कैसे कर पाएगी कोखराज थाना क्षेत्र में हत्या की घटनाओं के खुलासे में विफल कई थानेदार बदले जा चुके हैं लेकिन तमाम हत्या की घटनाओं का खुलासा फिर भी नहीं हुआ है बालक मऊ गांव में चिकित्सक हत्याकांड ककोड़ा कल्याणपुर में प्रेमी युगल हत्याकांड सिंघिया में बालिका की रेप के बाद पेट्रोल डालकर जिंदा जला दिए जाने की घटना रोही रेलवे लाइन पर प्रेमी युगल की हत्या कर लाश फेके जाने का मामला सहित तमाम हत्याकांड की घटनाओं का खुलासा कई वर्ष बाद भी नहीं हो सका है इसी तरह इलाके में कई अन्य घटनाएं हत्या के खुलासे की इंतजार में है आखिर हत्याकांड के खुलासे की फाइल ठंडे बस्ते में डालने के बाद अधिकारियों ने इन मामलों को गंभीरता से क्यों नहीं लिया है।

वाहनों में रेस, स्टंटबाजी व ट्रिपलिंग ना करें वाहन चालक : रवींद्र त्रिपाठी

अझुवा कौशाम्बी। यातायात निरीक्षक रविंद्र त्रिपाठी एवं यातायात टीम द्वारा एम0वी0 कॉन्वेंट स्कूल एंड कॉलेज ओसा मंझनपुर में पहुंच कर कक्षा-9 से कक्षा-12 तक के छात्र एवं छात्राओं को यातायात के नियमों से जागरूक करते हुए यातायात चिन्ह एवं यातायात निदेशों के पंपलेट का वितरण किया गया। छात्र छात्राओं को सड़क पर पैदल चलते समय, साइकिल, बाइक और स्कूटी आदि चलाते समय बरती जाने वाली महत्वपूर्ण सावधानियों से अवगत कराया गया साथ ही वैध ड्राइविंग लाइसेंस प्राप्त करने के उपरांत ही वाहन के संचालन करने की सलाह दी गई है तथा नाबालिक होने की दशा में वाहनों के संचालन पर नए कड़े प्रावधानों से अवगत कराया गया। छात्रों को वाहन के साथ रेस न करने, स्टंटबाजी न करने, वाहन में ट्रिपलिंग ना करने के निर्देश देते हुए हेलमेट के प्रयोग हेतु प्रेरित किया गया। एमवी कन्वेंट के प्रिंसिपल कृष्ण देव सिंह द्वारा छात्र छात्राओं को अपने अभिभाषण में बताया गया कि नियमों की जानकारी के साथ-साथ उनका अनुपालन नितांत आवश्यक है। उप प्रधानाचार्य श्रीमती प्रतिभा सिंह द्वारा यातायात विषयक निबंध एवं चित्रकला प्रतियोगिता हेतु छात्र छात्राओं को आमंत्रित करते हुए शीघ्र ही संपन्न कराए जाने की घोषणा की गयी। इसी क्रम में यातायात उपनिरीक्षक धीरज जायसवाल द्वारा डॉ0रिजवी स्प्रिंगफील्ड कॉलेज, करारी मे उपस्थित होकर कक्षा-6 से 8 तक के छात्र-छात्राओं को यातायात के नियमों से जागरूक किया गया तथा सड़क चिन्ह एवं यातायात निर्देश के पंपलेट का वितरण करते हुए अपने परिजनों तथा रिश्तेदारों को भी जागरूक करने हेतु प्रेरित किया गया। डॉ रिजवी कॉलेज के प्रिंसिपल धर्मेंद्र कुमार पांडेय द्वारा छात्र छात्राओं को दुर्घटना से बचाव हेतु सड़क पर चलते समय अनुशासन बनाए रखने की नसीहत दी गई इसके अतिरिक्त यातायात के नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध प्रवर्तन की कार्यवाही करते हुए 101 वाहनों का ई-चालान किया गया तथा उन्हें यातायात के नियमों से जागरूक करते हुए सड़क पर सावधानी से यात्रा करने हेतु प्रेरित किया गया।

स्कूल पहुंचकर यातायात पुलिस ने छात्र छात्राओं को यातायात चिन्ह एवं यातायात निदेशों के पंपलेट का किया वितरण

विद्यार्थियों को यातायात की अहम जानकारी देते

सपा से गठबंधन कर सरकार बनाएगी महान दल : संदीप

अखेड भारत संदेश

कौशाम्बी। मंझनपुर के बुद्ध नगर में महान दल कार्यकर्ताओ की एक बैठक संपन्न हुई। बैठक को संदीप कुमार मौर्य जिलाध्यक्ष महान दल प्रयागराज ने संबोधित किया उन्होंने कहा कि 2022 विधानसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। महान दल के कार्यकर्ता गांव-गांव जाकर महान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव देव मौर्य के विचारों नीतियों को पहुंचाने का काम कर रहे है जिससे जिला कमेटी विधानसभा कमेटी बूथ स्तर कमेटी का गठन जल्द हो सके उन्होंने कहा कि महान दल समाजवादी पार्टी का गठबंधन हो चुका है। विधानसभा 2022 का चुनाव महान दल समाजवादी पार्टी से मिलकर पूरे प्रदेश में चुनाव लड़ेगी। जिला अध्यक्ष ने कहा कि महान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव देव मौर्य का प्रयास है कि हमारा समाज अपने झंडे के नीचे आ जाए एक उसका घर हो जाए क्योंकि उत्तर प्रदेश में मौर्य कुशवाहा शाक्य सैनी कंबोज समाज 14% की आबादी में निवास करता है और आजादी के बाद से समाज हमेशा दूसरी पार्टी को वोट करता रहा जिसके बदले में इस समाज को हक अधिकार हिस्सा तो छोड़ो मान सम्मान तक नहीं मिलता।महान दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष केशव देव मौर्य ने महान दल का गठन 2008 में किया और पार्टी ने 2012 विधानसभा चुनाव में 7 से 8 लाख वोट हासिल किया दर्जनों सीटों पर दूसरे तीसरे चौथे पांचवें स्थान पर पार्टी ने स्थान बनाया। इसी क्रम में बैठक में उपस्थित राम प्रसाद मौर्य सुमित मौर्य दीपक सिंह जिला उपाध्यक्ष अजमल हसन खान अरविंद मौर्य संजीव मौर्य राघवेंद्र मौर्य विनोद मौर्य सकेत मौर्य मयंक मौर्य सोनू मौर्य जयचंद मौर्य आदि लोग उपस्थित रहे।

किसानों ने कहा धान क्रय केंद्रों में शुरू कराई जाए धान खरीद

कौशांबी। भारतीय किसान यूनियन टिकैत गुट के जिला अध्यक्ष नुरुल इस्लाम के नेतृत्व में किसान नेताओं ने जिला पंचायत परिसर में एक बैठक की और बैठक में उन्होंने किसानों की तमाम समस्याओं पर चर्चा किया बैठक के बाद किसानों का जत्था कलेक्ट्रेट पहुंचा और जिला अधिकारी कहा कि धान के केंद्रों पर धान की खरीद शुरू कराई जाए साथ ही किसानों को धान बिक्री का भुगतान समय से कराए जाने की व्यवस्था की जाए किसानों ने कहा कि चायल तहसील का भूमि विकास बैंक जो प्रयागराज से संचालित हो रहा है उसे चायल तहसील में स्थापित किया जाए अंतेष्टि स्थल के आसपास शवदाह गृह बनाए जाने की मांग किसान नेताओं ने किया उन्होंने कहा अंत्येष्टि स्थल ना होने से लावारिस लाशों का अंतिम संस्कार किए जाने में दिक्कतें होती है जनपद में कृषि भूमि के पट्टे जिनको 12 वर्ष से अधिक हो गए हैंविभिन्न मांगों को लेकर भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारियों ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा है इस दौरान रणधीर सिंह गणेश प्रसाद देवनाथ प्रेम नारायण ननकू लाल अनुज सिंह राजेंद्र पटेल लल्लू प्रसाद पटेल संजय यादव सिद्ध सरन गुप्ता सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

सेवढा घाट से देर रात तक होता बालू का अवैध खनन

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के यमुना नदी कै सेवढा घाट से देर रात तक बालू का अवैध खनन बेखौफ तरीके से माफियाओं द्वारा किया जाता है यमुना नदी के बीच जलधारा से नाव के सहारे बालू की निकासी बेखौफ हो रही है नदी के बीच जल धारा से बालू की निकासी पर शासन ने पूर्ण रोक लगाई है लेकिन फिर भी माफियाओं के कारनामों पर थाना पुलिस और अधिकारियों ने अपनी नजर उधर से घुमा ली है जिससे माफियाओं के हौसले बुलंद हैं बताते हैं कि दर्जनों नाव के सहारे प्रतिदिन लाखों रुपए का अवैध खनन यमुना घाट में माफियाओं द्वारा किया जा रहा है स्थानीय लोगों ने पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए यमुना नदी के सेवढा घाट में हो रहे अवैध खनन पर रोक लगाए जाने और अवैध खनन करने वाले माफियाओं पर मुकदमा दर्ज करा कर गिरफ्तारी कराए जाने की मांग की है।

ऋद्धि सिद्धि सेवा ट्रस्ट का सांस्कृतिक कार्यक्रम सफलता पूर्वक संपन्न

विधायक संजय गुप्ता ने साढ़े चार वर्ष में जनहित के लिए किये गए विकास कार्यों का लेखा जोखा जनता के सामने रक्खा

अखंड भारत संदेश

सांस्कृतिक कार्यक्रम में बोलते चायल विधायक संजय गुप्ता व मंच पर मौजूद कलाकार

कौशाम्बी। नगर पंचायत सराय अकिल के बस स्टैंड परिसर में तृप्ति शाक्या एंड ग्रुप द्वारा रंगारंग कार्यक्रम की प्रस्तुति दिव्य झांकियों के साथ संपन्न हुआ .कार्यक्रम को रिद्धि सिद्धि सेवा ट्रस्ट के द्वारा आयोजित किया गया था सांस्कृतिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक चायल संजय कुमार गुप्ता ने दीप प्रज्वल्लित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया मशहूर गायिका तृप्ति शाक्या ने भगवान शंकर के लोक प्रिय भजन सत्यम शिवम सुंदरम व भगवान श्री कृष्ण के भजन कभी राम बनके कभी श्याम बनके भजनो को गाकर श्रोताओ को मंत्र मुग्ध कर दिया अंतिम कार्यक्रम राधा कृष्ण की बरसाने की लट्ठ मार पुष्प वर्षा होली व देश भक्ति के गीत हर करम अपना करेंगे ऐ वतन तेरे लिए से समापन हुआ ।कार्यक्रम के मध्य मे विधायक चायल ने कस्बे के प्रबुद्ध व वरिष्ठ जनों को अंग वस्त्र व मोमेंटो भेट कर सम्मानित किया पुनः कार्यक्रम के समापन के अवसर पर तृप्ति शाक्या एंड ग्रुप के साथ कमेटी के अध्यक्ष संयोजको को भी सम्मानित किया। उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते हुये विधायक संजय गुप्ता ने साढ़े चार वर्ष में जनहित के लिए किये गए विकास कार्यों का लेखा जोखा जनता के सामने रक्खा इस अवसर पर संयोजक संयोजक उमेश केशरवानी कृष्ण नारायण रस्तोगी अखिल रस्तोगी रामबहादुर जायसवाल पूर्व विधायक शिवदानी चेयरमैन सराय अकिल उमेश मुन्ना प्रशांत जायसवाल शक्ति केंद्र संयोजक अशोक मोदनवाल प्रदीप गुप्ता असंख्य पार्टी पदाधिकारी कार्यकर्ता व अपार जनसमूह उपस्थित रहा कार्यक्रम का समापन अध्यक्ष निखिल केशरवानी ने किया।

सम्पादकीय

पीछे कोरोना, आगे चुनाव

इस कार्यकारिणी की बैठक से भी मोटा संदेश यही दिया गया कि पार्टी केरल, आंध्रप्रदेश जैसे उन राज्यों में अपनी पैठ बढ़ाने का काम हाथ में लेगी जहां वह नहीं पहुंच सकी है। पांच राज्यों के आगामी विधानसभा चुनावों के लिहाज से यूपी पार्टी के लिए सबसे अहम है और योगी किसी बीजेपी शासित राज्य के अकेले मुख्यमंत्री रहे जिन्हें इस बैठक में आमंत्रित किया गया था। करीब दो साल के अंतराल पर बीजेपी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक ऐसे समय हुई है, जब पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों की अहम चुनौती सामने है। दो साल का यह अंतराल भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पार्टी संविधान के मुताबिक राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक अमूमन तीन महीने के अंतर पर होती है। मगर कोरोना महामारी के साये में गुजरे ये दो साल असाधारण उथल पुथल वाले रहे हैं। आश्चर्य नहीं कि सत्तारूढ़ पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की इस बैठक में ये दोनों पहलू छाये रहे। कोरोना की दूसरी लहर की समाप्ति और सौ करोड़ से ज्यादा टीके लगाए जाने में कामयाबी की बदौलत पार्टी ने इस मोर्चे पर सरकार की मुक्त कंठ से तारीफ करते हुए उसे एक तरह से फुल मार्क्स दे दिए। जहां तक चुनावी चुनौतियों का सवाल है तो इसमें दो राय नहीं कि मोदी-शाह युग में चुनाव-दर-चुनाव जीत दर्ज कराने में बीजेपी का रेकॉर्ड खासा अच्छा रहा है और यह ट्रेंड बदल गया है या बदल रहा है ऐसा अब भी नहीं कहा जा सकता। इसके कमजोर पड़ने के कुछ संकेत जरूर हाल के दिनों में मिले हैं। ताजा उदाहरण तीन लोकसभा और 29 विधानसभा चुनाव क्षेत्रों के उपचुनाव नतीजों का है जिनमें बीजेपी का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा। नॉर्थ ईस्ट के राज्यों में मिली सफलता पर हिमाचल प्रदेश की चारों सीटों में मिली नाकामी भारी रही। पार्टी में इसे लेकर चिंता स्वाभाविक रूप से होगी, मंथन भी चला होगा, लेकिन बीजेपी जैसी बड़ी पार्टियां छोटी नाकामियों को ध्यान में रखते हुए भी बड़ी कामयाबियों पर फोकस करते हुए चलना जानती हैं।

इस कार्यकारिणी की बैठक से भी मोटा संदेश यही दिया गया कि पार्टी केरल, आंध्रप्रदेश जैसे उन राज्यों में अपनी पैठ बढ़ाने का काम हाथ में लेगी जहां वह नहीं पहुंच सकी है। पांच राज्यों के आगामी विधानसभा चुनावों के लिहाज से यूपी पार्टी के लिए सबसे अहम है और योगी किसी बीजेपी शासित राज्य के अकेले मुख्यमंत्री रहे जिन्हें इस बैठक में आमंत्रित किया गया था। राजनीतिक प्रस्ताव भी उन्होंने ही पेश किया। बैठक में सरकार की ओर से गरीबों के लिए शुरू की गई कल्याण योजनाओं को तो हाइलाइट किया ही गया, जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद 370 के विशेष प्रावधान खत्म करने जैसे कदम की ऐतिहासिकता को भी रेखांकित किया गया। 2004 से 2014 के बीच आतंकी घटनाओं में मारे गए 2081 लोगों के मुकाबले 2014 से सितंबर 2021 के बीच हुई 239 नागरिकों की मौत के आंकड़ों के सहारे राजनीतिक प्रस्ताव में सरकार की जम्मू कश्मीर नीति को सफल बताया गया। प्रधानमंत्री मोदी ने भी सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताते हुए कार्यकताओं को मिशन मोड में लाने का प्रयास किया। बहरहाल, चाहे कोरोना से हुई लड़ाई की बात हो या आतंकवाद को काबू में करने की, पार्टी के इन दावों का असल परीक्षण पार्टी से बाहर के मंचों पर और आखिरकार जनता की अदालत में होना है। और, वहां इन्हें अन्य बातों के अलावा समय की कसौटी से भी गुजरना होगा।

खुद को दूसरों से बेहतर साबित करने की होड़ आज की सबसे बड़ी समस्या है

ललित गर्ग

सामाजिक एवं व्यक्तिगत अनुशासन के लिये आखिर दंड और यंत्रणा से कब तक कार्य चलेगा? क्या पूरे जीवन-काल तक आदमी नियंत्रण में रहेगा? क्या यह भय निरंतर सबके सिर पर सवार ही रहेगा? भयभीत समाज सदा रोगग्रस्त रहता है, वह कभी स्वस्थ नहीं हो सकता। जिन्दगी का एक लक्ष्य है- उद्देश्य के साथ जीना। सामाजिक स्वास्थ्य एवं आदर्श समाज व्यवस्था के लिए बहुत जरूरी होता है कर्तव्य-बोध और दायित्व-बोध। कर्तव्य और दायित्व की चेतना का जागरण जब होता है तभी व्यक्तिगत जीवन की आस्थाओं पर बेईमानी की परतें नहीं चढ़ पातीं। सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत जीवनशैली के शुभ मुहूर्त पर हमारा मन उगती धूप जैसा ताजगीभरा होना चाहिए, क्योंकि अनुत्साही, भयाक्रांत, शंकालु, अधमरा मन संभावनाओं के नये क्षितिज उद्घाटित नहीं होने देता, समस्याओं से घिरा रहता है।

समस्याएं चाहे व्यक्तिगत जीवन से संबंधित हों, पारिवारिक जीवन से संबंधित हों या फिर आर्थिक हों या फिर सामाजिक जीवन की। इन प्रतिकूल परिस्थितियों से संघर्ष कर रहे व्यक्ति का यदि नकारात्मक चिंतन होगा तो वह भीतर ही भीतर टूटता रहेगा, नशे की लत का शिकार हो जाएगा और अपने जीवन को अपने ही हाथों बर्बाद कर देगा। जो व्यक्ति इन प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझ नहीं पाते वे आत्महत्या तक कर लेते हैं या परहत्या जैसा कृत्य भी कर बैठते हैं। कुछ व्यक्ति इन परिस्थितियों में असामान्य हो जाते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं जिससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों में स्वयं के जीवन को और अधिक जटिल बना देता है। लेखिका पैट होलिंगर पिकेट कहती हैं, ह्यये आपको तय करना है कि अपना समय कैसे बिताएंगे। वरना हम यूं ही व्यस्त बने रहते हैं और जीवन कहीं और घटता रह जाता है।ज्जीवन की बड़ी बाधा है खुद को दूसरों से बेहतर साबित करने की होड़ एवं दूसरों को नीचा दिखाने की कोशिश। इससे हम कई बार खुद ही नीचे गिरते जाते हैं। वो करते हैं, जो असल में करना ही नहीं चाहते। नतीजा, सफलता मिलती भी है तो खुशी नहीं मिल पाती। खुद को बेहतर बनाना एक बात है, पर हर घड़ी खुद को साबित करने के लिए जूझते रहना खालीपन ही देता है। यह खालीपन का एहसास जीवन को बोझिल बना देता है। अकेलापन, उदासी और असंतुष्टि की भावनाएं कचोटती रहती हैं। मानो खुद के होने का एहसास, कोई इच्छा ही ना बची हो। तब छोटी-छोटी चीजों में छिपी खूबसूरती नजर ही नहीं आती। वियतनामी बौद्ध गुरु तिक न्यात हन्ह कहते हैं, ह्यबहुत से लोग जिंदा हैं, पर जीवित होने के जादुई एहसास को कम ही छू पाते हैं।ह्ल हम जितना भागते हैं, समस्याएं उतनी बड़ी होती जाती हैं। हम एक से भागते हैं, चार और पीछा करने लगती हैं। हम जितना समस्याओं से भागते हैं, उतना ही उनके सामने छोटे पड़ने लगते हैं। जबकि सच कुछ और ही होता है। लेखक बर्नार्ड विलियम्स कहते हैं, ह्यऐसी कोई रात या समस्या नहीं होती, जो सूरज को उगने से रोक दे या आशा को धूमिल कर दे।ह्ल

सामाजिक एवं व्यक्तिगत अनुशासन के लिये आखिर दंड और यंत्रणा से कब तक कार्य चलेगा? क्या पूरे जीवन-काल तक आदमी नियंत्रण में रहेगा? क्या यह भय निरंतर सबके सिर पर सवार ही रहेगा? भयभीत समाज सदा रोगग्रस्त रहता है, वह कभी स्वस्थ नहीं हो सकता। भय सबसे बड़ी बीमारी है। भय तब होता है जब दायित्व और कर्तव्य की चेतना नहीं जगती। जिस समाज में कर्तव्य और दायित्व की चेतना जाग जाती है उसे डरने की जरूरत नहीं होती।

यह मन का डर ही है कि हम प्रतिष्ठा एवं अपनी पहचान बनाने के लिये अनेक काम हाथ में ले लेते हैं, पर पूरा एक भी नहीं हो पाता। सारे काम आपस में ही उलझने लगते हैं। समझ नहीं आता कि क्या जरूरी है, क्या नहीं? और फिर काम करने की प्रेरणा ही नहीं बचती। लेखिका ए.एम. होम्स कहती हैं, ह्यअपने कामों को आसान बनाएं। छोटे-छोटे कदम बढ़ाएं। एक छोटा काम पूरा करके, दूसरे काम को पूरा करें।ह्ल जिन लोगों में सम्यक दायित्व की चेतना एवं संतुलित सोच होती है, वे व्यक्ति अनेक अवरोधों के बावजूद ऊपर उठ जाते हैं। आज के साहित्य का एक शब्द है- ह्यभोगा हुआ यथार्थह्ल। हमें केवल कल्पना के जीवन में नहीं जीना। सामाजिक परिवेश में बहुत कल्पनाएं उभरती हैं। किन्तु, आप निश्चित मानिए कि कल्पना तब तक अर्थवान नहीं होती जब तक कि ह्यभोगे हुए यथार्थह्ल पर हम नहीं चल पाते। हमारा जीवन यथार्थ का होना चाहिए।प्रतिकूल परिस्थितियों में भी व्यक्ति सामान्य रूप से जीवनयापन कर सकता है। आवश्यकता है मानसिक संतुलन बनाए रखने की। सकारात्मक चिंतन वाला व्यक्ति इन्हीं परिस्थितियों में धैर्य, शांति और सद्भावना से समस्याओं को समाहित कर लेता है। समस्याओं के साथ संतुलन स्थापित करता हुआ ऐसा व्यक्ति जीवन को मधुरता से भर लेता है। सकारात्मक चिंतन के माध्यम से इच्छाशक्ति जागती है। तीव्र इच्छाशक्ति एवं संकल्प से ही व्यक्ति आगे बढ़ता है। रूमी कहते हैं, ह्यअपने शब्दों को ऊंचा करें, आवाज को नहीं। फूल बारिश में खिलते हैं, तूफानों में नहीं। प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच असंतुलन से हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर होता है। हम स्वभाव में आवेग, आवेश, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा और उदासीनता की वृद्धि होती है। एक के बाद एक कार्य बिगड़ सकते हैं और उस स्थिति में कोई सहायक भी नहीं होता। असहाय बना हुआ व्यक्ति बद से बदतर स्थिति में चला जाता है। आज की युवा पीढ़ी अपने कॅरियर को संवारने के लिए संघर्षरत है। इस संघर्ष में जब उन्हें सफलता मिलती है तो वह अपने आपको आनंदित महसूस करती है। उसमें नई ऊर्जा, नई स्फूर्ति का संचार होने लगता है जबकि देखने में आता है कि असफल होने पर युवा मानस जल्दी ही संयम, धैर्य, अनुशासन और विवेक खो देता है। लाइफ कोच एंडी सेटोविट्ज कहती हैं, ह्यअनुशासन का मतलब है खुद से पूछना कि मेरे इस समय का सबसे अच्छा इस्तेमाल क्या है? और फिर उसमें जुट जाना। हर दिन थोड़ा आगे बढ़ना ही हमें बड़ी सफलता की ओर ले जाता है। प्रतिकूलता और उदासीनता के क्षणों में इन पंक्तियों को बार-बार दोहरायें- ह्यह्यकल का दिन किसने देखा, आज के दिन को खोयें क्यों? जिन घड़ियों में हंस सकते हैं उन घड़ियों में रोये क्यों?ह्ल मुझे सफल होना है, मैं अपनी प्रतिकूलताओं को दूर करने का पुनः प्रयास करूंगा। प्रतिकूल परिस्थितियों के बारे में सोचते रहने से समस्याओं का समाधान संभव नहीं है। इसे संभव बनाया जा सकता है- किंतु आवश्यकता है मानसिक संतुलन बनाए रखने की, तीव्र इच्छाशक्ति, सकारात्मक और स्वस्थ चिंतन को बनाए रखने की। मानसिक संतुलन तभी संभव है जब विचारों की उलझन को कम किया जाए, निर्विचारिकता की स्थिति विकसित की जाए। जब विचारों की निरंतरता कम होगी तब व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में समायोजन कर सकता है।

अत्याचार या तुष्टिकरण फैसला आपका...

सड़कों पर, रेलवे लाईन्स पर, रेल्वे प्लेटफार्मस पर , बाजारों में, यानि जहाँ मन चाहे कुछ लोग हैं जो नमाज पढ़ना शुरू कर देते हैं बिना यह सोचे कि अन्य नागरिकों को परेशानी भी होगीह्ल शायद वे लोग इस तरह अपना वर्चस्व साबित करना चाह रहे हों या ऐसे दबंगई दिखाकर हर जगह एक अड़ंगा लगाये रख कर अपनी नादिरशाही सोच द्वारा हिन्दुओं को हमेशा पांवों तले दबाकर रखना चाहते हों ताकि मौका मिलते ही अपना गजवा ए हिन्द का मन्सूबा मुकम्मल कर सकें। वहीं अगर हिन्दू उनके इस कृत्य पर विरोध करते हैं तो यही लोग दुनिया भर में हाय तौबा मचाने लगते हैं कि हिन्दुस्थान में मुसलमानों पर ज्यादती होती है, उन्हें उनके धर्म कर्म से रोका जाता है आदि आदिह्ल.जबकि हकीकत ये है कि जितनी सहूलियतें और धार्मिक तुष्टिकरण उन्हें हिन्दुस्थान में मिलता है उतना तो उनके अपने मुल्क पाकिस्तान या अन्य मुस्लिम देशों में भी नहीं मिलताह्ल लाखों मस्जिदें चारों तरफ कुकुरमुत्तों की तरह भारत भर में फैल गयीं हैं और उसपर लाउडस्पीकर लगाकर दिन में 5 बार तेज आवाज में ध्वनि प्रदुषण तो शायद बहुत से इस्लामिक मुल्कों में भी नहीं एलाऊड होगा। असली परेशानी और भेदभाव तो हिन्दुओं को भोगना पड़ता हैह्ल कई मुस्लिम देशों में रोजा के दौरान हिन्दू खाना तो क्या पानी भी नहीं पी सकता अगर दिखाई पड़ गया तो भयानक सजाह्ल बहुत से इस्लामी देशों में हिन्दू अपना पूजा पाठ तक नहीं कर सकते न तो अपने आराध्य देव की फोटो आदि ले जा सकते हैंह्ल मक्का-मदीनाऔर काबे में तो हिन्दू कदम भी नहीं रख सकता हैह्ल. हिन्दुओं का कत्लेआम, उनकी औरतों और बच्चियों का अपहरण, बलात्कार, और जबरदस्ती धर्मपरिर्तन तो बहुत सारे मुल्कों में तो सबाब का काम माना जाता है।

पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान में तो हिन्दू कौम ही इस्लामिक अत्याचारों के चलते खतम हो चली है। उनपर नित्य प्रति बड़े-बड़े दिल दहला देने वाले अत्याचार और मानवाधिकार के उल्लंघन किये जाते हैं पर विश्व का कोई देश हिन्दुओं के लिये आवाज तक नहीं उठाता।

भारत को भी किसी बाहरी देशों की लेशमात्र चिन्ता किये बगैर सभी धर्मावलंबियों के साथ भारतीय संविधान और दण्ड संहिता के अनुसार व्यवहार करना चाहिए भले वह हिन्दू हो,मुसलमान हो सिक्ख हो इसाई हो या कोई अन्यह्ल. बिना किसी भेदभाव या तुष्टिकरण केह्ल दुनिया तो उसीकी मानती है जो समर्थ और दबंग होता हैह्लविश्व मे जिस की लाठी उसकी भैंस वाला डण्डा चलता हैह्ल चीन, अमेरिका, उत्तरी कोरिया और पिद्दी सा अफगानिस्तान या आतंकवादियों का चौधरी आइसिस सब यही सिद्ध करते हैं।

-सुरेश तिवारी

जातीय राजनीति में नई केमिस्ट्री की तलाश, समान स्तर की जातियों में रोटी-बेटी का रिश्ता बनाने पर जोर

सुरेश तिवारी

उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनावों की बढ़ती आहट के बीच जातीय गोलबंदी की नई-नई पटकथाएं रची जाने लगी हैं। चूंकि सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव में जाति के प्रत्यक्ष इस्तेमाल पर रोक लगा रखी है, इसलिए चुनावों में जातीय हिस्सेदारी की बात खुले तौर पर ना तो जातियों के नेता कर रहे हैं और ना ही अपने समर्थन आधार को बढ़ाने में जुटी पार्टियां। फिर भी ब्राह्मणों को लुभाने के नाम पर प्रबुद्ध समाज के बैनर का इस्तेमाल तो हो ही रहा है। अब ब्रह्मर्षि समाज की चिंतन बैठक के नाम पर भूमिहार और ब्राह्मण समाज को एक करने की कोशिश भी हो रही है।

एका लाने का प्रयास

विभिन्न जातियों के नेता अपनी राजनीतिक सौदेबाजी को मजबूत बनाने के लिए ऐसा प्रयास कर रहे हैं। समाज व्यवस्था में तकरीबन समान स्तर वाले जाति समूहों को एक साथ लाकर अपनी संख्या बढ़ाने की तैयारी हो रही है। यह प्रक्रिया कुछ जाति समूहों में अगले चरण में पहुंचती लग रही है। इसके तहत समान स्तर की कुछ जातियां अपने जाति नामों को भुलाकर एक होने की कोशिश में हैं। उनमें आपस में रोटी और बेटी के संबंध को बढ़ावा देने की भी बात हो रही है। भारतीय समाजवादी और वामपंथी राजनीति जिस जाति व्यवस्था को तोड़ने की बात करते-करते खुद ही तिरोहित होने के कगार पर पहुंच चुकी है, समान सामाजिक स्तर की कुछ जातियां उसी जाति व्यवस्था को तोड़ने की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

गाजियाबाद में हुई बैठक

अक्टूबर महीने के आखिरी हफ्ते में उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद में हुई एक सभा में गुर्जर, जाट और यादव जाति समाज को एक साथ लाने और उनके बीच रोटी-बेटी का संबंध बनाने का ऐलान किया गया। वैसे, किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत भी कहते रहे हैं कि तीनों जातियां चूंकि एक जैसी हैं, तीनों के गोत्र तकरीबन समान हैं, इसलिए इन्हें एक हो जाना चाहिए। सवर्ण समाज में ऐसी कोशिश कभी भगवान परशुराम के नाम पर तो कभी ब्रह्मर्षि समाज के बैनर तले होती रही है।

जाति का इस्तेमाल करने से नहीं चूकते राजनेता

जातीय गोलबंदी के जरिए राजनीतिक फायदा उठाने वाले दलों की बहुत चर्चा हो चुकी है। उस पर विमर्श भी खूब हुआ है। जब भी किसी राजनीतिक दल ने कथित सोशल इंजीनियरिंग के बहाने जातीय गोलबंदी की और उसका राजनीतिक फायदा उठाया, हर बार कहा गया कि उसके समीकरणों में फिट बैठने वाली जातियों में आपसी समानता बढ़ेगी और भाईचारा भी कायम होगा। हालांकि यह उम्मीद हर बार टूटती रही है।

यूपी के साथ-साथ बिहार में भी हो चुकी कोशिश

जातियों में आपसी द्वंद्व चलता रहा है और इसका असर कई बार खूनी संघर्ष के रूप में भी दिखा है। समाजवादी आंदोलन के पुरोधा राममनोहर लोहिया ने सवर्ण समाज के बरक्स पिछड़े समाज को एक करने के लिए नारा ही दिया था, ह्यसंसोपा ने बांधी गांठ, पिछड़े पावें सौ में साठ।ह्ल इसका असर यह हुआ कि समूची समाजवादी राजनीति पिछड़े वर्ग के जनाधार पर केंद्रित होती गई। हालांकि पिछड़ी जातियों में इससे आपसी एका होने या एक-दूसरे में समाहित होने की कोई कहानी सामने नहीं आई। उलटे पिछड़ों में यादव, कुर्मी जैसी जातियां जरूर राजनीतिक रूप से ताकतवर होती गईं। इसे देखते हुए बिहार में एक दौर में पचफोरना जातियों की भी कल्पना की गई और उन्हें एक मंच पर लाकर राजनीतिक ताकत बनाने की कोशिश हुई। पंचफोरना में कानू, गोंड़, कहार, कमकर, माली, नोनिया, राजभर, हलवाई जैसी जातियां थीं, जिनके हाथ का खाना-पानी अतीत में सवर्ण जातियों के लिए वर्जित नहीं रहा है। हालांकि सामाजिक समीकरण में ये जातीय समूह स्वतंत्र रूप से ताकतवर नहीं बन पाए, क्योंकि लोकतांत्रिक व्यवस्था को प्रभावित करने के लिए इनके पास समुचित संख्या बल नहीं था।

लोहिया के रास्ते पर कांसीराम

राम मनोहर लोहिया की सोच को पिछली सदी के आखिरी दशक में और आगे बढ़ाया कांसीराम ने। उन्होंने नारा दिया, ह्यजिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी।ह्ल इस बहाने अनुसूचित समूह की जातियों को एक साथ लाकर मजबूत वोट बैंक बनाने में वे सफल भले ही रहे, लेकिन उस समूह की जातियों के बीच एक-दूसरे में समाहित होने का भाव नहीं पनप पाया। सोशल इंजीनियरिंग के सहारे जाति समूहों के बीच राजनीतिक ताकत हासिल करने के लिए कुछ हद तक आपसी समझ जरूर बनी, लेकिन उससे जातिविहीन समाज की ओर बढ़ने का रास्ता नहीं खुला। हर जाति समूह लोकतंत्र की इकाई बनकर उभरा। हालांकि सच पूछें तो लोकतंत्र की इकाई व्यक्ति होना चाहिए। शायद संविधान निमार्ताओं ने भी ऐसा ही सोचा था। लेकिन अपनी लोकतांत्रिक व्यवस्था में समुदाय और जाति न सिर्फ इकाई बनती गई है, बल्कि वह मजबूत भी हुई है। सत्ता हासिल करने के खेल में जाति व्यवस्था अलग-अलग जातियों को औजार की तरह इस्तेमाल भर करती है। असलियत में ना तो वह तिरोहित होने की कोशिश करती है और ना ही एक-दूसरे को हर स्तर पर आत्मसात करने की। लगातार बढ़ती शिक्षा और सूचनाओं की बाढ़ से नई पीढ़ी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकी है। वह गोलबंदी के इस खेल को समझने लगी है। यही वजह है कि राजनीति अब समान स्तर की जातियों को एक-दूसरे में समाहित करने और उन्हें संख्या बल के हिसाब से मजबूत बनाने की तैयारी में जुट गई है। इसका फायदा जातियों को बाद में मिलेगा, फौरी लाभ उसे बढ़ावा देने वाली राजनीतिक व्यवस्था ही उठाएगी। अगर जातियां एक-दूसरे में समाहित हुईं तो उन्हें दिखाकर उस समुदाय विशेष का राजनेता अपनी स्थिति मजबूत बनाने की कोशिश ही करेगा।

फायदा नेता का, नुकसान व्यक्ति का

उत्तर प्रदेश चूंकि बड़ा राज्य है, इसलिए यहां यह प्रयोग कुछ ज्यादा ही किया जा रहा है। लेकिन इस पूरी प्रक्रिया में सबसे ज्यादा नुकसान किसी का हो रहा है, तो वह व्यक्ति की अपनी स्वाधीनता का। लोकतांत्रिक समाज का बुनियादी आधार उसे होना चाहिए, लेकिन उसका समुदाय या उसकी जाति आधार बन रही है और उसके आधार पर उस व्यक्ति की भी राजनीतिक कीमत निर्धारित हो रही है। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए इस व्यवस्था को उचित तो नहीं ही माना जा सकता।

जिन्ना का गुणगान और लोहिया का अपमान क्यों करते अखिलेश जी

आर.के. सिन्हा

एक खास वर्ग के वोट पाने के खातिर समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव इतने नीचे गिर जाएंगे, यह शायद ही किसी ने सोचा भी न हो। उन्होंने हाल ही में हरदोई में पार्टी की एक रैली में मोहम्मद अली जिन्ना का महिमामंडन किया। एक तरह से उन्होंने भारत को तोड़ने वाले जिन्ना को स्वतंत्रता आंदोलन का नायक ही बता दिया।

क्या अखिलेश यादव को पता नहीं कि जिन्ना ने ही मुसलमानों से 16 अगस्त, 1946 के दिन से डायरेक्ट एक्शन (सीधी कार्रवाई) का आह्वान किया था एक तरह वह दंगों की एक योजनाबद्ध शुरूआत थी। उन दंगों में मात्र कोलकाता महानगर में ही पांच हजार मासूम मारे गए थे। मरने वालों में बिहारी और उड़िया मजदूर सर्वाधिक थे। फिर तो दंगों की आग चौतरफा फैल गई। मई, 1947 को रावलपिंडी में मुस्लिम लीग के गुंडों ने जमकर हिन्दुओं और सिखों को मारा, उनकी संपत्ति व औरतों की इज्जत खुलेआम लूटी। रावलपिंडी और लाहौर में सिख और हिन्दू खासे धनी थे। इनकी संपत्ति को निशाना बनाया गया। पर मजाल है कि मोहम्मद अली जिन्ना ने कभी उन दंगों को रुकवाने की अपील तक की हो। वे एक बार भी किसी दंगाग्रस्त क्षेत्र में भी नहीं गए, ताकि दंगे कुछ हद तक ही सही थम जाएं।

डायरेक्ट एक्शन की आग पूर्वी बंगाल (अब बांग्लादेश) के नोआखाली तक पहुंच गई थी। वहां पर हजारों हिन्दुओं का कत्लेआम हुआ था। उस कत्लेआम को रुकवाने के लिए महात्मा गांधी नोआखाली गए थे। उनके साथ अखिलेश यादव की पार्टी के राजनीतिक चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया, जे.बी. कृपलानी वगैरह भी थे। गांधीजी नोआखाली 6 नवंबर, 1946 को पहुंचे थे। उनका वहां जाने का मकसद आग में झुलसते नोआखाली में शांति की बहाली करना था। वे और उनके साथ वहां लगातार सात हफ्ते तक रहे और जब वहां से निकले तबतक तो हालात काफी सामान्य हो चुके थे। नोआखाली देश की आजादी के बाद पूर्वी पाकिस्तान का हिस्सा बना और पाकिस्तान के दो फाड़ होने के बाद बांग्लादेश का अंग बना।

हैरानी होती है कि जिन्ना को गांधीजी और सरदार पटेल के बराबर रखने वाले अखिलेश यादव को इतना भी नहीं पता कि जिन्ना के कारण ही हिंदुओं का नरसंहार हुआ और हिंदू महिलाओं के साथ दुष्कर्म किया गया। गांधीजी की नोआखाली की शांति यात्रा का मुस्लिम लीग के मंत्रियों, कार्यकताओं और स्थानीय मौलवियों ने घनघोर तरीके से विरोध भी किया था। मुख्यमंत्री हुसैन शाहिद सुहरावर्दी ने गांधीजी से नोआखाली को छोड़ने के लिए भी कहा था। पर वे और उनके साथी तब तक वहां रहे जब तक हालात बेहतर नहीं हो गए।

जिन्ना का गुणगान करने वाले अखिलेश यादव यह भी याद रख लें कि जिन्ना ने एकबार भी जेल यात्रा तक नहीं की। क्या कोई आजादी के आन्दोलन का इस तरह का नेता होगा, जिसने कभी जेल यात्रा न की हो या पुलिस की लाठियां न खाई हों जिन्ना साहब दंगे रुकवाने के लिए कभी सड़कों पर नहीं उतरे। इतिहासकार राज खन्ना कहते हैं कि जिन्ना को बेहिसाब मौतों और जनधन की हानि का कोई अफसोस तक नहीं था। इतिहास की इस शर्मनाक त्रासदी ने उनके पाकिस्तान के सपने को सच करने का काम और आसान कर दिया।

अंग्रेजों की गुलामी से निजात पाने के लिए क्रांतिकारी रहे हों या फिर बापू के रास्ते चलने-लड़ने वाले अहिंसक सेनानी। सबकी कुर्बानियों का गौरवशाली लम्बा सिलसिला और इतिहास है। दूसरी ओर जिन्ना को कांग्रेस के मुकाबले खड़ा होने के लिए अंग्रेजों का भरपूर साथ और समर्थन मिला। उन्हें सिर्फ एक काम करना था- हिंदुओं व मुसलमानों के बीच दूरी और नफरत बढाना। आजादी की लड़ाई के दौरान जिन्ना ने इस काम को बखूबी अंजाम दिया। दिल्ली से कराची रवानगी की पूर्व संध्या पर 7 अगस्त 1947 को उन्होंने अपने सन्देश में कहा था , अतीत को गाड़ दिया जाना चाहिए और हमें हिंदुस्तान और पाकिस्तान- दो स्वतंत्र संप्रभु देशों के रूप में नई शुरूआत करनी चाहिए। मैं हिंदुस्तान के लिए शांति और समृद्धि की कामना करता हूँ। देख लीजिए कि जो जिन्ना खुलेआम खून-खराबा करवाता रहा वह पाकिस्तान बनने से चंद रोज पहले भाईचारे का पाठ पढ़ा रहा था।

अखिलेश यादव ही नहीं, बल्कि कुछ कथित इतिहासकार जिन्ना को धर्मनिरपेक्ष भी बताने लगे हैं। जो इंसान धर्म के नाम पर देश का बंटवारा करवा चुका हो उसे ही धर्मनिरपेक्ष बताया जाता है। ये जिन्ना के 11 अगस्त, 1947 को दिए भाषण का हवाला देते हैं। उस भाषण में जिन्ना कहते हैं- ह्ल पाकिस्तान में सभी को अपने धर्म को मानने की स्वतंत्रता होगी।ह्ल 11 अगस्त, 1947 के भाषण का हवाला देने वाले जिन्ना के 24 मार्च, 1940 को लाहौर के बादशाही मस्जिद के ठीक आगे बने मिन्टो पार्क (अब इकबाल पार्क) में दिए भाषण को भूल जाते हैं। उस दिन अखिल भारतीय मुस्लिम लीग ने पृथक मुस्लिम राष्ट्र की मांग करते हुए प्रस्ताव पारित किया था। यह प्रस्ताव ही मशहूर हुआ ह्लपाकिस्तान-प्रस्तावह्ल के नाम से। उस प्रस्ताव में कहा गया था कि मुस्लिम लीग मुसलमानों के लिए पृथक राष्ट्र का ख्वाब देखती है। वह इसे पूरा करके ही रहेगी।

प्रस्ताव के पारित होने से पहले मोहम्मद अली जिन्ना ने अपने दो घंटे लंबे भाषण में हिन्दुओं को जमकर कसकर कोसा था। ह्लहिन्दू-मुसलमान दो अलग मजहब हैं। दो अलग विचार हैं। दोनों की संस्कृति, परम्पराएं और इतिहास भी अलग है। दोनों के नायक भी अलग हैं । इसलिए दोनों कतई साथ नहीं रह सकते।ह्ल जिन्ना ने अपने भाषण में महान आजादी सेनानी लाला लाजपत राय और चितरंजन दास को अपशब्द तक कहे थे। उनके भाषण के दौरान एक प्रतिनिधि मलिक बरकत अली ने ह्यलाला लाजपत राय को राष्ट्रवादी हिन्दू कहा।ह्ल जवाब में जिन्ना ने कहा, ह्यकोई हिन्दू नेता राष्ट्रवादी नहीं हो सकता। वह पहले और अंत तक हिन्दू ही है।ह्ल इसके बावजूद अखिलेश यादव जैसे नेता जिन्ना को धर्मनिरपेक्ष और गांधी और सरदार पटेल जी के कद का नेता बता देते हैं।

अखिलेश यादव के अलावा भी हमारे यहां बहुत से जिन्ना के चाहने वाले हैं। कुछ समय पहले कांग्रेस के एक नेता ने भी दावा किया था कि सरदार वल्लभ भाई पटेल के मोहम्मद अली जिन्ना से संबंध थे। उन्होंने झूठा दावा किया कि सरदार पटेल तो जम्मू-कश्मीर पाकिस्तान को सौंपना चाहते थे। यह दावा कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग में कांग्रेस के नेता तारिक हामिद करा ने किया था। तो बात यह है कि हमारे यहां कुछ दलों के नेताओं के दिल में जगह बना चुके हैं जिन्ना।

टीम इंडिया ने जीत के साथ खत्म किया टी-20 वर्ल्ड कप में अभियान, आखिरी मैच में नामीबिया को 9 विकेट से रौंदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड में भारत ने नामीबिया को दुबई के दुबई क्रिकेट स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में 9 विकेट से हरा दिया। रविंद्र जडेजा और रविचंद्रन अश्विन के फिरकी के जादू के बाद सलामी बल्लेबाजों रोहित शर्मा और लोकेश राहुल के अर्धशतकों से भारत ने सोमवार को आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कपके ग्रुप दो के महज औपचारिकता के अपने अंतिम मैच में नामीबिया को नौ विकेट से हराकर लगातार तीसरी जीत दर्ज की। दोनों टीमें पहले ही सेमीफाइनल की दौड़ से बाहर हो चुकी थी। नामीबिया के 133 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारत ने रोहित की 37 गेंद में दो छक्कों और सात चौकों से 56 रन की पारी के अलावा लोकेश राहुल (36 गेंद में नाबाद 54, चार चौके, दो छक्के) के साथ उनकी पहले विकेट की 86 रन की साझेदारी की बदौलत 28 गेंद शेष रहते एक विकेट पर 136 रन बनाकर जीत दर्ज की। राहुल ने सूर्यकुमार यादव (19 गेंद में नाबाद 25 रन) के साथ भी दूसरे विकेट के लिए 50 रन की अटूट साझेदारी की। मैन ऑफ द मैच जडेजा (16 रन पर तीन विकेट), अश्विन (20 रन पर तीन विकेट) और जसप्रीत बुमराह (19 रन पर दो विकेट) की धारदार गेंदबाजी के सामने नामीबिया

की टीम आठ विकेट पर 132 रन ही बना सकी। नामीबिया ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाए और उसकी ओर से डेविड वीज (26) तथा सलामी बल्लेबाज स्टीफन बार्ड (21) ही 20 रन के आंकड़े को पार करने में सफल रहे। भारत ने हालांकि 17 अतिरिक्त रन भी दिए जिससे टीम सम्मानजनक स्कोर तक पहुंचने में सफल रही। लक्ष्य का पीछा करते हुए रोहित शर्मा अपनी पहली ही गेंद पर भाग्यशाली रहे जब शॉर्ट फाइन लेग पर उनका कैच छूट गया और गेंद चार रन के लिए चली गई। दुर्भाग्यशाली गेंदबाज रूबेन ट्रंपलमैन रहे। रोहित ने जीवनदान का फायदा उठाते हुए वाइसी का स्वागत चौके और छक्के के साथ किया।

रोहित ने ट्रंपलमैन पर चौके के साथ टी-20 इंटनेशनल क्रिकेट में 3000 रन पूरे किए। वह यह उपलब्धि हासिल करने वाले तीसरे बल्लेबाज हैं। उनसे पहले भारतीय कप्तान विराट कोहली और न्यूजीलैंड के मार्टिन गुप्टल यह उपलब्धि हासिल कर चुके हैं। रोहित ने आक्रामक तेवर जारी रखते हुए बाएं हाथ के स्पिनर बर्नार्ड शोल्ट्ज पर चौका और छक्का जड़ा जबकि राहुल ने वाइसी की गेंद को दर्शकों के बीच पहुंचाया। भारत ने पावर प्ले में बिना कोई विकेट गंवाए 54 रन बनाए। रोहित ने स्मिट पर चौका और फिर एक रन के साथ 31 गेंद में 24वां अर्धशतक पूरा किया। राहुल ने जेन फ्राइलिंक पर छक्का जड़ा जबकि रोहित भी इसी तेज गेंदबाज पर छक्का मारने की कोशिश में गेंद को हवा में लहरा गए और विकेटकीपर जेन ग्रीन कैच लपकने में कोई गलती नहीं की। सूर्यकुमार यादव ने भी आते ही जेन निकोल लॉफ्टी ईटन पर चौका जड़ा और उनके अगले ओवर में भी गेंद को बाउंड्री के दर्शन कराए। भारत के रनों का शतक 12वें ओवर में पूरा हुआ। राहुल और सूर्यकुमार दोनों ने ट्रंपलमैन पर चौके मारे। भारत को अंतिम छह ओवर में जीत के लिए 11 रन की दरकार थी और राहुल तथा सूर्यकुमार ने भारत को आसानी से लक्ष्य तक पहुंचा दिया। राहुल ने इस बीच लॉफ्टी ईटन की गेंद पर एक रन के साथ 35 गेंद में अर्धशतक भी पूरा किया। भारत की टी-20 इंटरनेशनल टीम के कप्तान के रूप में अपने 50वें और अंतिम मैच में विराट कोहली ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया जिसके बाद माइकल वान लिंगेन (14) ने दूसरे ओवर में बुमराह पर दो चौके जबकि स्टीफन बार्ड (21) ने मोहम्मद शमी पर छक्का जड़कर टीम को सकारात्मक शुरूआत दिलाई। लिंगेन हालांकि बुमराह की उछाल लेती गेंद को उठाकर मारने की कोशिश में मिड आफ पर शमी को आसान कैच दे बैठे। जडेजा ने अगले ओवर में क्रेग विलियम्स को खाता खोले बिना ऋषभ पंत के हाथों स्टंप कराया। पावर प्ले में नामीबिया ने दो विकेट पर 34 रन बनाए। बार्ड ने जडेजा पर अपना पहला चौका जड़ा लेकिन बाएं हाथ के इस स्पिनर ने इसी ओवर में उन्हें एलबीडब्ल्यू कर दिया। अश्विन ने जेन निकोल लॉफ्टी ईटन (05) को स्लिप में रोहित के हाथों कैच कराने के बाद कप्तान गेराहार्ड इरासमस (12) को पंत के हाथों कैच कराके नामीबिया का स्कोर पांच विकेट पर 72 रन किया। जडेजा की गेंद पर रोहित ने कवर में जेजे स्मिट (09) का शानदार कैच लपका जबकि अश्विन ने जेन ग्रीन (00) को बोल्ड किया।

विराट कोहली ने बनाया अनोखा रिकॉर्ड, एमएस धोनी की बराबरी की

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली ने नामीबिया के खिलाफ टी-20 वर्ल्ड कप में खेले गए मुकाबले में एक अनोखा रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया। नामीबिया के खिलाफ विराट कोहली ने बतौर कप्तान 50 वां टी-20 इंटरनेशनल मैच खेला। इसी के साथ उन्होंने धोनी के खास रिकॉर्ड की बराबरी की। वो धोनी के बाद बतौर टीम कप्तान टीम इंडिया के लिए 50 टी-20 खेलने वाले दूसरे वाले खिलाड़ी बन गए हैं। इतना ही नहीं वो धोनी के बाद टीम इंडिया के ऐसे दूसरे खिलाड़ी हैं, जिसने भारत की तरफ से 50 टेस्ट, वनडे और टी-20 इंटरनेशनल में भारत की कप्तानी की है। विराट कोहली ने पहले ही ऐलान कर दिया था कि वो टी-20 वर्ल्ड कप के बाद टीम इंडिया की कप्तानी छोड़ देंगे। हालांकि वो वनडे और टेस्ट फॉर्मेट में भारत के कप्तान बने रहेंगे। कोहली ने टॉस के बाद संकेत दिए कि रोहित शर्मा टी-20 की कप्तानी संभाल सकते हैं। विराट ने टॉस के बाद कहा कि मेरे लिए टीम को लीड करना सम्मान की बात है। मुझे मौका दिया गया और मैंने अपना बेस्ट देने की कोशिश की। लेकिन यह दूसरों के लिए जगह बनाने और आगे बढ़ने के बारे में है। टीम ने जिस तरह से खेला है, उस पर मुझे बहुत गर्व है। अब मुझे लगता है कि इस टीम को आगे बढ़ाने के लिए दूसरों को जिम्मेदारी देने का समय आ गया है। जाहिर तौर पर रोहित यहां हैं और वह कुछ समय से चीजों को देख रहे हैं।

विराट कोहली ने इशारों में बताया, कौन होगा टी-20 में भारतीय टीम का अगला कप्तान

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में भारतीय कप्तान के तौर पर आईसीसी विश्व कप 2021 के सुपर 12 चरण में नामीबिया के खिलाफ आखिरी बार मैदान पर उतरे विराट कोहली ने कहा है कि देश की टीम का नेतृत्व करना उनके लिए सम्मान की बात है। कप्तान के तौर पर कोहली के आखिरी टी20 इंटरनेशनल मैच के अलावा यह हेड कोच रवि शास्त्री और कोचिंग स्टाफ के अन्य सदस्यों का यह आखिरी मुकाबला है। कोहली ने नामीबिया के खिलाफ टॉस के बाद इशारों में बता दिया कि टी-20 में भारतीय टीम का अगला कप्तान कौन होगा। विराट ने टॉस के बाद कहा, 'हम गेंदबाजी करना चाहेंगे। टॉस ने यहां काफी अहम भूमिका निभाई है। हम जो चाहते हैं, वह शुरूआत से अच्छा करना है। मेरे लिए यह (टीम को लीड करना) सम्मान की बात है। मुझे मौका दिया गया और मैंने अपना बेस्ट देने की कोशिश की। लेकिन यह दूसरों के लिए जगह बनाने और आगे बढ़ने के बारे में है। टीम ने जिस तरह से खेला है, उस पर मुझे बहुत गर्व है। अब मुझे लगता है कि इस टीम को आगे बढ़ाने के लिए दूसरों को जिम्मेदारी देने का समय आ गया है। जाहिर तौर पर रोहित यहां हैं और वह कुछ समय से चीजों को देख रहे हैं।'

उम्मीद की जा रही है कि सीमित ओवरों के उपकप्तान रोहित खेल के सबसे छोटे प्रारूप में कोहली की जगह लेंगे। नामीबिया के खिलाफ विराट का टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में बतौर कप्तान यह 50वां और आखिरी मैच है। 2017 में टी20 इंटरनेशनल मैचों में पहली बार कप्तानी करने के बाद कोहली ने कुछ महीने पहले ही कहा था कि वह टी20 विश्व कप 2021 के बाद कप्तानी छोड़ देंगे। कोहली की जगह अब रोहित शर्मा भारतीय टीम की कप्तानी कर सकते हैं। कोहली अब केवल वनडे और टेस्ट मैचों में ही भारत की कप्तानी करेंगे। कोहली ने अबतक 49 टी20 इंटरनेशनल मैचों में भारत की कप्तानी की है, जिसमें से टीम को 32 मैचों में जीत मिली। नामीबिया के खिलाफ मैच के बाद जब विराट से यह पूछा गया कि क्या कप्तानी छोड़ने के बाद मैदान पर उनके एग्रेसन यानि के आक्रामकता में बदलाव आएगा, तो उन्होंने कहा कि जिस दिन वह मैदान पर अपनी आक्रामकता छोड़ देंगे, उस दिन वह क्रिकेट खेलना बंद कर देंगे। कोहली ने मैच के बाद कहा,' मेरी आक्रामकता कभी बदलने वाली नहीं है। जिस दिन ऐसा होगा, मैं क्रिकेट खेलना बंद कर दूंगा। कप्तान बनने से पहले भी, मैंने हमेशा किसी न किसी तरह से योगदान देना पसंद किया है। मैं हमेशा अपना 120 प्रतिशत देने की कोशिश करता हूं। भारत की कप्तानी करना गर्व की बात है। मुझे लगा कि यह मेरे वर्कलोड को मैनेज करने का सही समय था। कप्तानी अच्छी ज़िम्मेदारी थी। बतौर कप्तान विराट ने 50 टी20 मैचों में 46 पारियों में 1570 रन बनाए। इसमें 47.58 का उनका औसत रहा और साथ ही 140 से ज्यादा का स्ट्राइक रेट रहा। कोहली ने बतौर भारतीय कप्तान 13 अर्धशतक लगाए। उन्होंने आगे कहा, 'एक टीम के रूप में हमने अच्छा प्रदर्शन किया, भले ही हम इस टी20 विश्व कप में आगे नहीं जा पाए। जिस तरह से हमने पिछले तीन मैच खेले हैं, वह सकारात्मक बात रही है। हम टॉस का बहाना देने वाली टीम नहीं है। पहले दो मैचों में हम निडर नहीं थे। मैं सभी कोच का धन्यवाद करता हूं। हम उनके आभारी है क्योंकि उन्होंने एक संस्कृति बनाई है इस टीम में। हम सभी खिलाड़ियों की ओर से मैं उनका आभार व्यक्त करता हूं।

टी20 से कप्तानी छोड़ने के बाद विराट कोहली ने एग्रेसन को लेकर दिया बड़ा बयान

दुबई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम ने टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के अपने आखिरी मुकाबले में नामीबिया को नौ विकेट से हराकर कप्तान विराट कोहली को शानदार फेयरवेल दिया। विराट का बतौर कप्तान यह आखिरी मैच था। इसके बाद वह टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में भारत की कप्तानी नहीं करेंगे। विराट ने 50 टी20 इंटरनेशनल मैचों में भारत की कप्तानी की, जिसमें से टीम को 32 मैचों में जीत मिली। नामीबिया के खिलाफ मैच के बाद जब विराट से यह पूछा गया कि क्या कप्तानी छोड़ने के बाद मैदान पर उनके एग्रेसन यानि के आक्रामकता में बदलाव आएगा, तो उन्होंने कहा कि जिस दिन वह मैदान पर अपनी आक्रामकता छोड़ देंगे, उस दिन वह क्रिकेट खेलना बंद कर देंगे।

हेड कोच रवि शास्त्री ने विदाई पर कहा- हमने हर टीम को उसके घर में जाकर हराया, राहुल द्रविड़ पर दिया बड़ा बयान

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में भारतीय टीम सोमवार को नामीबिया के खिलाफ अपना आखिरी मैच खेल रही है। टीम इंडिया के हेड कोच रवि शास्त्री का टीम के साथ यह आखिरी मैच है। वहीं, विराट कोहली का भी बतौर कप्तान यह आखिरी टी20 मैच है। शास्त्री के हेड कोच रहते टीम इंडिया ने 70 साल बाद ऑस्ट्रेलिया में पहली बार टेस्ट सीरीज जीती। हालांकि उनके कोच रहते टीम आईसीसी खिताब नहीं जीत पाई। शास्त्री के कोच रहते भारत ने 43 टेस्ट मैचों में से 25 में जीत हासिल की जबकि 13 में हार का सामना करना पड़ा और पांच टेस्ट ड्रॉ रहे।

'हिटमैन' रोहित ने रचा इतिहास

विराट कोहली और मार्टिन गप्टिल के साथ इस स्पेशल क्लब में शामिल हुए

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय सलामी बल्लेबाज रोहित शर्मा ने टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट में इतिहास रचते हुए एक बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली है। रोहित टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में 3000 या उससे ज्यादा रन बनाने वाले दुनिया के केवल तीसरे बल्लेबाज बन गए हैं। रोहित ने आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में नामीबिया के खिलाफ मैच में यह उपलब्धि हासिल की। रोहित 3000 या उससे ज्यादा ळ20करन बनाने वाले दुनिया के तीसरे और भारत के दूसरे बल्लेबाज बन गए है। रोहित से पहले विराट कोहली टी20 इंटरनेशनल मेंस क्रिकेट में 3000 या उससे ज्यादा रन बना चुके हैं। उनके अलावा न्यूजीलैंड के मार्टिन गप्टिल ही तीसरे बल्लेबाज हैं, जो 3000 या उससे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में शामिल है।

'हिटमैन' रोहित ने छक्के के साथ टी-20 इंटरनेशनल क्रिकेट में अपने 3000 रन पूरे किए। उन्होंने 116 टी20 इंटरनेशनल मैचों में यह? उपलब्धि हासिल की। 2007 में टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू करने वाले रोहित अब भारत के अगले टी20 कप्तान बन सकते हैं। रोहित से पहले अबतक विराट कोहली 95 मैचों में 3227 रन बना चुके हैं। इनमें उनके नाम 29 अर्धशतक दर्ज हैं। वहीं, न्यूजीलैंड के मार्टिन गप्टिल के नाम 107 मैचों में 3115 रन है। गप्टिल के नाम 18 अर्धशतक और दो शतक है जबकि रोहित के नाम चार शतक है और 23 अर्धशतक दर्ज है। भारत को अब 17 नवंबर से न्यूजीलैंड के साथ अपने घर में तीन मैचों की टी20 सीरीज खेलनी है और उस सीरीज में रोहित टीम के नए कप्तान बन सकते हैं।

इंग्लैंड को सेमीफाइनल से पहले लगा तगड़ा झटका, जेसन रॉय टी-20 वर्ल्ड कप से हुए बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप में इंग्लैंड को तगड़ा झटका लगा है। इंग्लैंड के बल्लेबाज जेसन रॉय टी-20 वर्ल्ड कप से बाहर हो गए। चोट की वजह वो टी-20 वर्ल्ड कप के बाकी मुकाबले नहीं खेल पाएंगे। उनकी जगह जेम्स विंस को टीम में शामिल किया गया है। विंच पहले से ही रिजर्व खिलाड़ी के तौर पर टीम के साथ मौजूद थे। जेसन रॉय पिंडली में चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो गए हैं। ईसीबी ने इसकी जानकारी दी है। इंग्लैंड के लिए मौजूदा टी-20 वर्ल्ड कप में ये दूसरा झटका है। जेसन रॉय से पहले तेज गेंदबाज टाइमल मिल्स भी जांघ में चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हो चुके हैं। उनकी जगह तेज गेंदबाज रीस टॉप्ले को इंग्लैंड टीम में शामिल किया गया है। जेसन रॉय को शनिवार को सुपर 12 के मैच में साउथ अफ्रीका के साथ मुकाबले में चोट आई थी। इसके बाद वो कराहते हुए मैदान से बाहर चल गए थे। टूर्नामेंट से बाहर होने पर जेसन रॉय ने कहा कि मैं वर्ल्ड कप से बाहर होने से काफी दुखी हूं। यह निगलने के लिए एक एक कड़वी गोली है। मैं टीम के साथियों का सपोर्ट करूंगा और मुझे उम्मीद है कि हम ट्रॉफी उठाएंगे।

गौतम गंभीर ने किया टीम इंडिया का बचाव, फैंस की ये अपील

नई दिल्ली(एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप में सेमीफाइनल की रेस से टीम इंडिया बाहर हो गई है। आज अपने आखिरी लीग मुकाबले में टीम इंडिया नामीबिया से भिड़ेगी। इस बीच टीम इंडिया के बचाव में भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज गौतम गंभीर आए हैं। उन्होंने फैंस से अपील की है कि वो खिलाड़ियों के प्रति ज्यादा कठोर रवैया ना अपनाए। गंभीर मानना है कि एक टूर्नामेंट में बुरे प्रदर्शन के बाद फैंस को किसी नतीजे पर नहीं जाना चाहिए। उन्होंने फैंस से टीम इंडिया का सपोर्ट जारी रखने को कहा। उन्होंने टाइम्स ऑफ इंडिया में लिखे अपने एक कॉलम में कहा,'मैं फैंस से अपील करना चाहूंगा कि वह भारतीय टीम पर गर्व करना जारी रखें। अगर हम मौजूदा वर्ल्ड कप में उनके प्रदर्शन को लेकर उनका आंकलन करते हैं तो टीम के फैंस के तौर पर हम उनका सम्मान नहीं करेंगे और उनके खिलाफ अपनी वफादारी नहीं दिखा पाएंगें। हां, हम पाकिस्तान से हार गए। हां, हम न्यूजीलैंड ने स्ट्रेटजी में हराया। हां, सीमा पार से हमारे दोस्त सेमीफाइनल में हैं और हम नहीं हैं। लेकिन रुकिए। गंभीर ने बायो-बबल में होने वाली कठिनाइयों को लेकर कहा कि वहां जाना और लगातार मैच खेलने के लिए काफी साहस की जरूरत होती है। उन्होंने आगे कहा कि खिलाड़ी बिना ज्यादा ब्रेक लिए एक टूर्नामेंट से दूसरे टूर्नामेंट में कूद रहे हैं। हमें उनकी कठोर आलोचना करने की जगह टीम पर गर्व करना चाहिए। भारत को टी-20 वर्ल्ड कप के शुरूआती मुकाबलों में पाकिस्तान और न्यूजीलैंड के हाथों हार मिली, जिसका खामियाजा टीम को अंतिम चार से बाहर होकर भुगतना पड़ा।

पूर्व क्रिकेटर ने कहा- विराट कोहली को नामीबिया के खिलाफ मैच में ही रोहित शर्मा को कप्तानी सौंप देनी चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी20 वर्ल्ड कप 2021 में निराशाजनक प्रदर्शन के बाद टीम इंडिया अपने आखिरी मैच में आज शाम को नामीबिया से भिड़ेगी। इसके बाद टीम स्वदेश लौट आएगी क्योंकि भारतीय टीम टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में जगह बनाने में विफल रही है। भारतीय कप्तान विराट कोहली का बतौर कप्तान यह आखिरी टूर्नामेंट था। कोहली इस टी20 वर्ल्ड कप के बाद क्रिकेट के सबसे छोटे फॉर्मेट से पहले ही कप्तानी छोड़ने का ऐलान कर चुके थे। कोहली के बाद रोहित शर्मा टीम इंडिया के कप्तान बन सकते हैं। इस बीच, नामीबिया के खिलाफ होने वाले मुकाबले से पहले पूर्व भारतीय क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने कप्तान को सलाह देते हुए कहा है कि कोहली को इसी मैच से रोहित को कप्तानी सौंप देनी चाहिए। मांजरेकर ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर कहा, 'अगर विराट कोहली टी 20 क्रिकेट में एक नई ट्रेंड शुरू करना चाहते हैं, तो वह इस अंतिम मैच में ही रोहित शर्मा को कप्तानी सौंप सकते हैं। तब रोहित शर्मा को आराम नहीं दिया जा सकता है और वह बतौर कप्तान खेल सकते हैं।' कोहली ने 2017 में टी20 कप्तान के रूप में अपना पहला मैच खेला था। तब से उन्होंने 49 टी20 इंटरनेशनल मैचों में भारत की कप्तानी की है, जिसमें से टीम को 29 में जीत मिली है।

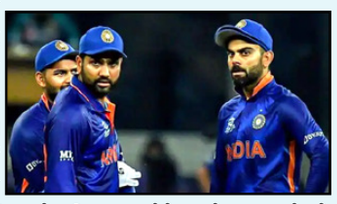

टी20 के बाद क्या विराट कोहली को वनडे और टेस्ट टीम की भी कप्तानी छोड़ देनी चाहिए? सहवाग ने दिया शानदार जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय कप्तान विराट कोहली आज नामीबिया के खिलाफ टी20 विश्व कप 2021 के लीग चरण मैच के बाद टी20 इंटरनेशनल मैचों में कप्तानी करना छोड़ देंगे। विराट का टी20 इंटरनेशनल क्रिकेट में बतौर कप्तान यह 50वां और आखिरी मैच होगा। 2017 में टी20 इंटरनेशनल मैचों में पहली बार कप्तानी करने के बाद कोहली ने कुछ महीने पहले ही कहा था कि वह टी20 विश्व कप 2021 के बाद कप्तानी छोड़ देंगे। कोहली की जगह अब रोहित शर्मा भारतीय टीम की कप्तानी कर सकते हैं। कोहली अब केवल वनडे और टेस्ट मैचों में ही भारत की कप्तानी करेंगे। टी20 टीम की कप्तानी छोड़ने के बाद क्या कोहली को वनडे और टेस्ट टीम की भी कप्तानी छोड़ देनी चाहिए। फैन्स के एक सवाल के जवाब में भारतीय टीम के पूर्व सलामी बल्लेबाज वीरेंद्र सहवाग ने शानदार जवाब दिया है। सहवाग ने 'वीरूगिरी डॉट कॉम' पर कहा, 'यह विराट का फैसला है लेकिन मुझे नहीं लगता कि उन्हें बाकी वनडे और टेस्ट की कप्तानी

छोड़नी चाहिए। अगर वह केवल बतौर खिलाड़ी खेलना चाहते हैं तो यह उसका फैसला है। मुझे लगता है कि भारत उनकी कप्तानी में अच्छा खेल रहा है। बतौर कप्तान उनका रिकार्ड शानदार है और यह उनका निजी फैसला है कि वह वनडे और टेस्ट कप्तान बने रहना चाहते हैं या नहीं। मेरे हिसाब से उन्हें भारत को फ्रंट से लीड करना चाहिए क्योंकि वह एक अच्छा खिलाड़ी है। एक अच्छा कप्तान है जो आगे से लीड करता है।'

कोहली ने अबतक 49 टी20 इंटरनेशनल मैचों में भारत की कप्तानी की है, जिसमें 29 मैचों में टीम इंडिया को जीत मिली। भारत को अब 17 नवंबर से न्यूजीलैंड के साथ अपने घर में तीन मैचों की टी20 सीरीज खेलनी है और उस सीरीज में रोहित टीम के नए कप्तान बन सकते हैं। टी20 के बाद भारत को टेस्ट सीरीज भी खेलनी है। विराट की कप्तानी में भारत को कोई भी आईसीसी खिताब नहीं जीत पाया।

सहवाग ने आगे कहा, 'वो टेस्ट कप्तान के रूप में अपना खेल जारी रखने के लिए तैयार हैं और अब ये देखना बाकी है कि क्या सेलेक्टर्स वनडे के लिए भी नए कप्तान का चयन करते हैं या नहीं। रोहित शर्मा वनडे में उपकप्तान रहे हैं और अगर सेलेक्टर्स वनडे टीम के लिए नए कप्तान के नाम की घोषणा करते हैं तो रोहित का नाम सबसे आगे होगा।

केसीआर ने केंद्र सरकार पर साधा निशाना, पूछा- 2 करोड़ नौकरियां देने के वादे का क्या ?

हैदराबाद (एजेंसी)। तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने सोमवार को केंद्र सरकार पर जमकर निशाना साधा। इस दौरान उन्होंने पूछा कि क्या केंद्र राज्य के उबले चावल खरीदेगा या नहीं ? उन्होंने कहा कि जब मैं उनका (भाजपा) समर्थन नहीं करता तो वे मुझे देशद्रोही बताते हैं। इतना ही नहीं अगर भाजपा के खिलाफ कोई बोलता है तो वो उसे अर्बन नक्सली करार देते हैं। मैं एक आसान सा सवाल पूछ रहा हूं कि क्या केंद्र राज्य के उबले चावल खरीदेगा या नहीं ? एक समाचार एजेंसी के मुताबिक तेलंगाना के मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव ने कहा कि हमने राज्य में 1.35 लाख लोगों को रोजगार दिया है और 70,000 और नौकरियां देंगे। अध्ययनों की बात करें तो तेलंगाना में बाकी राज्यों के तुलना में बेरोजगारी दर कम है। लेकिन केंद्र सरकार के उस वादे का क्या हुआ जिसमें उन्होंने 2 करोड़ नौकरियां देने का वादा किया था। उन्होंने कहा कि तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) 12 नवंबर को सभी विधानसभा क्षेत्रों में धरने का आयोजन करेगी। इस दौरान लाखों किसान केंद्र सरकार से पूरे खरीफ (गर्मी या मानसून की फसल) धान की खरीद की मांग करेंगे। इसके साथ ही उन्होंने कहा केंद्र सरकार पर पद्म पुरस्कारों को लेकर सवाल खड़ा किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि केंद्र हमारे राज्य के लोगों को पद्म पुरस्कार नहीं दे रहा है, वे लोग हमें नजरअंदाज कर रहे हैं।

हम सब पर है दुनिया की सबसे प्राचीन विरासत को सुरक्षित रखने का दायित्व, पर्व और त्योहार इसी का हिस्साः योगी आदित्यनाथ

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रामपुर में सोमवार को 64 करोड़ लागत की 20 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। इस दौरान उन्होंने भारत की जय और वंदे मातरम का नारा लगवाया। मुख्यमंत्री ने कहा कि भारत विरासत का देश है और हर हाल में दुनिया की सबसे प्राचीन विरासत को सुरक्षित और संरक्षित करने का दायित्व भी हम सबपर है। प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में एक भारत श्रेष्ठ भारत की दिशा की तरह कदम बढ़ाया है। इसका सिलसिला है कश्मीर में 370 की समाप्ति और अयोध्या में श्री राम मंदिर का निर्माण। उन्होंने कहा कि हमारे पर्व और त्योहार इसी विरासत का हिस्सा है लेकिन कुछ लोगों को यह अच्छा नहीं लगता है। उन लोगों को इस रामपुर की विरासत को भी नष्ट करने का सड्यंत्र किया था। इसीलिए हम लोग बार-बार आए थे, यह कहने के लिए कि रामपुर की विरासत को भी अक्षुण्य रखेंगे और किसी की संपत्ति पर भूमाफियाओं को कब्जा नहीं करने देंगे। इसीलिए हम यहां पर आए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि कानून-व्यवस्था की बेहतर स्थिति को बनाए रखने के

लिए केंद्र और प्रदेश सरकार ने प्रयास किया है। इसी बीच मुख्यमंत्री ने कहा कि विकास के कार्य में कोई भेदभाव नहीं लेकिन तुष्टिकरण के नाम पर सुरक्षा से भी कोई खिलवाड़ नहीं होना चाहिए। रामपुर जनपद में 147 भू-माफिया पर कार्रवाई हुई है। जिसमें 640 हेक्टेयर भूमि को मुक्त कराने में सफलता मिली। उन्होंने कहा कि बिना भेदभाद के शासन की योजना का लाभ गांव, गरीब, किसान, महिलाओं और समाज के हर तबके के लोगों को लाभ देने का विकास हुआ है। 1,70,000 परिवारों को व्यक्तिगत शौचालय उपलब्ध कराए गए। 5,262 गरीबों को मकान उपलब्ध कराया गया।

एमपी में 50 फीसदी से ज्यादा वोट शेयर के लिए काम करेगी बीजेपी : मुरलीधर राव

भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश में उपचुनाव के नतीजों के बाद बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा और प्रदेश प्रभारी मुरलीधर राव ने बीजेपी कार्यालय में संयुक्त प्रेस कांफ्रेंस किया। जहां मुरलीधर राव ने कहा कि प्रदेश में बीजेपी 50 फीसदी से ज्यादा वोट शेयर के लिए काम करेगी। इसके साथ ही मिशन 2023 विधानसभा के लिए बीजेपी ने यह टारगेट रखा है। मुरलीधर राव ने कहा कि मध्य प्रदेश में सम्पन्न हुए उपचुनाव में सरकार और संगठन ने समन्वय के साथ काम किया है। मुरलीधर राव ने कहा कि धारणा

थी कि उपचुनाव सरल नहीं था लेकिन चुनौतीपूर्ण जोबट और पृथ्वीपुर विधानसभा में हमने रिकॉर्ड जीत दर्ज की है।

उन्होंने कहा कि एक समय में कांग्रेस पंचायत से संसद तक मजबूत थी, वैसे अब बीजेपी मजबूत रहेगी। वहीं आने वाले समय में बीजेपी का 50 फीसदी से ज्यादा वोट रहेगा। जिसके लिए हम हर बूथ पर बीजेपी को मिलने वाले वर्तमान वोट से 10 फीसदी वोट और बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। इसी कड़ी में बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने कहा कि दुनिया के सबसे ताकतवर नेता नरेंद्र मोदी का मार्गदर्शन मिला है। 100 करोड़ से ज्यादा वैक्सीनेशन होने के लिए सभी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी स्वगात किया।

क्या प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण पराली है ? गोपाल राय ने दिल्ली के सभी विभागों की बुलाई बैठक

नयी दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में अब सांस लेना बेहद मुश्किल होता जा रहा है। हर साल की तरह इस साल भी दीवाली के बाद दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण के कारण धुंध देखी जा सकती है।

वहीं वायु गुणवत्ता लगातार तीन दिन तक गंभीर श्रेणी में रहने के बाद सोमवार को थोड़े सुधार के बाद बहुत खराब श्रेणी में दर्ज की गई और सुबह 9 बजे वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 385 पर रहा। इसी बीच दिल्ली के पर्यावरण मंत्री गोपाल राय का बयान सामने आया है। पर्यावरण मंत्री ने बताया कि प्रदूषण में कमी लाने के तौर तरीकों पर विचार-विमर्श करने के लिए सभी संबंधित विभागों की एक संयुक्त बैठक बुलाई गई है। समाचार एजेंसी एएनआई के मुताबिक, पर्यावरण मंत्री गोपाल राय ने बताया कि प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण पराली है, कल भी 4,000 से ज्यादा जगहों पर पराली जली है। इसको नियंत्रित करने के लिए हम केंद्र सरकार से बार-बार बात कर रहे हैं।

दिल्ली में प्रदूषण को कम करने के लिए हमने कल दिल्ली के सभी विभाग को संयुक्त बैठक के लिए बुलाया है। प्रदूषण के मुद्दे पर मंगलवार को होने वाली बैठक में पर्यावरण विभाग, दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति, दिल्ली विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग एवं नगर निगमों समेत कई विभागों के पदाधिकारी शामिल होंगे। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की वायु गुणवत्ता पूवार्नुमान एजेंसी 'सफर' के मुताबिक सोमवार को दिल्ली के पीएम 2.5 प्रदूषण में पराली जलाने का 48 फीसदी योगदान था जो तीन साल में सर्वाधिक है।

संबंधों की 50वीं वर्षगांठ मना रहे भारत-बांग्लादेश, पहली बार 2 बांग्लादेशी हस्तियों को दिया गया पद्म पुरस्कार

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने आज राष्ट्रपति भवन में चर्चित हस्तियों को पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया। पद्म पुरस्कारों के वितरण का आयोजन राष्ट्रपति भवन के ऐतिहासिक दरबार हाल में किया गया। इस बार दो वर्षों के पुरस्कार दिए गए। उल्लेखनीय है कि पद्म पुरस्कार तीन श्रेणियों में दिए जाते हैं - पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्म श्री। इन पुरस्कारों की घोषणा हर साल गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर की जाती है। लेकिन इस बार के पद्म पुरस्कार की खास बात ये रही कि पहली बार बांग्लादेश की दो शख्सियतों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनमें भारत के पूर्व उच्चायुक्त मुअज्जम अली और 1971 के युद्ध के नायक कर्नल काजी सज्जाद अली जहीर शामिल हैं।भारत में पूर्व उच्चायुक्त मुअज्जम अली और 1971 के युद्ध नायक कर्नल काजी सज्जाद अली जहीर भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों में से एक पद्मश्री से सम्मानित होने वाले पहले बांग्लादेशी नागरिक बने। मुअज्जम अली को समारोह में मरणोपरांत सम्मानित किया गया। जहां जनवरी

में नामित अन्य पुरस्कार विजेताओं को भी उनके पुरस्कार प्राप्त हुए।

भारत-बांग्लादेश दोनों दी देश बांग्लादेश की मुक्ति की 50 वीं वर्षगांठ और भारत के साथ राजनयिक संबंधों के 50 वें वर्ष के साथ-साथ शेख मुजीबुर रहमान की शताब्दी मना रहे हैं। टाइम्स ऑफ इंडिया की रिपोर्ट के अनुसार 16 दिसंबर के विजय दिवस समारोह में भारत की ओर से एक उच्च स्तरीय यात्रा देखने को मिल सकती है। बांग्लादेशी मीडिया रिपोर्टों के अनुसार राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद इस अवसर पर बांग्लादेश की यात्रा कर सकते हैं। हालांकि भारत सरकार के सूत्रों ने कहा कि राष्ट्रपति के कार्यक्रम पर अभी तक कोई स्पष्टता नहीं है। भारत-बांग्लादेश हर साल 6 दिसंबर को मैत्री दिवस के रूप में मनाएंगे। इस वर्ष यह अवसर अमेरिका, ब्रिटेन, थाईलैंड सहित 18 अन्य देशों में मनाया जाएगा जहां बांग्लादेशी और भारतीय प्रवासी हैं। इसी दिन भारत ने बांग्लादेश को मान्यता दी थी।

अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है श्री रामायण रेलयात्रा, काशी विश्वनाथ सहित सभी धार्मिक स्थलों के दिव्य दर्शन कर सकेंगे श्रद्धालु

(एजेंसी) (एजेंसी)। नयी दिल्ली। कोरोना महामारी से बुरी तरह से प्रभावित पर्यटन उद्योग में अब सुधार आता दिख रहा है। भारतीय रेलवे के उपक्रम आईआरसीटीसी में धार्मिक स्थलों के दर्शन के लिए बढ़ावा देने के लिए रेल यात्रा चलाने की शुरूआत की गई है। सबसे अच्छी बात है कि भगवान राम में आस्था रखने वाले पर्यटकों के लिए आईआरसीटीसी ने 'देखो अपना देश' कार्यक्रम के तहत 'श्री रामायण यात्रा' की शुरूआत की है। इसके साथ ही पर्यटकों के उत्साह को देखते हुए क्कठ्ठळ्उ ने 7 नवंबर के बाद एक और ट्रिप का फैसला किया है। जिसमे श्री रामायण यात्रा की दूसरी ट्रिप 12 दिसंबर से शुरू होनी है। यह यात्रा 17 दिनों की होगी। जिसमे यात्रा के दौरान पर्यटक रामलला और हनुमानगढ़ी

के साथ-साथ सीता जन्म स्थान और काशी विश्वनाथ सहित अन्य धार्मिक स्थलों के भी दिव्य दर्शन कर सकेंगे।

आईआरसीटीसी के अधिकारियों के मुताबिक, भारतीय रेलवे (क्ल्र्ल्लि फ्रं६८) द्वारा धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए चलाई जा रही इस श्री रामायण यात्रा के लिए पर्यटकों ने जबरदस्त उत्साह को दिखाया है। इस यात्रा के लिए पहली ट्रेन दिल्ली के सफदरजंग रेलवे स्टेशन से आज (रविवार) यानी 7 नवंबर से शुरू है। जो पर्यटकों को प्रभु श्रीराम के बचपन से जुड़े एवं सभी महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों का दर्शन एवं भ्रमण कराएगी। इस टूरिस्ट ट्रेन की सीटें जाने वाले सभी पर्यटकों द्वारा पहले से आरक्षित कराई जा चुकी हैं। यही वजह है कि आईआरसीटीसी ने एक बार फिर 12 नवंबर से दूसरे नए ट्रिप का प्लान किया है।

यह श्री रामायण यात्रा पूरे 17 दिनों में पूरी हो जाएगी । यात्रा का पहला पड़ाव प्रभु श्री राम का जन्म स्थान अयोध्या होगा। जहां श्री राम जन्मभूमि मंदिर, श्री हनुमान मंदिर व नंदीग्राम में भरत मंदिर का दर्शन व भ्रमण कराया जाएगा। अयोध्या से रवाना होकर यह ट्रेन फिर सीतामढ़ी जाएगी , जहां जानकी जन्म स्थान व नेपाल के जनकपुर स्थित राम जानकी मंदिर के दर्शन कराए जाएंगे। फिर ट्रेन का अगला पड़ाव भगवान शिव की नगरी काशी यानी बनारस होगा , जहां से पर्यटक बसों द्वारा बनारस केसभी प्रसिद्ध मंदिरों सहित सीता समाहित स्थल, प्रयाग व चित्रकूट का दर्शन करेंगे । चित्रकूट से चलकर यह ट्रेन नाशिक जाएगी जहा पंचवटी और त्रयम्बकेश्वर मंदिर का दर्शन कराएगी। इस ट्रेन का आखिरी पड़ाव रामेश्वरम होगा । फिर वहाँ से चलकर यह ट्रेन 17वें दिन दिल्ली वापस पहुंचेगी। इस दौरान ट्रेन द्वारा लगभग 7500 किलोमीटर की यात्रा पूरी की जाएगी। सबसे खास बात यह है कि यह ट्रेन अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस है । इस पूर्णतया वातानुकूलित पर्यटक ट्रेन में यात्री कोच के अतिरिक्त दो रेल डाइनिंग रेस्तरां और एक आधुनिक किचन कार व यात्रियों के लिए फुट मसाजर, मिनी लाइब्रेरी, आधुनिक एवं स्वच्छ शौचालय और शॉवर क्यूबिकल आदि की सुविधा भी उपलब्ध होगी। साथ ही सुरक्षा के लिए सुरक्षा गार्ड, इलेक्ट्रॉनिक लॉकर एवं सीसीटीवी कैमरे भी उपलब्ध रहेंगे।

स्वर्णिम हिमाचल दृष्टिपत्र का कार्यान्वयन

शिमला (एजेंसी)। प्रदेश सरकार के एक प्रवक्ता ने बताया कि आज यहां आयोजित राज्य मंत्रिमण्डल की बैठक में मंत्रिमण्डल ने भारतीय जनता पार्टी के स्वर्णिम हिमाचल दृष्टिपत्र-2017 के कार्यान्वयन में प्रगति की समीक्षा की। सामान्य प्रशासन विभाग ने इस सम्बन्ध में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, स्वास्थ्य एवं शिक्षा विभाग के सम्बन्ध में विस्तृत प्रस्तुति दी। प्रवक्ता ने कहा कि प्रदेश में सामाजिक सुरक्षा पेंशन योजना के अन्तर्गत वृद्धजनों को लाभान्वित करने के दृष्टिगत 60 से 69 वर्ष की आयु के वृद्धजनों, जिनकी समस्त स्त्रोतों से वार्षिक आय 35000 रुपये से अधिक न हो को वर्तमान में 850 रुपये प्रतिमाह वृद्धावस्था पेंशन प्रदान की जा रही है। वर्ष 2021-22 से 65 वर्ष से 69 वर्ष आयु वर्ग की वरिष्ठ महिलाओं को यह वृद्धावस्था पेंशन बिना आय सीमा शर्त के 1000 रुपये प्रतिमाह प्रदान की जा रही है। प्रदेश सरकार ने जनवरी 2018 से 80 वर्ष से

अधिक आयु के वृद्धजनों को बिना आयु सीमा शर्त के दी जाने वाली पेंशन के लिए आयु सीमा घटाकर 70 वर्ष कर दी है। वर्तमान में 70 वर्ष या अधिक आयु के वृद्धजनों को 1500 रुपये प्रतिमाह पेंशन बिना आय सीमा के प्रदान की जा रही है। पिछले तीन वर्षों के दौरान सरकार द्वारा 1,95,000 नये पात्र लाभार्थियों को पेंशन स्वीकृत की गई, जिस पर 2152.47 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि सशक्त महिला योजना के अन्तर्गत सभी ग्राम पंचायतों, नगर निगम के वार्डों और नगर परिषदों में 3765 सशक्त महिला केन्द्रों का गठन किया जा चुका है। आंगनवाड़ी कार्यकताओं व सहायिकाओं की मांगों तथा समस्याओं के लिए उनके प्रतिनिधियों के साथ नियमित रूप से बैठकों का आयोजन किया जा रहा है। वर्तमान प्रदेश सरकार ने वर्ष 2018 में आंगनवाड़ी कार्यकताओं का मानदेय 4750 रुपये से बढ़ाकर वर्ष 2021 में 7300 रुपये तथा आंगनवाड़ी सहायिकाओं का मानदेय वर्ष 2018 में 2400 रुपये से बढ़ाकर वर्ष 2021 में 3800 रुपये तथा मिनी आंगनवाड़ी कार्यकताओं का मानदेय वर्ष 2018 में 3300 रुपये से बढ़ाकर 5200 रुपये किया है।

भाजपा तेजस्वी, ओजस्वी और विजयी बन कर निकलेगी : कश्यप

शिमला (एजेंसी)। भजापा प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने कहा कि भजापा की राष्ट्रीय कार्यकारणी बैठक में यह तय हुआ कि देश में 8 लाख बूथों पर बूथ कमिटी की रचना का काम पूरा हो गया है , बाकी बचे बूथों पर बूथ कमिटी बनाने का काम 25 दिसंबर 2021 तक पूरा किया जाएगा । उन्होंने बताया कि पन्ना प्रमुख बनाने का काम भी 6 अप्रैल 2022 तक पूरे करने हैं । बूथों पर माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लोकप्रिय कार्यक्रम ' मन की बात ' सुनने के कार्यक्रम का प्रयास सराहनीय है । मई 2022 तक देश के हर बूथ पर पार्टी कार्यकताओं और बूथ के विशिष्ट लोगों के साथ मिल कर मन की बात कार्यक्रम सुनने की व्यवस्था की जायेगी । उन्होंने बताया कि बैठक में पांच राज्यों के आगामी विधानसभा चुनावों पर चर्चा हुई और इन चुनावों की तैयारी को लेकर देश के नेतृव नेसंतोष व्यक्त किया गया । राष्टीय नेतृत्व ने बैठक में विश्वास व्यक्त किया कि भाजपा और तेजस्वी , ओजस्वी और विजयी बन कर निकलेगी । उन्होंने बताया कि कोविड के चलते हमें वैक्सीनेशन को धयान में रखते हुए अब ' हर घर दस्तक ' कार्यक्रम को सफल बनाना है , भारतीय जनता पार्टी के 10 लाख हेल्थ वालंटियर्स इसमें सहयोग करेंगे । उन्होंने कहा कि हाल ही में संपन्न हुए उप चुनावों की भी चर्चा हुई । तेलंगाना में पार्टी की भव्य जीत , तमिलनाडु के पंचायत चुनाव में भाजपा का बेहतर प्रदर्शन , असम - बिहार और मध्य प्रदेश में भाजपा का शानदार प्रदर्शन और चुनौतियों के बावजूद हरियाणा की एलानाबाद विधान सभा उप - चुनाव पर भाजपा के मत में लगभग 10 % की वृद्धि पर भी रोशनी डाली गयी । उन्होंने कहा कि बैठक में सभी 36 प्रदेशों से कार्यकारी सदस्य , मुख्यमंत्री एवं उप मुख्यमंत्री , प्रदेश अध्यक्ष वर्चुअली जुड़े थे । कार्यक्रम को हिमाचल के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह , गोवा के मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत , उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी और पंजाब के प्रदेश अध्यक्ष अश्विनी शर्मा ने भी संबोधित किया ।

उपहार अग्निकांड मामलाः सबूतों से छेड़छाड़ करने पर अंसल बंधुओं को 7 साल की कैद, अदालत ने 2.25 करोड़ का जुमार्ना भी लगाया

नयी दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली की पटियाला हाउस अदालत ने साल 1997 उपहार सिनेमा अग्निकांड में साक्ष्यों के साथ छेड़छाड़ करने के मामले में अंसल बंधुओं को 7 साल की सजा सुनाई है। इसके साथ ही अदालत ने सुशील और गोपाल अंसल पर 2.25 करोड़ रुपए का जुमार्ना लगाया है। आपको बता दें कि उपहार सिनेमा अग्निकांड में 59 लोगों की मौत हुई थी। इस मामले में अदालत ने अंसल बंधुओं, दिनेश चंद शर्मा. पीपी बत्रा और अनूप सिंह को दोषी करार दिया था। जबकि सुनवाई के दौरान दो अन्य आरोपियों हरस्वरूप पंवार और धर्मवीर मल्होत्रा की मौत हो गई थी।

यूएनः अकाल के कगार पर करोड़ों और लोग

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोरोना महामारी और संघर्षों ने खाद्य असुरक्षा का सामना करने वाले लोगों की संख्या को साढ़े चार करोड़ तक पहुंचा दिया है. अफगानिस्तान तेजी से ₹दुनिया का सबसे बड़ा मानवीय संकट₹ वाला देश बन गया है.विश्व खाद्य कार्यक्रम ने सोमवार को एक बयान में आगाह किया है कि 43 देशों में बिल्कुल अकाल के मुहाने पर पहुंचे लोगों की संख्या बढ़कर साढ़े चार करोड़ हो गई है. ऐसे लोगों की संख्या इस साल 30 लाख और बढ़ गई है. विश्व खाद्य कार्यक्रम (डब्ल्यूएफपी) के प्रमुख डेविड बियस्ली ने एक बयान में कहा, ₹करोड़ लोग एक गहरी खाई में घूरने को मजबूर हैं₹ उन्होंने आगे कहा, ₹हमारे सामने संघर्ष, जलवायु परिवर्तन और कोविड-19 जैसे संकटे हैं, जो तीव्र रूप से भूखे लोगों की संख्या को बढ़ा रहे हैं. और

ताजा आंकड़ों से पता चलता है कि अब 4.

5 करोड़ से अधिक लोग भुखमरी के कगार की ओर बढ़ रहे हैं₹ इस साल के शुरूआत में अत्यंत भुखमरी का सामने करने वाले लोगों की संख्या करीब 4.2 करोड़ थी, जबकि साल 2019 में ऐसे लोगों की संख्या दो करोड़ 70 लाख थी. मुख्य रूप से अफगानिस्तान में खाद्य असुरक्षा के आपातकालीन स्तर का सामना करने वालों को इस वृद्धि के लिए जिम्मेदार ठहराया गया. बियस्ली के मुताबिक ₹मानव निर्मित संघर्ष अस्थिरता को बढ़ा रहे हैं और अकाल की एक विनाशकारी नई लहर को शक्ति दे रहे हैं जो दुनिया को अपनी चपेट में लेने की ताकत रखती है₹ अत्यंत भुखमरी के हालात का सामना करने वाले लोगों की संख्या में मुख्य वृद्धि अफगानिस्तान, इथियोपिया, हेती, सोमालिया, अंगोला, केन्या और बुरुंडी में दर्ज की गई है. अफगानिस्तान क्यों बन गया भूख का हॉट स्पॉट डेविड बियस्ली ने हाल ही में अफगानिस्तान में हालात जानने के लिए वहां का दौरा किया था, जिसके बाद उन्होंने यह बयान दिया है

लोकतंत्र पर अमेरिकी सम्मेलन में मोदी को न्योते पर आपत्ति

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका में लोकतंत्र पर अपनी तरह का पहला वैश्विक सम्मेलन हो रहा है. लेकिन मानवाधिकार कार्यकताओं ने भारत के नरेंद्र मोदी सहित ऐसे नेताओं को बुलाने पर आपत्ति जताई है जिनका रिकॉर्ड संदिग्ध है.अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडेन समिट फॉर डेमोक्रेसी के नाम से आयोजित सम्मेलन में भाषण देने के लिए तैयारी कर रहे हैं. सौ से ज्यादा देशों का यह अपनी तरह का पहला सम्मेलन है जिसमें दुनियाभर में लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवाधिकारों के हनन पर बात होनी है. लेकिन बहुत से मानवाधिकार कार्यकर्ता इस सम्मेलन को इसलिए शक की निगाह से देख रहे हैं कि कुछ ऐसे नेताओं को इस सम्मेलन में शामिल होने के लिए बुलाया गया है ।

धरती की तरफ बढ़ रहा भयानक खतरा, नासा ने जारी की चेतावनी

नई दिल्ली (एजेंसी)। अंतरिक्ष और साइंस की दुनिया अपने आप में एक अजूबा है। कई बार अंतरिक्ष में घूम रहे क्षुद्रग्रह जिसको एस्टेरॉयड कहा जाता है, यह धरती के लिए खतरा पैदा कर देते हैं। इतिहास में ऐसे कई उदाहरण भी सामने आए हैं जब इन एस्टेरॉयड से धरती को नुकसान भी हुआ है। इसी बीच हाल ही में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने चेतावनी दी है कि एक विशाल एस्टेरॉयड धरती की ओर आ रहा है। हैरानी की बात यह है कि यह एस्टेरॉयड फ्रांस के एफिल टॉवर के आकार से भी बड़ा है। दरअसल, अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने एक ऐसे एस्टेरॉयड के धरती से गुजरने की चेतावनी दी है, जिसका

आकार दुनिया की सबसे ऊंची बिल्डिंग्स में शुमार फ्रांस के एफिल टॉवर से भी बड़ा है। नासा ने इस एस्टेरॉयड को संभावित रूप से खतरनाक ऐस्?टरॉइड की श्रेणी में रखा है। इस एस्टेरॉयड के धरती से टकराने पर परिणाम भयानक हो सकता है लेकिन राहत की बात यह है कि यह हमारी धरती से काफी दूर से गुजर जाएगा और इतना ही नहीं धरती से होकर गुजरने के बाद इस तरह एस्टेरॉयड कम से कम 10 साल तक यहां नहीं आएगा।

वैज्ञानिकों के मुताबिक इस एस्टेरॉयड का नाम 4660 ठीश्४२ है और यह फुटबॉल की पिच से करीब तीन गुना बढ़ा है। नासा के अनुमान के मुताबिक यह 11 दिसंबर तक धरती के बेहद पास गुजरेगा। इस एस्टेरॉयड की दूरी 3.9 मिलियन किलोमीटर यानि धरती और चांद के बीच की दूरी का 10 गुना है। एस्टेरॉयड 330 मीटर लंबा है। एक रिपोर्ट के हवाले से यह भी बताया गया है कि अंतरिक्ष में मौजूद 90 फीसदी एस्टेरॉयड इससे छोटे हैं।

रिपोर्ट में इस बात का भी जिक्र है कि ठीश्४२ साल 1982 में खोजे गए अपोलो ग्रुप का ही सदस्य एस्टेरॉयड है। यह भी सूरज के ऑर्बिट से होकर धरती के पास से गुजरेगा, जैसा इससे पहले के एस्टेरॉयड करते रहे हैं।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं. UPHIN 2001/9025